प्रेरणा पुंज ठाकुर जी

देशबन्धु
प्रांत संयोजक
स्वदेशी जागरण मंच
गांव व डा. रक्कड़, कांगड़, हि.प्र.

पूजनीय ठाकुर जी से हमारे स्वर्गीय भाई नित्यानन्द शर्मा के सम्बन्ध तब से थे, जब ठाकुर जी अमृतसर विभाग प्रचारक थे। तब मैं देहरा में तहसील कार्यवाह था। ठाकुर जी का प्रवास होता था। कभी-कभी प्रचारकों को कठोरता से अपनी बात कहते थे। परन्तु जब उन्हें आभास होता था कि कोई प्रचारक उनकी बात को मन में लगा कर दूरी करने लगे हैं, तो उन्हें स्नेह भरी वाणी से मृदुभाषा में पितृतुल्य भाव से आकृष्ट कर देते थे। ऐसे करते समय भी वह ध्यान रखते थे कि कहीं ढील न जा जाए। कोई भी निमित्त बैठक हो खण्ड योजना और मण्डल योजना पर अधिक समय चर्चा करते और कहते संघ कार्य को गतिशील बनाने में ही इस योजना का सर्वाधिक महत्त्व है।

पहले शाखा फिर भोजन

जनप्रवास में रहते तो उनका आग्रह रहता था कि उनके ठहरने की व्यवस्था उस परिवार में हो जिसके सदस्य शाखा में जाते हों, यदि वहां शाखा लगती हो। मुझे एक ऐसा प्रसंग याद आता है जब धर्मशाला प्रवास पर उनके साथ अल्पाहार की व्यवस्था धर्मशाला के एक प्रतिष्ठित ओर संघ समर्पित परिवार ने कर दी। दही और परांठा उनको परोस दिया गया। परिवार के मुखिया भी परोसने के कार्य में लग गए। ठाकुर जी उन्हें देख कह उठे अरे! आप तो शाखा में दिखाई नहीं दिए? उन्होंने कहा, 'ठाकुर जी' थोड़ा दुकान का काम शेष था, अत: मैं नहीं आया। सबको आश्चर्यचकित करते हुए ठाकुर जी उठ खड़े हुए और कहा कि क्या तुम यह समझते हो कि अच्छा-अच्छा भोजन करवाने और अन्य सुविधाएं जुटाने से संघ कार्य हो गया। शाखा में जाना गौण हो गया है। हमारे सबके हाथ जोड़ने पर भी उन्होंने अल्पाहार नहीं किया। पठानकोट जाना था, चले गए। मुखिया को भी बुरा लगा होगा, तदुपरान्त परिवार के वे मुखिया निरन्तर शाखा जाते रहे।

राजनीति के बल पर संगठन नहीं

संघेतर संगठनों में कार्यरत कार्यकर्ताओं से उनका आग्रह रहता था कि अपने संगठन को आगे ले जाने में अपने राजनीतिक सम्बन्ध सम्पर्कों का अधिक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप न हेने दें। एक और प्रसंग स्मरण आता है। अपातकाल के पश्चात् हिमाचल में भी जनता पार्टी की सरकार बनी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने अपना अधिवेशन किया। उद्घाटन अथवा समापन पर तत्कालीन मुख्यमन्त्री को मुख्यातिथि के नाते आंमत्रित किया। सम्मेलन बहुत प्रभावी रहा। इसके बाद जब ठाकुर जी आए तो बैठक में अधिवेशन की चर्चा और गुण-गान हुआ। उन दिनों विद्यार्थी परिषद् के प्रभारी दिल्ली से, सम्भवत: आलोक थे। उनसे उन्होंने

कहा, यदि राजनीतिज्ञों के आकर्षण और सहायता से तुम अपना संगठन चलाओगे तो आपको क्षणिक आनन्द तो प्राप्त होगा परन्तु जब ये लोग आपके निर्धारित लक्ष्यों की उपेक्षा करेंगे तो उनके विरुद्ध आवाज उठाने में आपकी जुबान दबने लगेगी। आज यह बात प्रासंगिक हो या न उन दिनों इस बात का परिषद् पर सीधा असर हुआ और एक सबल संगठन बनकर उभरा।

व्यवहार में स्वदेशी

स्वदेशी के प्रति उनका बहुत आग्रह रहता था ओर छोटी-छोटी बातों का ध्यान दिलवाते थे। मैं और हमारे सहयोगी जब कभी स्वदेशी जागरण मंच द्वारा आयोजित सभा सम्मेलनों में जाते तो दिल्ली में ठाकुर जी से भेंट करने अवश्य जाते। एक बार जब हम बंगलूर जा रहे थे तो मिलने गए। पूछने लगे, क्या स्वदेशी-स्वदेशी करते रहते हो। क्या तुम्हें धोती पहनना आता है? स्कूलों में वही अंग्रेजी प्रभाव। क्या तुम्हारे सम्मेलनों में कोई धोती-कुर्ता, कुर्ता-पाजामा पहन कर आता है, सभी बातों को सूक्ष्मता से लेते थे।

बिछड़ों को सदा स्मरण करना

१९४७ के हिन्दू-मुस्लिम दंगों में नादौन, चामुखा, रक्कड़ और अन्य स्थानों पर लगे नाकों में शहीद होने वाले बन्धुओं के नाम अभी २०१० में भी उन्हें स्मरण थे और उनके परिजनों की कुशल क्षेम पूछा करते थे। उन काले दिनों में हजारों परिवारों की रक्षा उनकी सतत् प्रेरणा से स्वयंसेवकों ने की। स्व. भाई पूज्य नित्यानन्द जी उन दिनों तहसील प्रचारक थे।

देशी पहरावा सुखकारी

आपातकाल की एक घटना सहसा स्मरण हो उठती है। आपातकाल में पूजनीय ठाकुर जी भूमिगत होकर वेश बदल कर सतत् बन्धुओं का मार्गदर्शन करते रहे। इस कार्य को निभाने में उन्हें पैंट, बुशर्ट पहननी पड़ती थी। नूरपुर तहसील के इन्दौरा में तत्कालीन विभाग कार्यवाह रामेश्वर सिंह जी के घर में बैठक थी। कोटपैंट पहने व आए और हम पहचान न सके। जब रामेश्वर जी ने उन्हें जलपान करने को कहा, तो कह उठे आज मैं अपने मन का बोझ हल्का करके ही जलपान करूंगा। तुरन्त धोती कुर्ता पहन कर कहने लगे जिस वेश को कभी पसन्द नहीं किया वही पहनना पड़ा। आज मैं अपने आप को स्वयं में अनुभव कर रहा हूँ।

स्वास्थ्य पूछने का अवसर ही नहीं दिया

विश्व हिन्दू परिषद् के एकल विद्यालय क्षेत्र समिति के सदस्य और मैं जब लुधियाना में कुशलक्षेम पूछने गए तो हम उनके वार्तालाप से कुछ क्षणों के लिए यह भूल बैठे कि ठाकुर जी बीमार हैं। उन्होंने हमें अपना कुशलक्षेम पूछने का अबसर ही नहीं दिया और अनेक परिचितों का हाल पूछते रहे। एकदम मुझे कहा कि गरली के गोपाल शास्त्री ने 'हिमाचल प्रशस्ति' के जो शेष अंक अप्रकाशित छोड़ दिए थे, उन्हें शिमला में उनके बेटे ने प्रकाशित करवा कर मुझे पहुंचाए हैं। इतनी अद्भुत स्मरण शक्ति के धनी और पिता समान पूज्य ठाकुर जी सशरीर हमारे बीच विराजमान नहीं हैं, परन्तु प्रेरणापुंज रूप में वे हमें अपने ध्येय के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते रहेंगे। स्वदेशी जागरण मंच का इस कर्मयोगी को शत्—शत् नमन और श्रद्धांजलि।

कठोर तपस्वी जीवन

भाई महावीर
पूर्व राज्यपाल
एस-389, ओल्ड राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली

ठाकुर जी का नाम जुबान पर आते ही एक बिजली सी कौंध उठती है। ठाकुर जी का जोशीला महान् व्यक्तित्व कार्यकर्त्ताओं को अपनी ओर खेंचता था। एक छोटे से गांव से उठकर जैसे महान् कार्य ठाकुर जी ने किए, उसकी कल्पना करना ही मुश्किल हो जाता है। जब-जब देश के जिस हिस्से में कठिनाई का दौर आया। ठाकुर जी वहां तत्परता से खड़े हो गए। देश के विभाजन व प्रथम प्रतिबंध के दौर में ठाकुर जी ने पंजाब के कार्य को एक नई दिशा व ऊँचाई दी। पूजनीय गुरु जी ने जब पूर्वोत्तर में ईसाईयों के दुश्चक्र तथा चीन की गिद्ध दृष्टि को देखकर ठाकुर जी को १९६१ में आसाम प्रान्त प्रचारक के रूप में ठाकुर जी को आसाम भेजा। ठाकुर जी ने वहां गटनायक से लेकर प्रान्त प्रचारक तक का दायित्व संभाला। ठाकुर जी का एक संस्मरण जो उन्होंने स्वयं लिखा है, उसमें यह वर्णन आया है कि मैंने ईश्वर को देखा है। जब ठाकुर जी को वहां जानने वाला कोई नहीं था, परन्तु एक आदमी ने वहां ठाकुर जी को आवाज लगाई कि तुम संघ वाले हो। ठाकुर जी हैरान हो गए कि मेरे को यहां जानने वाला कोई नहीं, फिर ये कौन मुझे आवाज़ लगा रहा है। ठाकुर जी ने उस व्यक्ति से पूछा, तुम्हें कैसे पता चला कि मैं संघ वाला हूँ। वह व्यक्ति बोला कि मुझे पता है कि तुम संघ वाले हो। वह मुझे अपने घर ले गया। उसने मुझे भोजन करवाया। इस प्रकार से आसाम में संघ का कार्य खड़ा किया। १९९२ में चीन भारत के क्षेत्र में कब्जा करने के लिए आगे बढ़ रहा था। उस समय जिस तत्परता से वहां की स्थानीय परिस्थितियों को समझ कर कार्य किया, वह शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति कर पाता। ठाकुर जी ने चीनी सेनाओं के षड्यन्त्र तथा भारतीय नेताओं की नाकामी को बड़े निकट से देखा था।

पंजाब में जब उग्रवाद जोरों पर था। उस समय के उग्रवाद से ग्रसित क्षेत्र में सहजदारी हिन्दुओं के पलायन होने को रोकना तथा उनका मनोबल बढ़ाना, ठाकुर जी के व्यक्तित्व का करिश्मा था। ठाकुर जी कहते थे कि देश का नेतृत्व हरि सिंह नलवा जैसे शूरवीर योद्धाओं के हाथ में होना चाहिए।

ठाकुर जी ने कभी भी डुलमुल नेतृत्व का समर्थन नहीं किया। यही अपेक्षा वे संगठन के अन्दर सभी क्षेत्रों में देखना चाहते थे। ठाकुर जी का स्वयं का जीवन एक कठोर तपस्वी के रूप में हमारे सामने दिखाई देता है।

संघ प्रार्थना प्रार्थित सब गुण

श्रीगुरुपद भौमिक
पूर्व प्रचारक
वरिष्ठ अधिवक्ता
गुवाहाटी

माननीय ठाकुर रामसिंह जी एक महान कर्मयोगी, कुशल-संगठक, दृढ़ चेता, जितेन्द्रिय एवं प्रचण्ड आत्मशक्तिसम्पन्न व्यक्ति थे। ये सभी विशेषण उनके लिये केवल अलंकार न होकर, अक्षरश: सत्य थे। संघ प्रार्थना में प्रार्थित सारे गुण मा. रामसिंह जी के व्यक्तित्व में प्रकट हुए थे। इसी कारण उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ता था।

सन् १९४८ में संघ पर प्रतिबन्ध लगने के कुछ दिन पूर्व असम में संघ कार्य आरम्भ हुआ था। प्रतिबन्ध उठ जाने के पश्चात् मा. रामसिंह ठाकुर जी को प्रान्त प्रचारक का दायित्व देकर असम में भेजा गया।

तत्कालीन असम में संघ कार्य की दृष्टि से उत्तर पूर्वांचल के सातों राज्यों के क्षेत्र सम्मिलित थे। तत्कालीन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थिति की उपेक्षा करते हुए विजिगीषु मनोवृति एवं कठोर परिश्रम के कारण ही उस समय उत्तर पूर्वांचल में संघ की प्रतिष्ठा सम्भव हो पाई थी। इस आंचल में संघ कार्य का वर्तमान रूप में विस्तार मा. रामसिंह जी एवं उनकी प्रेरणा से काम करने वाले कुछ कार्यकर्त्ताओं के कठोर परिश्रम का फल है। मा. ठाकुर जी स्थान-स्थान पर योग्य कार्यकर्त्ताओं का निर्माण एवं प्रचारक विस्तारक निकलने की मानसिकता तैयार करने के प्रति सदा ही प्रयत्नशील रहते थे। इसी कारण असम में भी स्थानीय प्रचारक एवं विस्तारक निकलने की परम्परा आरम्भ हुई।

स्वयंसेवक के आकर्षक व्यक्तित्व एवं विद्वता की सहायता से मा. ठाकुर जी इस क्षेत्र के अनेक शिक्षाविदों, भाषाविदों, इतिहासज्ञों एवं गुणवान व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित करने में सफल हुए एवं उन लोगों को संघ कार्य तथा विविध क्षेत्रों में क्रियाशील कर पाये इस शृंखला में पंडित तीर्थनाथ शर्मा, पंडित गिरिधर शर्मा, श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ. सूर्यकुमार भूयां, श्री राधिका मोहन गोस्वामी तथा श्री मीनधर बरठाकुर अनेकों नाम उल्लेखनीय हैं।

व्यक्तिगत रूप से मुझे बचपन से लेकर प्रचारक जीवन तक सदा ही मा. ठाकुरजी का सान्निध्य एवं दिशा दर्शन प्राप्त करने का सुयोग मिला। विविध कार्यक्रमों एवं घटनाओं के माध्यम से उनके गुणों एवं चारित्रिक विशेषताओं का परिचय मिला। जिनमें से उल्लेखनीय हैं — वीर मनोवृति, निश्चित कार्यक्रम के निर्वाह के प्रति आग्रह, स्वयंसेवक के प्रति कठोरता एवं देर रात्रि तक अध्ययन एवं पत्र लेखन। प्रात: ४ बजे से पूर्व ही उठकर किसी एक शाखा में समय से पूर्व ही उपस्थित होने के वे अभ्यस्त थे। समय एवं नियम पालन के वे बहुत आग्रही थे। जिस प्रकार का मनोबल था, उसी प्रकार का शारीरिक सामर्थ्य भी था।

मैं जब बाल स्वयंसेवक था, तब हमारे तिनसुकिया में मा. ठाकुर जी के पहुंचने पर प्राय: ही तरुण एवं युवा स्वयंसेवकों को लेकर नपुखुरी (आहोम राजाओं के समय का विशाल सरोवर) की चारों भुजाओं को तैर कर पार करने का कार्यक्रम होता था।

सन् १९६०-६१ की बात है। एक दिन त्रिगढ़ के संघ कार्यालय में शाम के समय कुछ उग्र प्रकृति के लड़कों ने आकर शाखा बन्द करने की धमकी दी, किन्तु मा. ठाकुर जी की तेजस्वितापूर्ण बातें एवं युक्यिाँ सुनकर वे नि:स्तब्ध हो गये और अन्त में उन्होंने क्षमा भी मांग ली।

एक बार तत्कालीन संघ शिक्षा वर्ग में मा. ठाकुर जी कुछ स्वयंसेवकों के साथ मिलकर कुठार से लकड़ियां फाड़ रहे थे। तब उनकी ओर देखकर लगता था, ''हमारे ठाकुर साहब फौलाद के बने हैं।''

एक बार तिनसुकिया में शीत शिविर के लिये शहर से कुछ दूर, बड़े मैदान में तम्बू गाड़े जा रहे थे। मैं तब बालक था। रात का समय था। मुझे घर से खाना लाने के लिये कहा गया। मेरे घर और इस मैदान के बीच कुछ जंगल जैसा था। तब मैं थोड़ी भीरू प्रकृति का था। मा. ठाकुर जी ने मेरे हाथों में एक दाव थमा दी एवं कहा, ''जाओ, डरना मत, कोई मिले, तो काट डालना।'' फिर मैं चल पड़ा। खाना लेकर ही लौटा।

सन् १९६६ में संघ शिक्षा वर्ग के पूर्व मा. ठाकुर जी मोटरसाइकिल पर प्रवास कर रहे थे। तब दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण पांवों में मल्टीपल फ्रैक्चर होने, के कारण उन्हें गुवाहाटी के 'महेन्द्रमोहन चौधरी अस्पताल' में बहुत दिन रहना पड़ा था। उस समय उनसे बातें करते हुए, प्रेरणा जगाते हुए, सन् १९६८ के संघ शिक्षा वर्ग में गुवाहाटी से सर्वाधिक शिक्षार्थी भेजे। मैं तब गुवाहाटी विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। मैं और मेरे साथ पढ़ने वाले पांच–छ: कार्यकर्त्ताओं को प्रचारक के रूप में निकलने के लिये उन्होंने आग्रह किया था। मा. ठाकुर जी के आग्रह एवं प्रेरणा के कारण ही सन् १९६८ में मैं और श्री नव बरुवा 'प्रचारक' निकले। मेरा कार्यक्षेत्र दक्षिण कामरूप जिला था। तब वहां गुवाहाटी विश्व-विद्यालय की शाखा छोड़कर अन्य शाखा नहीं थी। मैंने रामसिंह जी को पूछा, ''किस प्रकार काम आरम्भ किया जाय।' उन्होंने जवाब दिया, ''Go for tilling the ground and sowing the seeds.''

मा. राम सिंह जी छात्र जीवन में एक कर्तृत्ववान् एवं मेधावी छात्र थे। लाहौर विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में उच्चस्तर पर स्नातकोत्तर डिग्री पाकर अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्रसेवा में उत्सर्गित करते हुए दो दशक से अधिक समय अर्थात् सम्पूर्ण यौवन काल असम तथा उत्तर पूर्वांचल में कार्यरत रहते हुए बिताया। सन् १९७१-७२ में उनके कार्यक्षेत्र के परिवर्तित होने के बाद भी विभिन्न समय में विशेष दायित्व लेकर असम में आकर इस क्षेत्र के लोगों के साथ भावों का आदान–प्रदान करते हुए प्रेरणा देते रहते थे। मा. रामसिंह जी ने देश के सुदूर पश्चिम भाग में तत्कालीन पंजाब प्रान्त के एक छोटे से गांव में जन्म लेकर भी सुदूर उत्तरपूर्वांचल में लम्बे समय रहकर, यहां की भाषा, संस्कृति एवं सभी प्रकार के जनसमूहों के साथ एकात्मक होते हुए 'हिन्दू समाज एक जन एक राष्ट्र', भावधारा को स्वयं के जीवन के द्वारा उदाहरण के रूप में प्रस्थापित किया।

मा. ठाकुर रामसिंह जी का चरित्र सदा ही हम लोगों के लिये एवं आगामी पीढ़ी के लिये एक प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

ऊर्जा का प्रवाह शुरू हुआ

डॉ. सतीश बंसल
प्रवक्ता इतिहास
राजकीय महाविद्यालय ऊना, हि.प्र.

बात सन् २००६-७ की है जब मैं राजकीय महाविद्यालय ऊना में प्रवक्ता पद पर कार्य कर रहा था। अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता था कि ठा. जगदेव चन्द मैमोरियल शोध संस्थान नेरी में ठाकुर रामसिंह जी के मार्गदर्शन में बैठक, सम्मेलन परिसंवाद इत्यादि हो रहे हैं, मुझे लगता था कि मैं इतिहास का प्रवक्ता हूँ और मुझे कभी बुलाया नहीं गया। परन्तु जब मेरा तबादला राजकीय महाविद्यालय हमीरपुर हुआ तो मेरी मुलाकात डॉ. रमेश शर्मा से हुई । हम दोनों एनएसएस राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी होने के नाते एक दूसरे के परिचित थे। कभी-कभी हम अपने विभाग में मिलते और आर. सी. शर्मा जी अक्सर प्राचीन इतिहास व हिमाचल इतिहास की बात करते व ठाकुर रामसिंह जी की बातें करते। उनकी इन्हीं बातों से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। मन में जिज्ञासा हुई कि ऐसी बड़ी हस्ती से मिला जाए। बात ३१ अगस्त, २००९ की है, उस दिन नेरी शोध संस्थान में एक बैठक थी। डॉ. आर.सी. शर्मा जी ने मुझे भी कहा कि आप इस बैठक में आएं, मन में बड़े-बड़े प्रश्नों के साथ मैं नेरी पहुंचा। मैंने शर्मा जी से ठा. जी की उम्र पहले ही पता की थी। लगभग ९५ वर्ष के हैं, इतने बुजुर्ग और इतिहास की बात? बड़ा प्रश्न मन में था पर सभी शंकाएं तब दूर हुई जब हमारी बैठक शुरु हुई। ठाकुर जी के ध्वल केश, हल्का झुका हुआ शरीर, हाथ में लाठी, चेहरे पर मोटे चश्मे वाली ऐनक, सबके साथ मैंने भी चरण स्पर्श किया। उनका मेरे कन्धे पर हाथ रखना, मानो ढेरों सारा आशीर्वाद मुझे मिल गया हो, एक ऊर्जा का प्रवाह मेरे अन्दर शुरू हुआ। बैठक शुरू हुई। डॉ. ओ. पी. शर्मा ने इतिहासपुरुष श्लोक का वाचन किया और ठाकुर रामसिंह जी द्वारा सम्बोधन शुरू हुआ। बड़ी-बड़ी जानकारियां इतिहास विषयक शुरू हुई।

मेरे सिर से कुछ बातें निकलती जा रहीं थी कि १९७ करोड़ वर्ष का हिन्दुस्तान का इतिहास? ठाकुर रामसिंह जी द्वारा शिव की भूमि की भौगोलिक स्थिति, विष्णु, ब्रह्मा जी की असली धरती, असली सलतनत यह सब व्याख्यान ठाकुर जी धारा प्रवाह कर रहे थें। १९७ करोड़ वर्ष का इतिहास व उसकी रूप रेखा तैयार करनी है। बैठक के बाद मैंने ठाकुर जी से प्रश्न किया कि मुझे १९७ करोड़ वर्ष का इतिहास समझ नहीं आया। वह मेरे साथ अलग से बैठे। वह मेरी उन से पहली बैठक थी। उन्होंने मेरे ज्ञान की परख लेनी चाही। बहुत चर्चा हुई। मैं इतना प्रभावित हुआ कि मन में लगा कि मैं इतनी देरी से क्यों

माननीय ठाकुर जी से मिला, पहले क्यों नहीं? फिर हमारी चर्चाएं शुरू हुई। १-२ नवम्बर, २००९ को सुजानपुर में कटोच वंश पर संवाद हुआ। बातें हो रहीं थीं कि कटोचों का सम्बन्ध मंगोलिया से है। मेरी जिज्ञासा फिर से बढ़ी। मैंने भी वहां उपस्थिति दी। शाम को जब हम दूसरे दिन की तैयारी कर रहे थे तो ठाकुर जी एक कोने में बैठकर, हर बात पर निगरानी रख रहे थे। उन्होंने मुझे बताया कि कांगड़ा के किले का स्कैच बहुत अच्छा लगाया पर राजा बाणभट्ट के बारे में शोध करो। उन्होंने मेरे ज्ञान में वृद्धि करते हुए कहा कि राजा वाणभट्ट एक आदर्श राजा थे व उनका सम्बन्ध सीधा लंका के राजा रावण से है। मैं फिर अचम्भित हुआ कि इस पुरुष को कितना ज्ञान है, मैंने कहा ठाकुर जी मैं इस पर भी काम करूंगा। उन्होंने कहा मुझे इतिहासकारों की जरूरत है काम करो, कुछ जिम्मेवारियां निभाओ और मैं उनसे और जुड़ता गया। मैं उनकी सादगी, कड़े नियम, समय प्रबन्ध व सबसे बढ़कर इतिहास के प्रति उनकी रुचि मुझे उनके साथ जोड़ती रही। बात जनवरी २०१० की है कि मेरा तबादला फिर से राजकीय महाविद्यालय ऊना में हो गया। मैं राजकीय महाविद्यालय हमीरपुर से आ रहा था। ठाकुर जी से आशीर्वाद लेने गया। हाथ में अणु से पण्डित जी की दुकान का बेसन था। मैं सीधा चला गया पांव छुए ठाकुर जी ने कहा काम हो गया? मैंने कहा, आपकी कृपा व आशीर्वाद था। बेसन मैंने उन्हें खाने को दिया जो उन्हें बड़ा पसन्द था। उन्होंने कहा यह बेसन तो पण्डित जगीर जी की दुकान का है। उन्होंने कहा, ऊना ज्वाईन करो व नेरी से भी कुछ काम की जिम्मेवारी लो। वहां से में आ गया पर उनकी फोटो मैं अपने मोबाइल में ले आया फिर कुछ दिनों बाद लोहड़ी के बाद मैं अपने दोनों बच्चों के साथ नेरी गया। यहां की शान्त जगह मुझे भा सी गई थी व मन में चाहत थी कि अपने बेटे अभय व बेटी आभा को भी ठाकुर जी से मिलवाऊँ। हमने खाना भी खाया। बाहर बैठे ठाकुर जी से बातचीत हो रही थी। उन्होंने कहा बसंल जी उर्दू समझते हैं? मैंने कहा, मैं अपने पिता जी से सहायता लूंगा। ठाकुर जी अपने कक्ष में गए व एक मोटी सी लाल किताब लाए और मुझे कहा यह किताब इतिहास की बड़ी परतें खोलने वाली है पर इसका रूपान्तर हिन्दी में करो। मैंने तुरन्त यह जिम्मेवारी ली क्योंकि उन्होंने इस जोश से यह किताब दी कि मैं मना ना कर सका। ठाकुर जी ने यह भी कहा कि यह मेरा सपना है कि यह किताब सब के सामने आए। देखना! इसको पढ़ने के बाद इतिहास में आपके सब प्रश्न हल होंगे, ऐसे जैसे उन्होंने मेरे मन की बात पढ़ ली हो। उस दिन ठाकुर जी के साथ दिल खोल कर बातें हुई। उनकी सारी योजना मैं समझ गया था, मैंने भी इस किताब को ठाकुर जी का आदेश व आशीर्वाद प्रसाद मान लिया। ऊना आया व कार्य शुरु किया। पिता जी के ना आने पर मैं यह किताब कैसे पूरी करता, पर मन में ठाकुर जी की तस्वीर घूम रही थी कि मुझे वचन दिया

था मैंने यह किताब अनुवादित करनी थी। मैं एक बैंक मैनेजर मि. अवरोल के पास गया जो उर्दू के ज्ञाता हैं पर वह इतनी बड़ी किताब को देखकर घबरा गए। एक दो दिन के बाद उन्होंने मना कर दिया। फिर मुझे पता चला कि ऊना बाजार में हकीम हजारा सिंह है जो उर्दू समझते हैं। मैं उनके पास गया और उन्होंने मना नहीं किया। एक दिन मैं बड़ी परेशानी में वापिस घर लौट रहा था। हमारे मकान मालिक ठाकुर जगदेव सिंह जी ने कहा बड़े परेशान लग रहे हो। मैंने उन्हें अपनी समस्या बताई तो उन्होंने मेरा सपना पूरी होने वाली बात की। मुझे उन्होंने अपने मित्र राणा जी से मिलवाया। राणा जी इतने अच्छे व ज्ञानी थे कि उन्होंने इन्कार नहीं किया। हमारा लिखने का कार्य १६ फरवरी २०१० से शुरू हुआ। जगदेव जी व राणा जी हुक्का पीते रहते व मुझे लिखवाते रहते। यह इतना सुखद था कि ज्ञान के साथ-साथ हमारा कार्य पूरा हो गया। राणा जी का शेयरो-शायरी व उर्दू में उनकी पकड़। सहजता में मेरा सारा कार्य पूर्ण हुआ। यह किताब थी राजगाने आर्यवर्त (कादीम-तारिख-आर्यव्रत) लिखने वाले थे ठाकुर नगीनाराम परमार। सच में इस किताब ने मेरी सारी सोच बदल दी। ज्ञान में वृद्धि हुई, यह सब ठाकुर रामसिंह जी की देन थी। मार्च महीने में जब ठाकुर जी दिल्ली से लौट रहे तो मुझे चेतराम जी द्वारा सूचित किया गया कि ठाकुर जी आपके घर आना चाहते हैं। ऐसा लगा जैसे साक्षात् भगवान मेरे घर आ रहे हैं। ठाकुर जी आए, मेरी पत्नी अलका ने चाय बनाई, नाश्ते को पूछा, ठाकुर जी ने चाय की इच्छा की। चाय के साथ हमारे मकान मालिक ठाकुर जगदेव सिंह व राणा जी भी थे। बहुत बातें हुईं। ठाकुर रामसिंह का ऊना में बचपन गुजरा, अपना गौत्र सौंगल बताया। मैंने उनसे पंजाब में स्वतन्त्रता संघर्ष में महिलाओं का योगदान के बारे में बात की, तो ठाकुर जी ने तुरन्त सारी बातें बताईं। सभी हैरान थे कि ठाकुर जी को यह सारी बातें कैसे पता। सब बड़े प्रभावित हुए। ठाकुर जी ने कहा कि बंसल को हिमाचल प्रभारी बनाया गया है। ठाकुर जी का आशीर्वाद था। फिर में अपने लेखन कार्य में आगे बढ़ता रहा। इसी बीच अप्रैल में नेरी में बैठक हुई। ठाकुर जी के विचार सुने। तब तक मैं पुस्तक के २०० पन्ने लिख चुका था। फिर से ठाकुर जी ने आगामी योजना हमारे सामने रखी। योजना थी मनाली में मनुधाम बनाना। सारी योजना व लिखने की रूप रेखा बनाई और कुछ नई ऐतिहासिक जानकारी दी। हमारा ऊना इतिहास लेखन कैसा होगा, इसकी योजना बनाई।

कार्यकर्ता को काम सिखाने की शैली

ईश्वर दास महाजन
संघचालक, पूर्वी विभाग दिल्ली
एफ–36, प्रीत विहार, दिल्ली

यह घटना सन् १९४६-४७ की है। पंजाब का एक छोटा सा गांव था, उसमें शाखा लगती थी। शाखा में एक बड़ा ही होनहार बालक आता था। उन्हीं दिनों फगबाड़ा में प्राथमिक वर्ग लगने वाला था। मैंने ठाकुर जी को कहा, क्या इस बालक को प्राथमिक वर्ग में ले जाना चाहिए? ठाकुर जी ने कहा, हां! यह योग्य बालक है। इसे प्राथमिक वर्ग अवश्य करवाना चाहिए। हमने उस बालक को प्राथमिक वर्ग में बुला लिया। दुर्भाग्य से दो दिन बाद ही सांप के काटने से उस बालक की मृत्यु हो गई। कार्यकर्त्ता को भेजकर उसके घर में बालक की मृत्यु के बारे में सूचना भेजी। उस गांव से १०-१५ लोग आए और बालक का शव दाहसंस्कार के लिए ले गए। कुछ कार्यकर्त्ता अपने भी साथ गए थे। मेरे मन में विचार आया कि अब इस गांव में कैसे शाखा लगेगी और जो भी कार्यकर्त्ता जाएगा उसके साथ कैसा व्यवहार होगा। क्योंकि बालक की मृत्यु हमारे वर्ग में हुई थी।

प्राथमिक वर्ग समाप्त होने के बाद ठाकुर जी ने मेरी जिम्मेवारी उस गांव में बालक के परिवार में सांत्वना देने की लगा दी। मैं घबरा गया और मैंने ठाकुर जी को मना कर दिया। मैंने कहा ठाकुर जी किसी समझदार योग्य कार्यकर्त्ता को वहां भेजा जाए। मुझे इस तरह के विषय सुलझाने व बात करने का अभ्यास नहीं है। ठाकुर जी ने कहा, ''तुम्हें ही जाना है। यह मेरा आदेश है।'' अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं था। गांव में सूचना भेज दी। मैं ट्रेन द्वारा उस गांव में गया। तो मैंने देखा कि रेलवे स्टेशन पर १०-१५ लोग मेरे स्वागत के लिए पहुंचे हुए है। उन्होंने मेरे गले में फूल माला डाली। यह दृश्य देखकर मैं आश्चर्यचकित था। मैं सोच कुछ और रहा था और यहां हो कुछ और रहा था। हम सब लोग उनके घर पर बैठे। एक घण्टा बातचीत होती रही। उनके मन में संघ के प्रति किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं था। वह अच्छे काम के लिए गया था और वहां पर उसका जीवन पूरा हो गया, इसमें क्या किसका दोष। जब मृत्यु ही होनी थी, तो वह यहां भी होनी थी। ऐसे सभ्य विचार वहां सुने। मेरा स्वागत संघ की अच्छी धारणा के कारण हुआ। ट्रेन तक छोड़ने भी मेरे साथ आठ-दस लोग आए।

मैंने यह सब बात ठाकुर जी को बताई, ठाकुर जी ने कहा मैंने तुझे इसलिए भेजा था कि जिससे तुम्हारा संकोच खत्म हो जाए और धीरे-धीरे हर परिस्थिति को समझने की क्षमता पैदा हो।

जीवन की शुरूआत से जुड़ा सम्बन्ध

सुरेन्द्र नाथ शर्मा
संगठन मन्त्री, बाबा साहेब आपटे
स्मारक समिति, ए–7/74, 17
रोहिणी, दिल्ली

हमारे परिवार का सम्बन्ध ठाकुर राम सिंह जी से तब से है, जब मैंने इस धरती पर जन्म भी नहीं लिया था। अत: मेरा सम्बन्ध ठाकुर जी से अपने जीवन की शुरूआत से है। माननीय ठाकुर जी का संबंध मेरे पिताजी स्व० रिखी राम शर्मा, गांव कल्याल, डाकघर बाहन्वी, तहसील भोरंज, जिला हमीरपुर, हि०प्र०, के साथ बाल्यकाल से था । आज भी मुझे पूरी तरह से याद है जब १९७५ में भारत में एमरजेंसी लगी थी, तब मेरी आयु केवल १० वर्ष की थी। हमारे घर में पुलिस कर्मचारी कभी वर्दी और कभी साधारण वस्त्रों में आया करते थे। घर में सबसे छोटा होने के कारण पुलिसकर्मी ठाकुरजी के बारे में पूछताछ किया करते कि क्या ठाकुर जी आपके घर आते–जाते हैं और क्या आपके पिताजी से मिलते हैं या कोई पत्र वैगरह आते हैं क्या? तरह–तरह कि कई बातें पूछा करते थे। कई तरह के लालच भी दिया करते थे। उन दिनों ठाकुर जी संघ के कार्यों को अंजाम दे रहे थे।

कभी–कभार हमारे गांव तथा अपने गांव, अपनी माता जी से तथा हमारे परिवार से मिलने के लिए, थोड़े वक्त के लिए आते रहते थे। हमारे परिवार का रिश्ता ठाकुर जी से घरेलू था। हम सभी भाई–बहन ठाकुर जी को ताया जी कहकर पुकारते थे तथा ठाकुर जी की माता जी को दादी जी, ठाकुरजी की बहन को बुआ जी कहा करते थे। माता जी व पिता जी, चाचा जी–चाची जी भी सभी को आदर का ही रिश्ता देते थे। एमरजेंसी के दौरान शाहतलाई में १९८०–८१ में संघ का ओटीसी कैम्प लगा उसमें मुझे भी भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो ठाकुरजी की ही देन थी। ठाकुरजी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर मैं आगे बढ़ता गया। ओ.टी.सी. के उपरान्त गांव में ही सुबह शाम शाखा लगाना शुरू कर दिया। ठाकुर जी जब भी हमारे घर पधारते थे तो शाखा में अवश्य पहुंचते और सभी बच्चों का ज्ञानवर्द्धन करते। शाखा के बीच में पूरे भारतवर्ष में घटित घटनाओं के बारे में बताते, देशभक्ति का जोश भरते थे। ठाकुर जी का हमारे घर आना–जाना लगाातार बढ़ता गया, क्योंकि एमरजेंसी के दौरान पहले व बाद में भी हमारा पूरा परिवार माताजी (दादीजी) व जमीन की देख–रेख करता था। हर रोज कोई न कोई ठाकुर जी के गांव झन्डवीं जाकर वहां के कार्यों को करते थे, ताकि दादी जी को यह महसूस न हो कि मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं है । वो भी हमें अपने पुत्र–पोतों की तरह ही मानती थीं। हमारी दादी स्व० श्रीमती कैलाशो देवी जी ने भी ठाकुर जी को हमेशा अपना बड़ा बेटा ही माना। जब भी ठाकुर राम सिंह जी हमारे घर कल्याल आते थे तो हमारी दादी जी बहुत

ही खुशी से ठाकुर जी के लिए विभिन्न तरह के पकवान बनाया करती थीं जिसमें ठाकुर जी को सबसे अधिक पंसद थे – शीरा, भल्ले, पतोड़े, आम की चटनी आदि। इन्हें वे बड़े प्यार से बनाकर खिलाया करती थीं। ठाकुर राम सिंह जी को १९९१-९२ में भारतीय इतिहास संकलन योजना का अध्यक्ष चुना गया था। सब कठिनाईयों का सामना करते हुए ठाकुर जी ने इतिहास संकलन योजना को एक नई ऊँचाई प्रदान की और जिला व प्रदेश स्तर तक की इकाईयां गठित कर दीं। जिसमें भारत के इतिहास के पुन:लेखन की योजनाओं पर भारत के वास्तविक इतिहास को समक्ष रखना, २. भारत के इतिहास को भारतीय कालगणना के कालक्रम से लिखना, ३. प्रगति के इतिहास को समक्ष रखना, ४. प्रथम मानवोत्पत्ति से लेकर अद्यवत् सटीक घटनाक्रम से इतिहास का लेखन। जिला व राज्य स्तर में गोष्ठियों का प्रचार-प्रसार करने का बीड़ा उठा रखा था। उसी क्रम की एक समिति दिल्ली इतिहास संकलन योजना व बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति बन चुकी थी। मुझे भी समिति के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया और मैं समिति के कार्यों में जुड़ता चला गया। एक बार मुझे ठाकुर जी के साथ प्रवास जाने का मौका मिला। मेरी पत्नी रश्मा शर्मा, पुत्री सुरुचि शर्मा व पुत्र अतुल शर्मा भी साथ थे। उन दिनों स्कूल में बच्चों की छुट्टियां चल रहीं थीं। सभी एक साथ दिल्ली से अपनी गाड़ी के द्वारा चले। रात बिलासपुर, हि०प्र० के संघ कार्यालय में रुके। सुबह ठाकुर जी का संघ शिक्षा वर्ग बिलासपुर में बौद्धिक था। उसके उपरान्त हमें दोपहर तक इतिहास संकलन योजना की मंडी व कुल्लु की हनोगी माता के मंदिर में बैठक में भाग लेना था। बिलासपुर तथा हनोगी मंदिर में हमारे पूरे परिवार का दोनों जगह परिचय करवाया गया तथा वहां पर उपस्थित अधिकारियों से भी परिचय करवाया। बैठक समाप्त होने के उपरान्त शाम को अपने गांव कल्याल पहुंच गए। मैंने सोचा कि ठाकुर जी को थकावट हो गई होगी । परन्तु उनमें थकावट नाम की कोई भी चीज़ चेहरे पर दिखाई नहीं दी। उसके उपरान्त हम हर वर्ष मई-जून की छुट्टियों में ठाकुर जी के साथ गांव आने-जाने लगे। सन् २००२ में ठाकुर जी इतिहास संकलन योजना के अध्यक्ष पद से मुक्त हो गए। माननीय मोरोपंत पिंगले जी ने ठाकुर जी को कहा था कि इतिहास के इस वृहद् कार्य को स्थाई अंजाम देने के लिए देश भर के चार हिस्सों में चार शोध-संस्थानों की आवश्यकता है। इस पर भी काम किया जाना चाहिए। ठाकुर जी संगठन के अन्य कार्यों से मुक्त होकर अब इस दिशा में कार्य करने लगे। ठाकुर जी का कहना था कि चार शोध-संस्थान तो मैं खड़े नहीं कर पाऊँगा परन्तु उत्तर क्षेत्र में इस कार्य को मैं प्रारम्भ कर दूंगा। जिसके परिणामस्वरूप ठाकुर जगदेव चन्द समृति शोध संस्थान नेरी, जिला हमीरपुर हि. प्र. अस्तित्व में आया। नेरी शोघ-संस्थान का कार्य प्रगति से आगे बढ़ रहा था जिसमें पुस्तकालय, संग्रहालय, सभागार का निर्माण हो चुका है। तब ठाकुर जी ने नेरी शोध-संस्थान के लिए मुझे भी निदेशक मंडल का निर्देशक सदस्य नियुक्त किया। उसमें

सभी निर्देशकों को अलग-अलग कार्य बांटे गए। मुझे पुस्तकालय का कार्य सौंपा गया। पुस्तकालय के लिए वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, इतिहास, भूगोल, खगोल व सभी धर्मों के धर्म ग्रंथ संस्कृत, हिन्दी व अन्य सभी भाषाओं का संग्रह करना है। मुझसे जहां तक हो सका, इस कार्य को पूर्ण करने की कोशिश की है और आगे भी करता रहूंगा। अभी तक जितनी भी पुस्तकें शोध-संस्थान के पुस्तकालय में हैं वे सभी विभिन्न व्यक्तियों के सहयोग से, बिना किसी व्यय के प्राप्त की हैं।

वर्ष २००४ में ठाकुर जी ने कहा कि आपने मई-जून की छुट्टियों में दिल्ली से हिमाचल प्रदेश साथ चलना है। इस वर्ष हमने शक्तिपीठ किले व महलों के सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ करना है। ठाकुर जी, मैं और मेरा परिवार अपने गांव कल्याल में पहुंच गए और अगले ही दिन सर्वेक्षण के कार्य करने के लिए कार्यक्रम बना लिया। शिमला से भतीजा श्री विवेक ज्योति व उसकी पत्नी श्रीमती रमा व सुपुत्र शानू भी घर आए हुए थे। उस दिन वे ठाकुर जी से काफी दिनों के बाद मिले थे। सर्वेक्षण के कार्यक्रम के बारे में सुनने पर वह भी हमारे साथ सर्वेक्षण के लिए चल पड़े। सबसे पहले हमने महल मोरियां, जिला हमीरपुर से सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। महल का सर्वेक्षण करने के उपरान्त हम शाम को अपनी ससुराल कालेअम्ब, जिला हमीरपुर, हि.प्र. में पहुंचे। वहां पर बच्चों को छोड़ना था और अगली सुबह सर्वेक्षण के लिए प्रस्थान करना था। शाम को ही ठाकुर जी ने कह दिया कि सर्वेक्षण करने के लिए पांच-छह लोगों की एक टोली बनाई जाए जिसमें ठाकुरजी, सुरेन्द्र नाथ शर्मा, श्री विवेक ज्योति, श्री प्रेम सिंह भरमौरिया, श्री रमेश चंद शर्मा, श्री भूमिदत्त शर्मा को सम्मिलित किया, उन सभी को टेलीफोन करने के लिए तथा सुबह सर्वेक्षण पर जाने के लिए कहा गया। हम सभी हमीरपुर में एकत्रित होकर सुजानपुर किले के सर्वेक्षण के लिए निकल पड़े। उसी दिन सुजानपुर टीहरा, नादौन (अमतर), ज्वालाजी का सर्वेक्षण करके वापिस काले अम्ब में आ गए। अगले दिन की सर्वेक्षण की रूपरेखा तैयार कर ली गई और दूसरे दिन सुबह-सुबह ही सभी सर्वेक्षण दल के सदस्य पीरसलूही, चामुम्खा, कालेश्वर, चिंतपूर्णी, चामुंडा होते हुए रात को वापिस अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच गए। अगले दिन के लिए स्थानों को चिन्हित कर लिया गया और अगली सुबह फिर सोलह सिंगीधार के किले, बगलामुखी तथा अन्य धार्मिक स्थानों का सर्वेक्षण करके वापिस अपने गंतव्य पर पुहंच गए। तीसरे दिन ठाकुर जी, मैं, विवेक ज्योति व हमारे परिवार के सभी सदस्य कांगड़ा किले का सर्वेक्षण करने के लिए निकले। कांगड़ा किले का सर्वेक्षण करने के पश्चात् संघ कार्यालय में रात्रि विश्राम करने के लिए रुके। वहां पर प्रांत प्रचारक श्री प्रेम जी से व अन्य गणमान्य लोगों से ठाकुर जी ने हमारा व हमारे परिवार का उन सभी से परिचय करवाया। अगले दिन धर्मशाला बैठक में भाग लेने के लिए जाना था। धर्मशाला की बैठक समाप्त होने के बाद हम वापिस नेरी शोध-संस्थान में आ गए। पांच दिनों तक लगातार सर्वेक्षण करने के उपरांत थकावट सी महसूस हो रही थी, परन्तु ठाकुर जी बिल्कुल ही थकावट महसूस नहीं कर रहे थे। उसी

दिन कह दिया कि अगले दिन अवाहदेवी व कमलाह किला, जिला मंडी के लिए जाना है। कमलाह का जो किला है, वह काफी ऊंचाई पर है तथा उसका रास्ता भी बहुत संकीर्ण है। उस दिन ठाकुर जी, श्रीमती लता भरमौरिया, श्री देवराज शर्मा व मैं सर्वेक्षण के लिए गए। ठाकुर जी बिना किसी सहारे के किले तक पहुंच गए । उतरते वक्त ठाकुर जी के घुटनों में दर्द हो जाती थी क्योंकि काफी पहले ठाकुर जी का आसाम में मोटर साइकिल से एक भंयकर दुर्घटना हुई थी, उसी की वजह से ठाकुर जी के घुटनों में दर्द रहता था। कुछ देर के लिए हमने रास्ते में विश्राम किया और समीरपुर के लिए चल पड़े। क्योंकि उस दिन रात्रि भोजन प्रो. प्रेम कुमार धूमल वर्तमान मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश के घर पर था। प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी से सारे सर्वेक्षणों के बारे में चर्चा की कि कहां-कहां पर शक्तिपीठों के लिए किलों व महलों में हमें कार्य करने और उनमें सुधार करने की आवश्यकता है। प्रो. साहब ने ठाकुर जी को आश्वासन दिया कि जैसा आप उचित समझते हैं, उसी के अनुसार किलों व महलों का सरंक्षण किया जाएगा। प्रो.धूमल जी ठाकुर जी का बहुत आदर-सम्मान करते थे और करते रहे हैं। सर्वेक्षण के कार्य पूरे १०-१५ दिन चलता रहा। उसके उपरान्त उनके चलचित्रों को इकठ्ठा कर क्रमबद्ध किया गया और वहां के वरिष्ठ लोगों से बात करके जो प्रचलित प्रथाएं व गाथाएं थीं। उनको क्रमबद्ध करने का निश्चय किया गया।

अगले वर्ष २००५ में ठाकुर जी नेरी से दिल्ली आए और मुझे बाबा साहब आपटे स्मारक समिति की कार्यकारिणी में काम करने के लिए कहा। उसके उपरान्त संगठन मंत्री दिल्ली प्रदेश का दायित्व निभाने के लिए कहा गया। ठाकुर जी जब भी मेरे निवास स्थान ए-७/७४, सैक्टर १७, रोहिणी दिल्ली में आया करते थे तो सबका तथा गांव का पूरा हाल-चाल पूछने के उपरान्त फिर समिति व शोध-संस्थान की बेहतरी की चर्चा शुरू कर देते थे। हम भी जब कभी ठाकुर जी से संघ कार्यालय, झंडेवालान, केशवकुंज, दिल्ली और नेरी में मिलने जाया करते थे तो हमेशा समिति शोध-संस्थान व संघ कार्यों में व्यस्त मिलते थे। वर्ष २००७, अगस्त के महीने में निदेशक मंडल की नेरी हमीरपुर में बैठक बुलाई गई थी। उसमें मुझे, श्री जे.एन. सिंह, सुश्री चारू मित्तल, श्री रमेश चंद्र शास्त्री जी (चेयरमैन आलोक भारती स्कूल, रोहिणी, दिल्ली) व श्री एम.एम वशिष्ठ को भी बैठक में भाग लेना था। हम सभी को रात को दस बजे तक नेरी, हमीरपुर पहुंच जाना था। ठाकुर जी से पहले ही तय हो चुका था। परन्तु किसी कारणवश हम दिल्ली से देरी से चल सके और अगले दिन सुबह ३-४ बजे नेरी पहुंचे। वहां पर पहुंचे तो देखा ठाकुर जी सभी का इंतज़ार कर रहे थे व चिन्तित थे। ऐसे थे ठाकुर राम सिंह जी जो हमेशा दूसरों की चिंता किया करते थे । हमें तो आराम करने के लिए भेज दिया परन्तु खुद बैठक की तैयारियों में लग गए।

३१ अक्टूबर, १ नवंबर, २००९ को 'अलंकार मार्तण्ड महाराजा संसार चंद

और उनका युग' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद रखा था। इस अवसर पर मंगोलिया के राजदूत बोरोशिलोव एंखबोल्ड को मुख्य अतिथि के रूप में बुलाना था। राजदूत जी से मिलने के लिए मान्य ठाकुर राम सिंह जी व बाबा साहब आपटे स्मारक समिति के सदस्य गए। समिति व शोध-संस्थान के कार्यों की विस्तृत रूप से जानकारी दी गई । राजदूत जी ने कार्यक्रम में आने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी तथा साथ ही कहा कि वह अपने परिवार,पत्नी, बेटी व कांउसलर व उनकी पत्नी सहित आयेंगे। ठाकुर जी ने इस पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि आपने तो हमारा और भी सम्मान बढ़ा दिया है। किसी कारणवश मैं नहीं जा सका था। शाम को मुझे फोन पर राजदूत जी के सारे कार्यक्रम की जानकारी दी और कहा कि आपने उनके साथ ही दिल्ली से सुजानपुर किला पहुंचना है। अतिथियों को कोई कष्ट न पहुंचे इसकी पूरी व्यवस्था ठाकुर जी ने एक ही दिन में कर दी कि कौन साथ जाएगा। अतिथियों का सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन, शाम का नाश्ता तथा रात्रि विश्राम कहां होना है। कार्यक्रम के उपरान्त राजदूत जी को परिवार सहित मकलोड़गंज धर्मशाला, दलाई लामा के मंदिर व शाम को हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में कार्यक्रम के समापन समारोह में पहुंचना था। ठाकुर जी ने मुझे बुलाकर कहा कि आपने इनके साथ ही जाना है ताकि इनको कोई कष्ट न हो। पालमपुर में कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात राजदूत व उनके परिवार ने ठाकुर जी से मिलने की इच्छा जाहिर की। मैंने ठाकुर जी से उनकी इच्छा बताई । ठाकुर जी ने नेरी आने के लिए कहा कि आप अवश्य नेरी शोध-संस्थान देखकर जाएंगे तो मुझे भी अत्यंत प्रसन्नता होगी । करीब १०-११ बजे का समय होगा उस समय अभी ठाकुर जी सुजानुपर टीहरा में ही थे। ठाकुर जी ने शोध-संस्थान से जुड़े हुए सदस्यों को राजदूत जी और उनके परिवार का स्वागत करने के लिए व चाय-नाश्ते के लिए कह दिया और खुद भी उनके स्वागत की तैयारी में जुट गए। मंगोलिया के राजदूत और उनके परिवार के सदस्य नेरी शोध-संस्थान की भव्यता व ठाकुर जी के अतिथि सत्कार भावना को देखकर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। अपने घर आने का न्यौता दिया, ताकि मंगोलिया व अन्य विषयों पर बैठकर विचार-विमर्श विस्तार से किया जा सके, और साथ ही ठाकुर जी को अपने परिवार के साथ भोजन करने का न्यौता दिया। सिंतबर-अक्टूबर में मिलने का कार्यक्रम बनाया था परंतु भगवान को शायद यह मंजूर नहीं था।

मेरे पिता जी का ७ अप्रैल, २०१० को सुबह ५ बजे स्वर्गवास हो गया। मैं उस समय दिल्ली में था। ६ तारीख को रात २.३० बजे मुझे गांव से फोन आया कि पिताजी की तबीयत ज्यादा ही खराब हो गई है अत: शीघ्र ही परिवार सहित गांव पहुंचे। मुझे रास्ते में ही पता चल गया था कि पिताजी अब इस संसार में नहीं रहे। घर पहुंचने पर अन्तिम यात्रा की सब तैयारियां हो चुकीं थीं। जैसे ही शव यात्रा शमशान घाट पहुंची, उससे पहले ही श्रद्धेय ठाकुर जी वहां पहुंच चुके थे। अपने श्रद्धा सुमुन अर्पित करने के बाद मुझे सांत्वना देने के लिए आ गए, कहने लगे कि सुरेन्द्रजी केवल पिताजी ही इस संसार से

नहीं गए है, मेरे एक सच्चेदिली दोस्त व अन्तिम ज़िन्दा बचे हुए दोस्त भी अब इस दुनिया से चल बसे हैं। मैंने उस दिन पहली बार ठाकुर जी को इतना भावुक देखा था। कर्म-धर्म में भी पहुंचे और मुझे पूछने लगे कि आपका आगे का क्या कार्यक्रम है। हमीरपुर में एक कार्यक्रम आयोजित हो रहा है, उसमें आपको अवश्य पहुंचना है। आपसे बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति, नेरी शोध-संस्थान के बारे में कुछ ज़रूरी वार्तालाप करना है। कार्यक्रम समापन होने के पश्चात् ठाकुरजी बड़े भाई श्री नरेन्द्र नाथ जी, श्री विवेक ज्योति व मैं नेरी शोध-संस्थान में पहुंचे। ठाकुर जी ने नेरी शोध-संस्थान व मनुधाम, मनाली के कार्य में हुई प्रगति के बारे में सारी बातचीत की। उसके उपरांत बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति, दिल्ली की आम सभा के बारे में दिशा-निर्देश दिए और कहा कि मैं भी शीघ्र ही दिल्ली आऊँगा तथा बाकि बातें वहां पर होंगी। ठाकुर जी एक-दो दिन के लिए दिल्ली आए, परन्तु किन्हीं कारणों से हमारी मुलाकात नहीं हो पाई। जून महीने में हमारे गांव में बीच वाले भाई श्री रविन्द्र नाथ शर्मा की सुपुत्री मंजु की शादी होनी निश्चित हुई थी। ठाकुर जी का फोन आया कि शादी में मुलाकात करेंगे। ९६ वर्ष की आयु में भी ठाकुर जी शादी में पहुंचे तथा हम सब का मान-सम्मान बढ़ाया। शादी के समापन समारोह होने के उपरांत मुझे नेरी में आने के लिए कहा। ठुकर जी के मन में पता नहीं क्या चल रहा था। कभी-कभी कहा करते थे कि यह मेरा अन्तिम दशक है। निदेशक मंडल व समिति पदाधिकारी नेरी शोध संस्थान, बाबा साहब आप्टे स्मारक समिति के कार्यों में ज्यादा अधिक समय दिया करें।

जुलाई के दूसरे सप्ताह ठाकुर जी अस्वस्थ हो गए। उन्हें लुधियाना उपचार के लिऐ ले जाया गया। मैं वहां श्री धीरेन्द्र प्रपात सिंह के साथ १० जुलाई, २०१० को पहुंचा। ठाकुर जी बीमारी में भी कार्य योजनाओं के बारे में चिन्तन करते थे और दिशा निर्देश देते थे। स्वास्थ्य में सुधार होने पर वे कुल्लू चले गए। ३० अगस्त को कुल्लू से फोन किया तो पता चला कि ठाकुर जी के रक्त में यूरिया का स्तर बढ़ गया है, उसके इलाज के लिए दुबारा लुधियाना अस्पताल में लेकर जा रहे हैं । लुधियाना पहुंचने के उपरान्त डॉक्टर शैलेन्द्र कुलकर्णी जी व श्री चेतराम जी से फोन पर ठाकुर जी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती रही। ठाकुर जी की सेवा में अस्पताल के सभी डॉक्टर प्रयासरत थे। परन्तु भाग्य को ऐसा शायद मंजूर नहीं होगा कि ठाकुर जी का स्वास्थ्य पूर्णरूप से ठीक हो जाए। ६ सितम्बर, २०१० को फोन करने पर पता चला कि ठाकुर जी को जीवन सुरक्षित प्रणाली उपकरण पर रखा गया है। शाम तक स्वास्थ्य में कोई भी सुधार नहीं हो पाया। सांय ६ बजे श्री विजय नड्डा, पंजाब प्रांत बौद्धिक प्रमुख जी का फोन आया कि श्रद्धेय ठाकुर जी हम सब को छोड़कर सदा के लिए बिछुड़ गए हैं।

शत-शत नमन

कुंज बिहारी जालान
सीतामढ़ी, बिहार

हे तपः पूत!
शत-शत नमन
शत-शत नमन
हे कर्मवीर।
शत-शत नमन
शत-शत नमन।
हे प्रेरणा के छंद स्रोत।
इतिहास रत्न
अभिनंदनीय अभिभावक।
अभिमान शून्य देव!
सरलता के प्रतीक
ठाकुर श्री राम सिंह,
स्वीकार करें।
यह श्रद्धा सुमन,
श्रद्धा सुमन, श्रद्धा सुमन,
शत-शत नमन, शत-शत नमन।।

नेरी के राम तुम्हें शत्-शत् प्रणाम

भूमि दत्त शर्मा
पुस्तकालय अध्यक्ष नेरी,
जिला हमीरपुर, हि.प्र.

राष्ट्र की व्यथा-कथा, व्यक्त करने को,
हर पीड़ा के चिन्तन-मन्थन करने को,
सृजित किया यह मंच-संघ के संत,
नेरी के राम तुम्हें शत-शत प्रणाम।
सर्वे भवन्तु सुखिनः के आदर्श साकार करने को,
नैतिकता के गौरव को मान दिलाने को,
आपके तप का यह पन्थ-संघ के सन्त,
नेरी के राम तुम्हें शत्-शत् प्रणाम।

आध्यात्मिक-बौद्धिक विकास प्रशस्त करने को,
मानव-कल्याण सद्भावना निर्माण करने को।।
तुम्हारा यह दर्शन-संघ के सन्त,
नेरी के राम तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम।
जीवन संवारने की कला कुशलता पाने को,
दुष्कर्मों के संघर्ष कर निखार पाने को,
आपका यह दर्पण संघ के संत,
नेरी के राम तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम।

त्रिगर्त सृजन

अभ्युदय-संचार
परिषद् उपकार
अमोल उपहार
निरन्तर स्मरण
जन-व्यथा,
अनकही कथा
परहित चिन्ता
हर पल हर घड़ी
एक ही चिन्तन
राष्ट्र पीड़ा मन्थन
उपकार की युक्ति
सहज मधुर
भाव अभिव्यक्ति
आवास-प्रवास
स्थिरता-अस्थिरता
सब समान
नम्र-विनम्र
गम्भीर गर्जन

आह्वान दर्शन

प्रखर प्रकृति
कुशल कौशल
अथक धैर्य
असहारों का सहारा
कम नहीं है ''दर्शन''

जीवन दर्शन

एक धुन –
नित्य शाखा
ध्वज प्रणाम
बौद्धिक निखार
निरन्तर प्रार्थना
दिनचर्या का प्रभात
शपथ पर्यन्त
श्वास पर्यन्त
शाखा संख्या
चिन्ता नहीं
स्वयंसेवक
धर्म आजीवन व्रत निर्वाह
अक्षरश: प्रार्थना-धारण
जीवन दर्शन।।

ठाकुर रामसिंह जी

अब्दुल कादिर
जम्मवाल, जम्मू-कश्मीर

न यौवन की थी वो उमंगें, न थी चाहत वैसी,
लिये प्रण की तीव्र ज्वाला राष्ट्र हित की चाहत ऐसी,
घर त्यागा, न कहलाए साधु संन्यासी का जीवन जीना,
माँ का नित होवे प्राणों से, सदैव पूजन ऐसे जीना।।
ममतामयी छाया से, खुद को वंचित कर कांटे चुनना चाहा,
स्नेह ध्येय निष्ठा से इतना तिल-तिल स्वयं जलना चाहा,
कथनी करनी में अन्तर न था मातृवन्दना के कर्मठ पुजारी,
अंतिम पल तक सांसों में, कार्यसिद्धि की रचना उच्चारी।।
ठाकुर जी हिम प्रान्त से, अन्तिम छोर भारत का धन्य हुआ,
पूर्वोत्तर के संगठन निर्माण में जीवनकाल महिमन्य हुआ,
नि:स्वार्थ भाव के उत्प्रेरक, संघ उद्घोषक को नमन् अपना।
श्रद्धा सुमन अर्पित ठाकुर जी को, पूर्ण हो ध्येय अपना।

इक कर्मयोगी दी जिंदड़ी जिन्दड़िया दी कहाणी

वैरागी हमीरपुर
निकट सीएमओ ऑफिस हमीरपुर

ठाकुर जी तुसां माँ चरणा बिच, जीवन-फुल चढ़ाई ता।
भारत माँ दे सपूत बणी के, अपणा कर्ज चुकाई ता।।
१६ फरवरी, १९१५ दा इक शुभ दिन आया
झंडवीं गांव बिच, माता नियातु जी ने, इक बालक जाया,
पिता भाग सिंह जी ने बच्चे दा, नौं राम सिंह लखाईता ...
लग्न मुहूर्त सोधी ने पंडतैं टिपड़ा छैल बणाया
सह बालक होणा बड़ा कर्मयोगी, पंडतैं एढ़ा गलाया।
जालू जे होई गया छः वरेयां दा, पढ़ना स्कूलैं पाइता ...
बालक बड़ा ही कुशाग्र बुद्धि कने, १९४२ दा दौर प्रथम स्थान एमए बिच पाया,
एफसी कॉलेज लाहौर कॉलेज प्रवक्ता दा पद मिलेया पर, ठाकुर ने ठुकराईता ...
संघ दे वणी ये प्रचारक ठाकुर जी, न घर बार बसाया,
असम-अमृतसर जिले कांगड़े बिच, कर्मठ कम्म कमाया,
भरियो जवानी तन-मन जीवन, संघ दे लेखैं लाईता ...
इतिहास संकलन चली योजना सन् १९८८,
ठाकुर जी ने, योजना दा बुजका, चक्की लैया,
हासी-हासी दिलिया ने आई कने हमीरपुरे बिच नेरिया तम्बू गड़ाई ता ...
नेरिया रही कने कीती तपस्या, सब कुछ जवानी याद,
इतिहास परचार कराये, राष्ट्रीय परिसंवाद,
उमर ९६ दी, फेरी भी डटी रहे, रोग ने घेरा पाईता ...
डीएमसी लुधियाणे वालेयां, करी लई कोशिश सारी,
पर छः सितम्बर संझकै बेले, पंछी ने भर लई उडारी,
सत्त सितम्बर जो खाली पिंजरा, नेरिया ल्याई ने सजाईता ...
आखरी दर्शन करने जो माहणू, दूरा-दूरा ते आये,
भावुक नमन करी ने सारेयां, श्रद्धा-सुमन चढ़ाये,

अमर रहो तुसां सदियां युगां तक, रोंदे दिले ने गलाई ता ...
बाद दोपहरां तियां सब होया, जियां तुसां कीते इशारे,
तुसां दा वाहन अग्गैं-अग्गैं चलेया, पिच्छै, चली पये सारे,
सफर आखरी दा चलेया काफिला, झण्डवीं गांव पुजाईता ...
हेठ भी लकड़ू, गास भी लकड़ू, बांकी चिता चणाई,
छोटे ते लई कन्ने, बड्डे तक सारेयां, सले जो अग्ग लगाई,
पंजा ततां दे जो बणेया था पुतला, पंजा ततां चमलाईता ...
ठाकुर जी ने जेहड़ा कम्म कमाई ता, एह नी कदी रुकणे वाला,
एह सोच तां बड़ी लम्बी सोच है अणमुक दी माला,
इसी सोच ने, सैंकड़े दिमागां जो, इस रस्ते च चलाईता ...
नजरां ते होई गये दूर तुसां पर, दिले ते नी होणे दूर,
साड़ी श्रद्धाँजलि, अज बैरागी, करी लैन्यों मंजूर,
युग पुरखा दीया, माला बिच इक, मणका होर जड़ाईता ...
ठाकुर जी तुसां, माँ चरणा बिच, जीवन फुल्ल चढ़ाई ता,
भारत माँ दे, सपूत बणी के, अपणा कर्ज चुकाईता ...।

दलाश प्रवास में पैदल यात्रा

सोनी राम
गांव व डा. दलाश
जिला कुल्लू, हि.प्र.

प्रतिबन्ध के दौरान सन् १९७६ में माननीय ठाकुर जी और स्वर्गीय दीवान जी दलाश पधारे थे। यह ठाकुर जी की बड़ी कठिन यात्रा थी। नारकण्डा से पैदल रात्रि को अन्धेरे में मात्र अन्दाजे से ही वे चलते रहे। रात्रि को जब वे बड़ा गांव से नीचे लुहरी को उतर रहे थे तो लोगों ने ढांक के पास से लाईट देखी। उनके गिरने के भय से लोगों ने उन्हें आवाज़े लगाकर वहीं रुकने को कहा। आगे नीचे गहरा पहाड़ है। लोगों के आने पर उन्हें उचित मार्ग पर लगाकर वे रात्रि को शिव मन्दिर दलाश रुके। प्रात: सूबेदार गोपी चन्द से मिलने वे रिवाड़ी गांव में गए। रिवाड़ी में गोपी चन्द से मिलकर वापिस चले गए। प्रतिबन्ध के समय किस प्रकार से कार्यकर्त्ता को जोड़े रखना तथा उसके लिए कितना भी कष्ट उठाना पड़े, उस की तनिक भी चिन्ता ठाकुर जी नहीं करते थे। रामपुर के प्रथम प्राथमिक वर्ग जो दिसम्बर १९८० में दत्तनगर में हुआ था, माननीय ठाकुर जी पधारे थे। उन्हें सुनने के लिए आसपास से २५० लोग आए थे। यहीं मेरा ठाकुर जी से प्रथम परिचय हुआ था।

ठाकुर जी मुझे वापस लाए

राजेन्द्र सिंह
प्रान्त संगठन मन्त्री
हि. शिक्षा समिति
हिम रश्मि परिसर, शिमला

मैं आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक हूँ। इसके पीछे स्व. ठाकुर रामसिंह जी की ही प्रेरणा रही है। मैंने १९८६ में विद्यार्थी विस्तारक के रूप में कुल्लू से अपना प्रचारक जीवन का शुभारम्भ किया था। सन् १९८३ से १९९२ तक मैं कुल्लू में ही रहा। इसी समय मुझे तहसील प्रचारक और जिला प्रचारक का दायित्व मिला। इन दायित्वों को ठीक से निभाने के लिए मैंने भरसक प्रयास किया। मुझे स्मरण है कि इसी समय सर्दियों के मौसम में ठाकुर राम सिंह जी कुल्लू आये। हम प्रात: आखाड़ा बाजार की प्रभात शाखा में थोड़ी देर से पहुंचे। शाखा में पूर्ण चन्द जी गुप्ता और हरी राम जी भी थे। दोनों टोपी और गलबन्ध (मफलर) पहनने के उपरान्त भी सर्दी से सिकुड़ रहे थे। ठाकुर जी इतनी सर्दी में भी निक्कर पहनकर शाखा पहुंचे थे। ध्वज प्रणाम करने के पश्चात् ठाकुर जी ने दोनों (हरी राम जी, पूर्ण चन्द जी गुप्ता) को बुलाकर कहा – अरे! तुम मर जाओगे, तुम्हारे बच्चे कहां हैं? उन्हें भी शाखा में आना चाहिए। उस समय मैं कॉलेज में पढ़ता था, उनकी बात सुनकर मुझे लगा कि इन दोनों से पहले तो ठाकुर जी स्वयं इस दुनिया से चले जायेंगें। क्योंकि उस समय इनकी आयु ७० हो चुकी थी। जबकि इन दोनों की आयु ६०-७० के बीच थी। इस आयु में भी जो उनमें जोश था उसे देखकर मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका।

१९९२ में जब मेरा स्थानांतरण मण्डी के लिए हुआ तो मुझे कुल्लू छोड़ने का बहुत दु:ख हुआ। क्योंकि मैं कुल्लू तब से रह रहा था जब मैं कला स्नातक प्रथम वर्ष में पढ़ता था। इस कारण कुल्लू मुझे अपना घर जैसा लगने लगा था। जब मैं जिला प्रचारक के रूप में मण्डी आया तो मेरा मन उचाट रहता था। अपने विभाग प्रचारक से मतभेद रहने के कारण प्रचारक जीवन त्याग कर घर वापिस जाने का निर्णय लिया। शायद यह सितम्बर, १९९२ की बात है। मैं अपना सामान बांधकर सरकाघाट से बिलासपुर घर जाने हेतु बस में बैठ गया। बस जाहू में बस अड्डे पर रुकी वहां पर ठाकुर जी दिखाई दिये। मैं उनसे मिलने बस से उतरा। ठाकुर जी ने अपनी विशेष शैली में पूछा कहां जा रहे हो? मैं झूठ नहीं बोल सका। मैंने कहा घर! क्योंकि मेरी विभाग प्रचारक जी से नहीं बन रही है। उन्होंने कहा मेरे साथ घर चलो। ठाकुर जी मुझे झण्डवीं ले गये। रात्रि को उन्होंने बिस्तर तैयार कर मुझसे कहा अब सो जाओ, बात प्रात: करेंगे। प्रात: उठकर मैं फिर ठाकुर जी के पास बैठ गया और उनसे कहा, मैंने घर वापिस जाना है। ठाकुर जी ने कहा, कोई घर नहीं

जाना है। संघ का काम करो। संघ का कार्य यानि शाखा। शाखायें बढ़ाओ, उनको सुदृढ़ करो, बाकी सब ठीक हो जायेगा। मैं उनके जीवन को देखकर कुछ नहीं कह सका। वहीं से सीधा अपने कार्यक्षेत्र में चला गया। तभी से मुड़कर कभी वापिस नहीं देखा, जब कभी घर वापिस जाने की बात मन में आती थी तभी ठाकुर जी का जीवन अपने समक्ष रखकर देखता था।

मैंने पहली बार ठाकुर जी को १९८५ में बिलासपुर में बैठक में देखा था। मुझे उस समय संघ की बहुत जानकारी नहीं थी। परन्तु मुझे लगा कि ये बजुर्ग व्यक्ति कैसी कड़क बातें कर रहा है। वे प्रत्येक विषय में शाखा को महत्त्व दे रहे थे। शाखा और स्वयंसेवक के प्रति उनका बड़ा स्पष्ट दृष्टिकोण था। प्राय: वे कहते थे कि आजकल स्वयंसेवकों के भी कई प्रकार हो गये हैं। जैसे उदास स्वयंसेवक, निराश स्वयंसेवक इत्यादि । किन्तु जो नित्य प्रति समय पर शाखा आता है, वहीं एक स्वयंसेवक है। शाखा के सम्बनध में उनका कहना था कि देरी से लगने वाली शाखा, कभी-कभी लगने वाली शाखा, यह कोई शाखा नहीं, शाखा केवल वह है जो प्रतिदिन समय पर ध्वज सहित लगती है।

योजनानुसार मेरी नियुक्ति १९९२ में जिला प्रचारक के नाते ऊना में हुई। ऊना में ठाकुर जी का आना-जाना बहुत था क्योंकि दिल्ली से 'ट्रेन' ऊना तक आती थी। ठाकुर जी स्वयं निरन्तर प्रवास करते थे। मैं प्राय: उन्हें ट्रेन से स्कूटर पर ले आता था। एक बार जब ऊना के संघ कार्यालय की अधिक सीढ़ियां चढ़ते समय मैंने उन्हें सहारा देना चाहा तो इन्होंने मुझे कहा – पीछे हटो। जब मुझे सहारे की आवश्यकता पड़ेगी तो मैं अपना जीवन ही समाप्त कर लूंगा। उन्होंने मुझे अपने जीवन में ९६ वर्ष की आयु पर्यन्त पूर्ण आत्मविश्वास के साथ इस वाक्य को सार्थक कर दिखाया। उन्होंने कभी किसी से जीवन भर सहारा नहीं ले लिया। बल्कि जीवन के अन्तिम चरण तक अपना प्रत्येक कार्य स्वयं करते रहे।

वे प्राय: ऊना में पण्डोगा तथा हरोली जय कृष्ण शर्मा जी के घर जाया करते थे। एक बार मैं उन्हें लेने रेलवे स्टेशन गया। परन्तु हरोली जाने के लिए गाड़ी न मिलने के कारण ठाकुर जी ने कहा, हम स्कूटर पर ही चलेंगे। मैं स्कूटर चलाने से घबराने लगा। मुझे लग रहा था कि मेरे साथ स्कूटर पर भारतीय इतिहास संकलन योजना के अखिल भारतीय अध्यक्ष बैठे हैं। स्कूटर चलाते समय हाथ हिलने लगे। मैं झलेड़ा से आगे रुक गया। ठाकुर जी ने कहा, क्यों रुके? जब मैंने बताया कि स्कूटर नहीं चला सकता। ठाकुर जी ने स्वयं स्कूटर सम्भाला और चलाना प्रारम्भ कर दिया। उस समय उनकी आयु ७५ वर्ष के आस-पास थी। जय कृष्ण जी के घर तक ठाकुर जी स्कूटर चलाकर ले गये। जय कृष्ण जी भी यह दृश्य देखकर दंग रह गये। इतनी आयु में इतना आत्मविश्वास मैंने

पहले किसी में नहीं देखा था।

मनुधाम की प्रथम बैठक

ठाकुर जी की इच्छा थी कि मनाली में 'मनुधाम' बनाया जाये। इस हेतु से मैंने मनाली के कुछ स्वयंसेवकों के सामने बात रखी। उन्होंने मनाली के प्रबुद्ध जनों से बातचीत की और यहां के लोग इस पुनीत कार्य के लिए भूमि देने के लिए तैयार हो गए। जब इस सम्बन्ध में ठाकुर जी को बताया गया तो उन्होंने लेह जाते हुए मनाली में कार्यक्रम के आयोजन का आग्रह किया। उनके आग्रह पर २५ अगस्त, २००७ को मनाली गांव में मनु मन्दिर के प्रांगण में कार्यक्रम रखा गया। स्व. ठाकुर राम सिंह, स्व. ठाकुर भोला राम जी, प्रान्त कार्यवाह, श्री चेत राम जी तथा जिला के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त स्थानीय ग्रामवासी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में ठाकुर जी ने 'मनुधाम' के सम्बन्ध में अपनी कल्पना रखी और कहा कि इसे मानव सृष्टि के इतिहास के सभी पक्ष प्रकाश में आएंगे।

यादगार लेह यात्रा

कार्यक्रम के पश्चात् दोपहर बाद हमारी यात्रा प्रारम्भ हुई। शाम को हम लाहुल-स्पिति जिला के केलांग गांव में पहुंचे यह गांव लाहुल का एक प्रसिद्ध ग्राम है तथा यहां संघ कार्य भी बहुत पुराना है। रात्रि को हम बलवीर जी के घर रुके। अत: रात्रि को अर्जुन गोपाल (टशी दावा) जो पुराने स्वयंसेवक थे, उनके साथ काफी विस्तृत वार्ता हुई। १६ अगस्त प्रात: ६ बजे लेह के लिए चल पड़े। १८ से २० घण्टे लगातार चलने पर ही लेह पहुंचा जा सकता है। अत: हमें लगा कि इतने लम्बे और कुछ खराब मार्ग पर ठाकुर जी कैसे निरन्तर चल पायेंगे। हमने योजना बनाई कि हम 'सरचू' नामक स्थान पर रुकेंगे। परन्तु ठाकुर जी ने कहा कि रुकने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रात: काल जब हमारी यात्रा प्रारम्भ हुई तो आसमान बिल्कुल साफ था। केलंग से आगे का रास्ता गगनचुम्बी पहाड़ों की ओर बढ़ता चला जा रहा था। यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त दृश्य देखते ही बनते थे। रास्ते में रुककर फोटो खींचने की लालसा को हम नहीं रोक पाये। रोमांचकारी लेह का रास्ता तय करते हुए हमें ऐसा लगा कि जैसे हम आसमान से यात्रा कर रहे हों। अत्यन्त रमणीय स्थानों पर ठाकुर जी ने गाड़ी रुकवा कर प्राकृतिक सौंन्दर्य को निहारा तो वे आनन्द विभोर हो गये। शाम के लगभग साढ़े पांच बज चुके थे। हम पांगी पहुंच चुके थे। अब हम लेह से मात्र ४१ किलोमीटर की दूरी पर थे। अत: अब प्राकृतिक दृश्यों का रोमांच और लेह पहुंचने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। सांय के साढ़े छ: बजे हम लेह बिना रुके पहुंचे। इतने लम्बे सफर को व्यतीत कर एक हट्टे-कट्टे व्यक्ति को भी लेह पहुंचना कठिन हो जाता है। किन्तु हमें और ठाकुर जी को इतनी जल्दी लेह पहुंचते देख कर वे सभी हैरान थे। इन परिस्थितियों में लेह पहुंचने पर भी

ठाकुर जी के चेहरे पर कोई थकावट नहीं थी, अपितु वही तेज और आत्म विश्वास उनके मुख-मण्डल पर स्पष्ट देखा जा सकता था। रात्रि का भोजन विजय जी के घर पर किया। जबकि रात्रि विश्राम के लिए हम संघ कार्यालय में रुके। अगले दिन प्रात: लेह भ्रमण के लिए जाना था। इस हेतु श्री चेत राम जी व डॉ. कुशल कुमार जी ने प्रात: नौ बजे भ्रमण पर चलने का कार्यक्रम बनाया। परन्तु जब ठाकुर जी का विषय आया तो अनिल जी व विजय जी ने कहा कि यहां ऑक्सीजन की कमी रहती है। इसलिए कम से कम एक दिन विश्राम कर लेना चाहिए, ताकि शरीर यहां के वायुमण्डल से अभ्यस्त हो जाए। ठाकुर जी ने हमें यह चर्चा करते हुए सुन लिया। उन्होंने कहा कि क्या बात है अनिल जी? अनिल जी ने ठाकुर जी को सारी बात बता दी। इस पर ठाकुर जी ने कहा – कुछ नहीं है। हम प्रात: नौ बजे भ्रमण को चलेंगे। लेह समुद्र तल से ३२६० मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस कारण यहां प्राय: सांस लेने में कठिनाई रहती है। निर्धारित समयानुसार हम भारतीय शिक्षा समिति की गाड़ी में भ्रमण के लिए चल पड़े। हम काली माता मन्दिर, गुरुद्वारा, संग्रहालय, शान्ति स्तूप देखने गये। ठाकुर जी के मस्तिष्क में एक ही बात थी कि नेरी में संग्रहालय बनाना है। इसके लिए क्या-क्या हो सकता है? इसलिए उन्होंने मुझे संग्रहालय के चित्र खींचने को कहा। किन्तु पास खड़े सिपाही ने मुझे चित्र लेने से रोक लिया। परन्तु जब सिपाही से ठाकुर जी का परिचय कराया गया और उसे बताया गया कि वे २२ वर्ष तक असम में राष्ट्र कार्य के लिए प्रचारक के रूप में रहे तो सिपाही ने कहा कि वह भी असम का ही रहने वाला है। ठाकुर जी ने उस सिपाही से असमिया में ही बात की। इस पर वह बहुत प्रसन्न हुआ। अन्तत: उसने चित्र खींचने की अनुमति दे दी। संग्रहालय में पूरा समय यह सिपाही ठाकुर जी को संग्रहालय के बारे में बताता रहा। जो भी ठाकुर जी को अच्छा लगता तो वे मुझे कहते इसका भी चित्र ले लो। नेरी संग्रहालय में भी ऐसा ही कुछ बनाना है। हम रात्रि को भी लेह बाजार में घूमे। हर पल ठाकुर जी को और अधिक जानने की उत्सुकता बनी रहती थी।

१८ अगस्त को प्रात: हम खारदुंगला के लिए चल पड़े। यहां की समुद्र तल से ऊंचाई १८३८० फीट है। यहां पहुंचकर हम थोड़ी देर रुके। सुहावने मौसम में सामने दिख रही बर्फ से ढकी पहाड़ियों का दृश्य ऐसा लग रहा था मानो हम स्वर्ग में घूम रहे हों। मन यहां से जाने को नहीं कर रहा था। वहां पर हमें नागपुर से आये कुछ स्वयंसेवक मिले। ठाकुर जी को देख उनके उत्साह और प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। जबकि उन्हें लग रहा था कि हमें जानने वाला यहां कौन मिल सकता है? ठाकुर जी की आयु तथा उनके आत्मविश्वास को देखकर सभी दंग रह गये। उन्होंने ठाकुर जी के साथ फोटो खिंचवाये तथा काफी देर तक रुकने के बाद हम वापिस लेह के लिए चले। रास्ते भर मजाक चलता रहा। जो ऑक्सीजन सिलैण्डर हम साथ लाये थे। उसके बारे में ठाकुर जी ने कहा, क्या

यह चेतराम जी के लिए लाए हैं। क्योंकि मुझे तो इसकी आवश्यकता नहीं है।

रात्रि को हम कार्यालय में रुके। ठाकुर जी के चेहरे को देखकर लग रहा था कि वे लेह घूमकर सन्तुष्ट हैं। क्योंकि उनका चेहरा प्रसन्न था। उनके मुख मण्डल पर चिन्ता का भाव तनिक भी न था। जबकि उन्हें सांस की भी कोई समस्या न रही। अनिल जी यह देखकर मन ही मन सोच रहे थे कि यहां जो भी आता है वह पहले तो यही कहता है कि कुछ नहीं होता। परन्तु कुछ ही देर में सांस की समस्या प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु ठाकुर जी ९३ वर्ष की आयु में भी न थकान और न ही सांस की समस्या से परेशान रहे। इन परिस्थितियों में भी इस लौह पुरुष के मन में एक ही चिन्तन था, इतिहास संकलन। रात-दिन यही चिन्तन और यह यात्रा भी इसी चिन्तन की एक कड़ी थी।

प्रात: हमने वापिस मनाली लौटना था। हम लेह से चलकर रात्रि तक मनाली पहुंच गये। मनाली से लेह ४८५ कि.मी. दूर है। स्वस्थ व्यक्ति भी इतनी लम्बी यात्रा करके थक जाते हैं, परन्तु जब हम केलंग पहुंचे तो हमने ठाकुर जी से पूछा यहां रुकना है या मनाली चलना है। उन्होंने कहा आप अपनी देखो, मेरे बारे में मत सोचो। अत: रात्रि में ही मनाली पहुंच गये। इस प्रकार मेरे जीवन की अत्यन्त रोमांचकारी यात्रा समाप्त हुई। मेरा सौभाग्य था कि इस यात्रा में मुझे ठाकुर रामसिंह जी और श्री चेतराम जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

संघ कार्यालय कुल्लू पहुंच कर ठाकुर जी ने कहा लेह यात्रा तो हो गई, परन्तु काजा जाना अभी शेष है, वहां कब जायेंगे। हमने कहा कि हम जल्दी ही वहां का कार्यक्रम भी बनायेंगे। तत्पश्चात् शिमला आकर मैंने अपना दायित्व विद्या भारती के प्रान्त संगठन मन्त्री के रूप में सम्भाल लिया। जब भी मैं ठाकुर जी से मिलने जाता तो वे पूछते कि काजा कब चलना है। समय अभाव में हम प्राय: उन्हें अगले वर्ष चलने को कह देते थे। कुछ समय बीतने पर जुलाई, २०१० में विद्या भारती की प्रान्तीय खेल स्पर्धायें होनी थी। इसके शुभारम्भ पर श्री चेतराम जी ने घुमारवीं आना था, रात्रि को मुझे दूरभाष पर बताया गया कि ठाकुर जी हमीरपुर चिकित्सालय में हैं। मैं वहां जा रहा हूँ। इसलिए घुमारवीं नहीं आ सकता। इसके पश्चात ठाकुर जी को हमीरपुर से डी.एम. लुधियाना ले जाया गया।

वीर सावरकर कहा करते थे मैं अपनी मृत्यु को काल के मुंह से खींच कर लाया हूँ। परन्तु अब मेरा काम हो चुका है। इसलिए मृत्यु को गले लगा रहा हूँ। स्व. ठाकुर जी की जीवन यात्रा ठीक इसी रूप में चरितार्थ हुई है।

कर्मवीर ऋषिकल्प

प्रो. दामोदार झा
गौतम नगर, होशियारपुर,
पंजाब

ठाकुर रामसिंह जी महान् इतिहासविद्, राष्ट्रभक्त कर्मयोगी तथा भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक थे। उन पर ये श्लोक ठीक बैठते हैं :

विद्वान् सर्वगुणोपेतो राष्ट्रभक्तिसुनिष्ठितः।
जयताद् युगपर्यन्तं रामसिंहो यशस्तनुः।।१।।
हिमाद्रिसम्भूततनुर्यथा गङ्गाखिलं जगत्।
पवित्रयति तद्वद्धि रामसिंहयशस्तनुः।।२।।
भीष्मवद् गुणविद्याभिः सम्पन्नो दृढनिश्चयः।
ततोऽपि दशवर्षाणि ह्यधिकं कीर्तिमाप्रवान्।।३।।
सम्पश्य भगवत्पादं पुनरागत्य भारतम्।
शिक्षयेत् सकलं विश्वं सदाचारं सुनिर्मलम्।।४।।
पदं विश्वगुरोर्लब्ध्वा गच्छेत् सायुज्यमुत्तमम्।
रामवद्रामसिंहोऽपि राष्ट्रमङ्गलकारकः।।५।।
अर्पितं जीवनं येन राष्ट्रगौरववर्द्धने।
रामसिंहाय तस्मै स्यात् श्रद्धाश्लोकांजलिर्मम।।६।।

किसी मन्दिर की आधारशिला को मातृभूमि अपनी गोद में छिपा लेती है, क्योंकि आधारशिला मन्दिर के शिखर कलश से भी अधिक रक्षणीय होती है। इसी प्रकार राष्ट्रपुत्रों को राष्ट्र भूमि अपनी गोद में छिपाकर सहेज लेती है। परवर्ती काल में वे राष्ट्रपुत्र दृश्य नहीं होते पर उनकी अदृष्ट शक्ति राष्ट्र को अग्रसर करने में सदा निरत रहती है। दृश्य शरीर नाशवान् किया। दार्शनिक भाषा में अपने कारण में लीन हो जाता है पर आत्मा सदा अदृश्य होने पर भी विद्यमान रहती है। इसी कारण अवतार भी सदा सशरीर जीवित नहीं रहते। इसी प्रकार राम सिंह जी अब भौतिक शरीर के साथ हमारे बीच नहीं रहे पर उनकी यादें हमें सदा प्रेरित करती रहेंगी।

उनके कार्यकलाप इतने विस्तृत रहे हैं कि उनका वर्णन करने में विशाल ग्रन्थ बन जाए, पर अभी शोकपूर्ण वातावरण में वह संभव नहीं है। मा. ठाकुर जी से पूर्व स्वर्गीय आपटे जी की स्मृति में श्री मोरोपन्त पिंगले जी ने इतिहास शोध की योजना प्रारम्भ की थी। विश्व हिन्दू परिषद् के कार्य से जब वे होशियारपुर आते तो मुझे दर्शन देते थे। बाद में ठाकुर जी ने जब इस कार्य को लिया, तो इस कार्य में तीव्र गति आ गयी। मैं अनुसन्धानकर्त्ताओं में ही था, अतः ठाकुर जी मुझे समस्या देते थे और मैं समाधान खोज उन्हें समर्पित करता था।

इतिहास संकलन योजना का ध्येय वाक्य – 'नामूलं लिख्यते किंचित्' का भी उन्होंने निश्चय किया। वेद में इतिहासशास्त्र के अध्ययन, आर्यजनों का भारत से विदेशों में प्रसार, इतिहासपुरुष का स्वरूप, सरस्वती नदी का वैदिक उल्लेख एवं उसके मूल उद्गम स्थल तथा भूमिगत प्रवाह का अनुसंधान एवं पाश्चात्यों के सिन्धु सभ्यता सिद्धान्त का खण्डन सृष्टि का उद्भव स्थल तथा इतिहास एवं उसके ग्रहगणित ज्योतिष के प्रमाण आदि की खोज एवं स्थापना के प्रमाण आदि की खोज एवं स्थापन में उनकी प्रेरणा ही मूलकारण थी।

सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करते हुए भी वे पुस्तक लेखन तथा अनुवाद करते रहते थे। वे सचमुच कर्मवीर ऋषिकल्प थे।

धारा प्रवाह प्रवास

रमेश प्रकाश
प्रान्त संघचालक दिल्ली
करोल बाग, दिल्ली-5

मेरा संपर्क स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी से लाहौर में तब आया था, जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था। विभाजन के बाद हम भी दिल्ली आ गए। यहां पर मैं लगातार संघ कार्य से जुड़ा रहा। ठाकुर जी आसाम से आने के बाद दिल्ली प्रवास पर आते थे। ठाकुर जी का प्रवास धारा प्रवाह लगातार चलता था। ठाकुर जी दिल्ली से अमृतसर मोटरसाईकल पर आते-जाते थे। ५०० किलोमीटर का सफर ठाकुर जी के लिए कुछ नहीं होता था। मैं भी उनके साथ प्रवास पर जाता था। एक बार दिल्ली में संघ शिक्षा वर्ग लगा हुआ था। ठाकुर जी उसी दिन अमृतसर से दिल्ली समापन के कार्यक्रम के लिए पधारे थे। हमें लग रहा था कि ठाकुर जी थकान के कारण एक घण्टा ही बोलेंगे। ठाकुर जी को बोलते हुए ढेड़ घण्टा हो गया था तो किसी ने कहा कि यह बौद्धिक खत्म होने वाला नहीं है। मैं ठाकुर जी को समय बताने चला गया। ठाकुर जी ने कहा कि अभी समय नहीं हुआ है। ठाकुर जी ने जब अपनी घड़ी देखी तो घड़ी खड़ी हो गई थी।

ठाकुर जी का ज्ञान इतना अथाह था कि वे कई घण्टे लगातार एक ही विषय पर रुचिपूर्वक बोलते थे। कार्यकर्त्ताओं के साथ आत्मीय संबंध बनाना, कार्यकर्त्ताओं की बात को सुनना, सुनकर उसका समाधान निकालना ठाकुर जी की विशिष्टता थी।

हिन्दुत्त्व की स्पष्टता

हिन्दुत्त्व क्या है वह हमारे दैनिक जीवन के व्यवहार में कैसे उतरे, इसकी सही-सही परिकल्पना ठाकुर जी के उद्बोधन में रही है। उसकी दूसरी मिसाल ढूँढना कठिन कार्य है।

ध्येय पथ पर अविराम अग्रसर

सोहन सिंह
प्रान्त सचिव,
इतिहास संकलन योजना समिति, हि.प्र.

१९५२-५३ में मैंने राजकीय उच्च विद्यालय हमीरपुर में शिक्षा प्राप्त की। हमीरपुर मेरे गांव से २५ कि.मी. दूर है अत: वहां मुझे होस्टल के विद्यार्थियों की सांय शाखा की जिम्मेवारी दी गई। अपनी इस शाखा की संख्या ४०-५० रहती थी। इस शाखा का मुख्य शिक्षक का दायित्व मेरे पास था। मा. ठाकुर जी उन दिनों आसाम में प्रान्त प्रचारक थे। जब भी वह घर (झण्डवी) आते तो आती बार हम से मिलने के लिए होस्टल में अवश्य आते थे और बड़ी आत्मीयता से हमारा निजी कुशलक्षेम तथा शाखा के बारे में पूछते थे। बातचीत के माध्यम से ही स्वयंसेवक अथवा किसी कार्यकर्त्ता के दिल जीतने की कला के तो ठाकुर जी धनी थे ही परन्तु बातचीत करते-करते कई बार वह अपने व्यक्तित्व को भी भूल जाते थे। इसी कारण से वे हमें अपने परिजन ही लगते थे और हम भी अपने दिल की बात नि:संकोच उन से कर लेते थे। अगर कभी किसी भूल के कारण उन्होंने डांटा भी, तब भी मन में कोई रोष नहीं क्योंकि हमें ठाकुर जी का व्यक्तित्व एक अजात-शत्रु सा लगता था।

जून, १९७५ से जनवरी, १९७७ तक के आपात कालोपरान्त एक अभूतपूर्व राजनैतिक परिवर्तन आया। श्रीमती इन्दिरा गान्धी का अधिनायकवादी शासन सर्वथा धराशायी हो गया। इस में मुख्य भूमिका रा. स्व. संघ की ही रही। केन्द्र में तथा राज्यों में भी जनता पार्टी की सरकारें बनी। हिमाचल प्रदेश में भी श्री शान्ताकुमार के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार गठित हुई। उन्हीं दिनों में रा. स्व. संघ की बैठक गुप्तगंगा कार्यालय कांगड़ा में हुई। उस बैठक में ठाकुर राम सिंह जी प्रान्त प्रचारक के नाते उपस्थित थे। मार्गदर्शन करते हुए ठाकुर जी ने अपने स्पष्ट तथा कठोर शब्दों में कहा, ''नवगठित जनता पार्टी सरकार में कुछ एक अपने लोग भी हैं, अपना कोई कार्यकर्त्ता किसी मंत्री अथवा मुख्यमन्त्री से नहीं मिलेगा।'' सैद्धान्तिक रूप में ठाकुर जी की यह बात बिल्कुल सत्य है।

ठाकुर राम सिंह जी जितने सरल हृदय थे उतने ही अपने प्रति व्यवहार में कठोर थे। अपने सिद्धान्त पर जीवन पर्यन्त अडिग रहे। कई बार अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने ध्येय-पथ पर अभिराम अग्रसर रहे। जो मन में होता था वहीं बोलते थे और जो बोलते थे उसे करके दिखा देते थे। ठाकुर जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शिक्षा वर्ग में जो एक बार प्रतिज्ञा की, ''मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से आजीवन हिन्दू संगठन का कार्य करता रहूँगा।''

ठाकुर जी ने इस प्रतिज्ञा को अक्षरश: एवं प्रामाणिकता से जीवन पर्यन्त निभाया। परिस्थितिवश कभी भी समझौता नहीं। कुछ लोग उन का विरोध भी करते रहे किन्तु संगठन हित में वह कभी विचलित नहीं हुए। जैसा कि राजा भर्तृहरि ने कहा है :—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात्पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:।।

भर्तृहरि नीति शतक में वर्णित यह वाक्य ठा. राम सिंह जी पर ठीक चरितार्थ होता है। वह उच्च कोटि के विद्वान ही नहीं, अपितु संगठनकर्त्ता भी थे। उन का एक ही ध्येय था कि यदि हिन्दू संगठन सबल होगा तो अपनी सब व्यवस्थाएं अपने अनुकूल चलेंगी अन्यथा नहीं। अब ठाकुर जी तो दिवंगत हो गए हैं, केवल उन के द्वारा मार्गदर्शन में कहे गए वाक्य ही हमारे लिए प्रेरणास्पद होंगे।

अनुकरणीय व्यक्तित्व

वर्ष २००९ गर्मी के मौसम में ठाकुर राम सिंह जी 'इतिहास संकलन' सम्बन्धी अपने प्रवास के दिनों में रात्रि विश्राम हेतु मेरे पास नादौन में रुके, यह मेरा सौभाग्य था। आत्मीयतावश ठाकुर जी के साथ काफी बातचीत हुई क्योंकि नि:संकोच हम कोई भी बात कर लेते थे।

भोजनोपरान्त जब ठाकुर जी सोने लगे तो अपना कुर्ता पायजामा उतार कर खूंटी पर लटका दिया। मैंने देखा कि ठाकुर जी का कुर्ता और पायजामा काफी मैले हो चुके थे। एक दम मन में आया कि कुर्ता पायजामा साफ करने के लिए ठाकुर जी से अनुमति ली जाए परन्तु मैं यह भी भली-भान्ति जानता था कि ठाकुर जी अपना कपड़ा स्वयं ही साफ करते हैं। वह किसी की सहायता स्वीकार नहीं करते हैं। मन में यह भी चिन्ता थी कि ठाकुर जी अगले कल प्रात: ही यहां से चल देंगे और कपड़े साफ करने का समय तो मिलेगा नहीं। इसी दुविधा मे मैं ठाकुर जी के पास से उठ कर अपने कमरे में चला गया।

दस-पन्द्रह मिनट के पश्चात मैंने देखा कि ठाकुर जी तो सो गए हैं और अवसर पाकर मैंने ठाकुर जी का कुर्ता पायजामा धीरे से खूंटी से उतारे और बाहर जाकर साफ कर के सूखने के लिए फैला दिए। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे यह मेरी चिराकांक्षित उपलब्धि थी। परम् पिता परमात्मा से यह प्रार्थना की कि मुझे प्रात: तीन बजे जगा देना ताकि मैं ठाकुर जी के जगने से पूर्व ही उन के कपड़ों को प्रेस करके निश्चित स्थान पर रख सकूं। मैं निश्चिन्त होकर सो गया।

अगले कल प्रात: तीन बजे मेरी आंख खुल गई और उठ गया। ठाकुर जी के कपड़े सूख गए थे, अत: मैंने कपड़ों को प्रेस करके ठाकुर जी के जगने से पहले ही यथापूर्व खूंटी पर लटका दिए। मुझे खुशी थी कि मैं अपनी चालाकी में सफल हो गया।

ठाकुर जी यथा नियम प्रात: उठे। सब से पहले हल्का सा व्यायाम किया। फिर स्नान किया। अल्पाहार के उपरान्त उन्हें तुरन्त प्रस्थान करना था। जैसे ही अपने कपड़े उठाये तो थोड़े मुस्करा कर मुझे कहा, ''अरे यह तुम कब करते रहे? इस की क्या आवश्यकता थी? रात को सोये नहीं?'' मैंने भी हंसी में उत्तर दिया, ''ठाकुर जी जब आप सो गए थे तो अवसर पा कर मैंने यह चालाकी से कर लिया।''

इसके उपरान्त ठाकुर जी ने मुझे अच्छे कार्यकर्त्ता व्यवहार विषय पर कुछ बातें समझाईं। विशेष बात यह थी कि जब तक शरीर में सामर्थ्य है और बुद्धि स्वस्थ है, तब तक स्वाभिमानी कार्यकर्त्ता को आत्म निर्भर रहना चाहिए। अपना निजी काम स्वयं ही करने का अभ्यास बना रहना चाहिए।

ठाकुर जी ने यह नियम जीवन पर्यन्त निभाया जो सब कार्यकर्त्ताओं के लिए अनुकरणीय है। इस से नि:संदेह जीवन में नियमितता एवं व्यवस्था बनी रहती है। कभी कोई बाधा नहीं आती।

सुझावों और प्रश्नों में प्रशिक्षण

शेर सिंह
राष्ट्रीय इतिहास योजना समिति
केन्द्रीय सदस्य, 513/11, पंचकूला

मेरा सम्पर्क सर्वप्रथम ठाकुर जी से १९७२ में हुआ था। बाद में ठाकुर जी क्षेत्रीय प्रचारक बने, साथ में इतिहास का कार्य भी देख रहे थे।१९८८ में ठाकुर जी ने मुझे इतिहास का कार्य करने को कहा। मैंने ठाकुर जी को कहा, ''मैं इतिहास का कुछ नहीं जानता।'' ठाकुर जी बोले, ''स्वयंसेवक सब कुछ जानता है। सब कुछ करता है।'' तभी से मैं इस कार्य के साथ जुड़ गया।

ठाकुर जी इतिहासकार थे। वे हर बात पर प्रथम पूर्ण विचार करते थे। कार्यकर्त्ताओं को जान लेते थे। उन्हें सुझाव देने के लिए प्रेरित करते थे। होना और करना क्या है, वह सब जानते थे। इन्हीं सुझाव व प्रश्नों में कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हो जाता था। अपने उत्तर क्षेत्र में ठाकुर जी की योजना के अनुसार जिला स्तर तक इतिहास संकलन योजना की समितियाँ बन गई थी। समितियों के सुचारू संचालन के लिए निरन्तर प्रवास के लिए प्रेरित करते थे। मैं ठाकुर जी के पास शोध संस्थान नेरी में भी आया करता था। वे सारे काम की जानकारी लेते थे, विस्तार से कार्य की चर्चा करते थे। ठाकुर जी का जाना एक बहुत बड़ी अपूरणीय क्षति है।

ऋषि मार्ग के पथिक

विद्यासागर नेगी
गांव आसरंग,
जिला किन्नौर (हि.प्र.)

स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी प्रकृति के विधान के अनुसार आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनकी प्रेरणाएं, उनके न रहने पर भी हजारों, लाखों लोगों का किसी न किसी रूप में मार्ग-दर्शन कर रही हैं और इसी प्रकार आगे भी करती रहेंगी। अंग्रेजों के जमाने में इतिहास विषय में उच्च शिक्षा हासिल करने के बावजूद, उन्होंने कोई सरकारी पद ग्रहण नहीं किया और न ही उन्होंने गृहस्थ जीवन में बन्धकर, एक सीमित दायरे में रहना ही स्वीकार किया। इतना ही नहीं, वे राजनैतिक-सत्ता सुख के पीछे भी नहीं भागे।

आज मैं सोचता हूँ कि यदि उन्होंने गृहस्थ जीवन स्वीकार किया होता तो वे अपनी पत्नी के पति, सन्तान के पिता और परिवार के मुखिया मात्र होते। यदि वे किसी शिक्षण संस्थान में होते तो वे प्रोफेसर होते या संस्थान के प्रमुख बने होते। यदि राजनीति में गए होते तो वे या तो विधायक, सांसद या मन्त्री बने होते और राजनीति से बाहर होते ही वे पूर्व विधायक, पूर्व सांसद या पूर्व मन्त्री कहलाए जाते। राजनीति में रहते जिनका उनसे स्वार्थ सिद्ध हुआ होता वे उनकी प्रशंसा कर रहे होते और उनसे जिनका स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ होता, वे लोग उनकी आलोचना कर रहे होते। इससे ज्यादा शायद ही उनकी पहचान होती।

ठाकुर साहब ने जो रास्ता चुना, उसे भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कहा जाए तो हम उन्हें ऋषि मार्ग के पथिक कह सकते हैं। अतीत में हमारे ऋषि-मुनि लोग अरण्य में रहते हुए प्राणिमात्र के हितसुख के लिए मार्ग की खोज करते थे, कैसे एक व्यक्ति सन्मार्ग पर आरुढ़ होकर, अपने जीवन को बहुजन के हित और सुख के लिए सार्थक बना सके, इसके लिए वे चिन्तन, मनन करते थे। उन्हीं ऋषि-मुनियों के चिन्तन-मनन का परिणाम आज हमारे सामने वेद, आरण्यक, उपनिषद आदि हैं, जिनके अध्ययन, चिन्तन-मनन से दुनिया सदियों से दिशा पाती आ रही है।

ठाकुर राम सिंह जी लद्दाख से लेकर अरुणाचल तक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक की बारम्बार यात्रा कर उन क्षेत्रों की संस्कृति, इतिहास, मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों से पहले स्वयं भली–भांति परिचित होते थे और उसके बाद भारतवासियों को विशाल भारत की संस्कृति एवं इतिहास से परिचय कराते थे। इसी कारण ही, उन्हें भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यत्र-तत्र विद्यमान अतीत के भग्नावशेषों से भारत के गौरवमय अतीत की कीर्तिगाथा सुनायी पड़ती थी। वे भग्नावशेषों की भाषा को

सुनने तथा समझने की योग्यता रखते थे। वे भारत के अतीत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक कड़ियों को भग्नावशेषों से ढूँढ-ढूँढ कर बड़े यत्न से जोड़ते और दुनिया के सामने भारतीय अतीत की सही तस्वीर दिखाने का भरसक प्रयत्न करते थे। वे दुनिया को भारत के अतीत की उस झांकी का दर्शन कराना चाहते थे जो उनकी अपनी थी।

जैसे कि ऊपर कहा जा चुका है कि उनका मार्ग ऋषि मार्ग था और उसी ऋषिबाट के बटोही ठाकुर राम सिंह जी ने अपने जीवन के सभी भौतिक सुखों को तिलाँजलि देकिर राष्ट्र के अतीत की गौरवमय अस्मिता से देशवासियों को परिचित करवाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक जो कार्य उन्होंने किया, उसी के कारण वे आज सभी के "नमन एवं श्रद्धा" के पात्र बने हैं।

जहाँ तक मेरी बात है, मैंने उनका पहला दर्शन हिमालय परिवार द्वारा शिमला के पीटरहॉफ में आयोजित एक राष्ट्रीय परिसंवाद गोष्ठी में किया था। उस सेमिनार में देश के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वान लोग आए थे और उनमें सफेद कुर्ता, पजामा, सदरी तथा कुल्लुवी टोपी पहने, एक व्यक्ति वयोवृद्ध होने के बावजूद, सबसे हटकर दिख रहे थे। उनके चेहरे पर गज़ब की रौनक थी, वे शरीर से स्फूर्त दिख रहे थे। जहाँ वे अन्य लोगों से भिन्न दिख रहे थे, वहीं हर व्यक्ति के निबन्ध पाठ को वे गम्भीरता पूर्वक सुन रहे थे, बिना किसी टीका-टिप्पणी के। मेरा निबन्ध राष्ट्रीय सन्दर्भ में भोटी भाषा के महत्त्व पर था। सेमिनार हिमालय परिवार का था तो भोटी भाषा हिमाचल के अधिकाँश लोगों की भाषा है और बौद्ध कालीन भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, तक्षशिला आदि महाविहारों में उस काल में पढ़ाये जाने वाले बौद्ध धर्म-दर्शन तथा इतिहास के ग्रन्थ मूल संस्कृत में आज उपलब्ध नहीं हैं, किन्तु भोटी भाषा में उनका शब्दश: अनुवाद सुरक्षित है। इस दृष्टि से मैं भोटी भाषा की उपयोगिता को राष्ट्रीय सन्दर्भ में दिखा रहा था। निबन्ध वाचन के उपरान्त जब शाम को हम लोग जाने लगे तो सीढ़ियों से उतरते समय पीछे से मेरी पीठ थपथपाते हुए वे सबसे अलग दिखने वाले व्यक्ति मुझे कह रहे थे, आपका निबन्ध बहुत अच्छा था। उन्हें तो मैं सकुचाते हुए हाथ जोड़कर नमस्कार कहने के सिवा कुछ नहीं कहा, किन्तु जब मैंने अपने मित्र डॉ. विद्या चन्द ठाकुर से उनके बारे में जिज्ञासा प्रकट की तो मुझे ज्ञात हुआ वही ठाकुर राम सिंह थे, जिनके बारे में उससे पहले भी कई बार सुन चुका था। अगले दिन सेमिनार के दोनों सत्रों का आयोजन शिमला बचत भवन में था। पहले सत्र का संचालन मैंने किया था और दूसरे सत्र का संचालन नेपाल से आई हुई एक विदुषी ने किया था। इसी दूसरे सत्र में भारत के अतीत के विविध ऐतिहासिक पक्षों को एक अस्सी वर्ष का व्यक्ति जिस अन्दाज से प्रस्तुत कर रहा था, उसे सुनकर मैं बेहद प्रभावित हुआ। वे निबन्ध पाठ नहीं कर रहे थे और न ही नोटबुक देख रहे थे और न ही ये दोनों चीजें उनके पास थीं। जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो वे बोलते ही चले गए। मैं सोचता रहा, लोग थोड़ी सी बात कहने के लिए भी कागजों का पुलिंदा लेकर चलते हैं, जबकि यह व्यक्ति पूरे भारत के अतीत

के विभिन्न घटनाक्रमों को बिना रुके बोलते जा रहा है, क्या कमाल की स्मरण शक्ति पायी है। इस व्यक्ति ने हर ऐतिहासिक घटना का ब्यौरा बाकायदा तिथि वार दिया, न कहीं रुका, न कहीं आगे-पीछे हुआ। उनके इतिहास ज्ञान के सामने तो सेमिनार में आए दूसरे सारे लोग आभाहीन से दिख रहे थे।

इसके बाद मैंने उनका दर्शन कुल्लू में एक सेमिनार में किया था। हालांकि वे अस्वस्थ थे, फिर भी एक सत्र में वे बोले। उनका आखिरी दर्शन मैंने लाहुल के सिस्सू में घेपन महाराज के देवालय हॉल में आयोजित एक सेमिनार में किया था। उनके हर शब्द में सन्देश था, अपने को समझने का। उनके शरीर पर उम्र का असर ज़रूर दिख रहा था, किन्तु उनकी वक्तृत्व शक्ति के आगे, शायद उनकी उम्र भी हार गई थी। इसी कारण कोई असर नहीं दिख रहा था। उनका कहना था कि भारतवर्ष को विदेशी कलम तथा विदेशी नज़रिये से नहीं बल्कि भारतीय कलम तथा भारतीय नज़रिये से देखो और समझो।

हम लोगों ने ठाकुर राम सिंह जी को साक्षात् देखा है, किन्तु भावी पीढ़ी को उनके बारे में जब कोई बताएगा। तो वह शायद ही विश्वास करेगी कि हाड़-मांस का ऐसा कोई व्यक्ति भी भारत की धरती पर था, जिसकी हर सांस में भारत की संस्कृति बसी थी।

शत-शत नमन

वैद्य बालकृष्ण
आकाशवाणी कोठी, जालन्धर

अमृतसर में संघ कार्य का प्रभाव अभी बढ़ रहा था। घटना दुर्गयाणा मन्दिर के पास की है। प्रतिदिन सैंकड़ों माताएं-बहनें दुर्गयाणा मन्दिर में प्रात: शाम पूजा अर्चना करने जाया करती थी। उन दिनों कारों व अन्य इस प्रकार के वाहनों का प्रचलन नहीं था। मुसलमान बग्गी चलाया करते थे। कुछ बदमाश मुसलमान कभी-कभी इन माताओं व बहनों के साथ अभद्र व्यवहार कर देते थे। कभी-कभी तो शील हरण तक की घटनाएं घट जाती थीं। यहां इन गुण्डों का एक पूरा गिरोह था। कोई उन पर हाथ नहीं उठाता था। यह जानकारी जब ठाकुर राम सिंह जी को लगी तो उन्होंने दस तरुण स्वयंसेवकों को इन गुण्डों को ठीक करने का कार्य दिया। स्वयंसेवकों ने अपनी पूरी तैयारी कर ली। गुण्डों के गिरोह की ताक में बैठ गए। बस जैसे जी गुण्डे आए, स्वयंसेवकों ने लाठी के प्रहारों से उनकी मस्ती खत्म कर दी। गुण्डे भागते फिरे। उन्हें बचने का रास्ता नहीं मिल रहा था। स्वयंसेवकों ने ऐसी लाठियाँ चलाई कि दुबारा कभी गुण्डों की ऐसी हरकत करने की हिम्मत न हुई। स्वयंसेवकों ने यह काम मात्र एक दिन नहीं किया बल्कि एक सप्ताह तक लगातार बदमाशों की हरकतों को देखते रहे और अन्त में स्वयंसेवकों के भय से उन गुण्डों ने उस ओर आना ही छोड़ दिया। इस घटना का अमृतसर के समाज पर एक अनुकूल असर हुआ। संघ की प्रशंसा हुई तथा ठाकुर जी के मार्गदर्शन में संघ का प्रभाव बढ़ा।

भारत विभाजन की याद ताजा

बलवन्त सिंह ठाकुर
अध्यक्ष, बाबा साहेब आपटे,
जालन्धर, पंजाब

ठाकुर जी हर समय कार्य के चिन्तन में लगे रहते थे। बाबा साहिब आपटे स्मारक समिति की बैठक में जालन्धर आए थे। उन्होंने मुझे कहा कि भारत विभाजन सम्बन्धी संस्मरण लिखो। टेकचन्द के पास जाओ आदि अनेक बातें मेरे से की।

ठाकुर जी का चिन्तन व्यापक था। उसके लिए वे स्वयं मेहनत करते थे। संस्मरण लिखने की घटना साधारण नहीं है। उसके लिए उन्होंने एक प्रपत्र तैयार किया था। जिन-जिन लोगों ने भारत विभाजन के समय अनेक कष्ट सहे, हिन्दुओं को बचाने में कार्य किया, ऐसे लोग धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। भारत विभाजन की याद ताजा रखना, आने वाली पीढ़ी को भारत के उस विराट स्वरूप का स्मरण रहे, वह जीजिविषा बनी रहे कि पाकिस्तान व भारत अलग देश नहीं, परिस्थितिवश ऐसा हुआ यह एक अस्थाई विघटन है। इसे एक करना है। यह चिन्तन था ठाकुर जी का। ठाकुर जी नहीं रहे, यह हम सब के लिए अपूरणीय क्षति है।

असम से घर आते-जाते समय ठाकुर जी जालन्धर आया करते थे। इसलिए ठाकुर जी से सदा सम्पर्क बना रहता था। इतिहास का कार्य तो ठाकुर जी के पास उस समय आया जब आम आदमी की स्मृति भ्रम हो जाती है। ठाकुर जी ७० वर्ष पूरे कर चुके थे और इक्हतरवां वर्ष चल रहा था। ठाकुर जी मुझे कहने लगे तुम्हें इतिहास का काम करना है। मैंने कहा, ''ठाकुर जी मैं, इतिहास का विद्यार्थी नहीं हूँ। मैंने तो भौतिक विज्ञान ही विद्यार्थियों को पढ़ाया है।'' ठाकुर जी बोले, ''तुम्हें इतिहास नहीं लिखना है। तुम्हें संगठन करना तो आता है। तो तुम्हें इतिहास लिखने वालों का संगठन करना है। उन्हें दिशा देनी है। बाकि काम मैं कर लूंगा।'' मैं इतिहास के काम में लग गया। इतिहास दपर्ण पत्रिका के १३३ आजीवन सदस्य बनाए व धीरे-धीरे ठाकुर जी के आदेशानुसार इतिहास संकलन समिति के कार्य को आगे बढ़ाया।

ठाकुर जी का आत्म विश्वास, कार्य के प्रति समर्पण व कार्यकर्ता के प्रति स्नेह का कोई दूसरा सानी नहीं दिखाई देता है। अंतिम समय में भी बाबा साहिब आपटे स्मारक समिति पंजाब का कार्यक्रम ३० दिसम्बर २०१० को तय कर गये। जिसमें मा. पू. सरसंघचालक जी से समय लिया गया है। यह कार्यक्रम ठाकुर जी के न रहने पर भी उनके निर्देशानुसार सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया है। वैसे तो ठाकुर जी इतिहास के विद्यार्थी प्रारम्भ से ही थे। एम.ए. भी इतिहास में ही किया था परन्तु संघ योजना के आधार पर तो ठाकुर जी के पास इतिहास का कार्य ७० वर्ष की आयु में आया। ठाकुरजी ने सारा इतिहास पढ़ डाला। उस पर चिन्तन किया। विदेशियों ने कहां-कहां इतिहास के साथ छेड़-छाड़ की है उस का विश्लेषण गहराई से किया।

धोती कुर्ते में सन्यासी

टेक चन्द
निकट संघ कार्यालय
पीली कोठी, जालन्धर

मेरा सम्पर्क माननीय ठाकुर जी के साथ ६० वर्षों से रहा है। वे एक धोती कुर्ते में सन्यासी थे। एक बार ठाकुर जी कार्यालय में अपने कपड़े धोकर आए। मैंने कहा ठाकुर जी मैं आप के कपड़े निचोड़ कर टांग देता हूँ। आप से निचोड़ा नहीं जाएगा। ठाकुर जी बोले, ''यह शक्ति प्रदर्शन का काम नहीं है। जोर की हंसी का ठहाका मारा।''

१९४८ में संघ पर प्रतिबन्ध लगा। संघ के नाम से कोई काम नहीं होना था, पर काम सभी होने थे। वे कैसे किये जाएं। उस की युक्ति व प्रतियुक्ति ठाकुर जी सब स्वयं देखते थे।

कृष्णा मोटर वर्क्स के नाम से एक वर्कशाप खोली। सभी कार्यकर्त्ताओं की जिम्मेवारियां तय हो गईं। किसे किस मोर्चे पर काम करना है। वर्कशाप में गाड़ियाँ आती थी। अपना काम करती थी और निर्देश लेकर अपने गंतव्य पर चली जाती थी। कोई किसी प्रकार का नियम न तोड़े, ऐसी सख्त हिदायत थी।

मेरी ड्यूटी ऐसी कठिन जगह लगी हुई थी जहां से भोजन करने जाना भी नहीं हो पाता था। जहां भोजनालय था वह एक बजे बन्द हो जाता था। एक दिन ठाकुर जी ने पूछ लिया कि तुम्हारा भोजन कैसे होता है। मैंने कहा कि एक बजे मैं यहां से जा नहीं पाता हूं और भोजनालय बन्द हो जाता है। अरे, एक बजे भोजनालय बन्द हो जाता है तो क्या तुम्हारी रोटी कपड़े में लपेट कर नहीं रख सकते? दूसरे दिन से ऐसा ही होने लगा।

ठाकुर जी २१ वर्ष बाद पुन: पंजाब आए। उन्होंने मुझसे पूछा, ''पं. लेखराज आदि पुराने स्वयं सेवकों ने कैसे काम करना छोड़ दिया है?'' मैंने ठाकुर जी को सारी बातें बताई। ठाकुर जी बोले, इन्हें पुन: कार्य में लगाना, तुम्हारी चिन्ता का विषय नहीं, मेरी चिंता का विषय है। मैं इन्हें पुन: कार्य में लगा दूंगा। ठाकुर जी गुजरात प्रान्त प्रचारक को लेकर पं. लेखराज के घर गए। उन्होंने ही उन्हें स्वयंसेवक बनाया था। भोजन-पानी हुआ। बातें हुई और वे पुन: कार्य में लग गए।

अमृतसर बच गया

पं. जगन्नाथ शर्मा
पूर्व संघ चालक हिमगिरी प्रान्त
भुन्तर, कुल्लू, हि.प्र.

मा. ठाकुर राम सिंह वर्ष १९४७ के देश विभाजन की घटना सुनाते थे कि वे उस समय अमृतसर के कार्यालय में थे। उन्हें सूचना मिली कि अमृतसर के भारत विभाजक मुसलमानों ने अमृतसर दरबार साहिब के स्वर्ण मंदिर के कोषागार और शस्त्र भण्डार को लूट कर दुर्गयाणा मन्दिर को लूटना था और फिर हिन्दू बस्तियों, मोहल्लों एवं बाज़ारों को लूटना और जलाना था। इससे अमृतसर को पाकिस्तान में मिलाना आसान हो जायेगा। अमृतसर का महत्त्व तत्कालीन उत्तर भारत में वही था जो सारे भारतवर्ष में आज मुम्बई का है। यह उद्योग, व्यापार, खाद्यान्न मण्डी, कपड़ा आदि सब प्रकार का आर्थिक केन्द्र था। यदि पाकिस्तान अमृतसर पर कब्जा कर लेता तो वह अपनी सीमाएं दिल्ली तक बढ़ा सकता था।

ठाकुर जी ने तत्काल स्वयंसेवकों को इस योजना से अवगत करवाया और सुबह होने से पहले रातों-रात २०० स्वयंसेवकों को पूरी तैयारी के साथ स्वर्ण मन्दिर के सभी प्रवेश द्वारों के रास्तों पर मोर्चे सम्भालने को बिठा दिया। अपनी योजना के अनुसार जब आक्रमणकारी मुसलमान पर्यवेक्षक योजना को कार्यान्वित करने से पहले निरीक्षण के लिए आए तो वे सभी मोर्चों पर स्वयंसेवकों को देख कर आक्रमण का हौसला नहीं कर पाये। इस प्रकार बरती गई सावधानी से एक भयंकर विनाश लीला टल गई और अमृतसर बच गया।

इस सम्बन्ध में बाद में पत्रकारों ने ठाकुर जी से पूछा कि आपने जो स्वयंसेवक मोर्चा सम्भालने को भेजे थे, उनके पास मुकाबले के लिए क्या अस्त्र-शस्त्र थे ? ठाकुर जी ने जवाब दिया, "आप क्या समझते हैं कि वे वहां गुलाब जामुन लेकर गये थे?"

ठाकुर जी के साथ सुखोचक तक की यात्रा

सन् १९७१ में पाकिस्तान का पूर्वी पाकिस्तान वाला हिस्सा एक अलग बंगलादेश के रूप में अस्तित्व में आया। शेख मुजीवुर्रहमान वहां के सर्वे-सर्वा राज्याध्ययक्ष बन गये। भारत की सेना ने पाकिस्तानी ९३, ००० सैनिकों को युद्ध बन्दी बना दिया। पाक जनरल नियाजी ने ढाका में भारत के जनरल अरोड़ा के पास आत्म समर्पण का दिया। भारतीय सैनिकों का आक्रमण लाजबाब था।

इन सैनिकों की सहायता में स्वयंसेवकों का साहस देखने लायक था। स्वयंसेवकों का नेतृत्व माननीय ठाकुर रामसिंह जी कर रहे थे। बंगला देश से विस्थापित हुए स्वयंसेवक

पठानकोट आकर बस गए। ठाकुर जी ने योजना बनाई कि जहां पर आप सब लोग रहते थे उन गांव को देखने जाना चाहिए। मैं भी अपने परिवार के साथ उन दिनों पठानकोट गया हुआ था। उन दिनों मेरे पास देहरादून विभाग व पठानकोट विभाग दो विभागों के संघचालक का दायित्व था। वैसे ये दोनों विभाग अलग-अलग प्रान्तों में थे, फिर भी मेरे पास ऐसा दायित्व था। मेरे तीनों बेटे सुदर्शन, प्रदीप व सन्दीप भी हमारे साथ चलने को तैयार हो गए। बच्चे उन दिनों केन्द्रीय विद्यालय पठानकोट में पढ़ते थे। हम सभी माननीय ठाकुर जी के नेतृत्व में २०-२५ कार्यकर्त्ता चार गाड़ियों में कठुआ के रास्ते बतीया होकर कालूचक के रास्ते सुखोचक पहुंचे। रास्ता बहुत खराब था। विभाग कार्यवाह श्री जनकराज जी महाजन वहीं के रहने-वाले थे। उन्होंने आपनी दुकानें भी बताई। गांव बताए तथा उन्होंने वहां की सारी स्थितियां बताई। विभाजन से पूर्व वहां मिडल स्कूल था। उसी ग्राऊंड में हम सबने वहां प्रार्थना की। फोटोग्राफर मेहता ने वहां एक फोटो भी लिया था। बालक राम, जगराज, दर्शनलाला, पन्नालाल, रवि और मेहता जी आदि स्वयंसेवक थे। मैं अपनी अम्बेसडर गाड़ी १९५९ माडल लेकर गया था। वहां से हम पटवारखाने का रिकार्ड भी लेकर आए थे। रामदत्त जो जनसंघ के संस्थापक थे उनका कहना था कि यह रिकार्ड हमें काम आएगा। उस पूरे क्षेत्र की दुर्दशा सर्वत्र दिखाई दे रही थी। सुखोचक से आगे जाकर हम नारोवाल से सियालकोट को जाने वाली रेलवे लाईन पर पहुंचे और आमरू नामक रेलवे स्टेशन पर हमने भारतीय सैनिकों के साथ फोटो खिंचावाई। रेलवे स्टेशन पर चकआमरू उर्दू व अंग्रेजी में लिखा था। १९७१ में वहां रेलवे स्टेशन पर बिजली तक न थी। कैरोसीन के ही लैम्प

मैं क्या बूढ़ा हो गया हूँ

अनिल कुमार
जालन्धर

सन् २००७ की बात है। मैं उस समय पठानकोट में जिला सेवा प्रमुख था। माननीय ठाकुर राम सिंह जी पठानकोट प्रवास पर आए थे। यहां से उन्हें धर्मशाला जाना था। विभाग कार्यवाह श्री अमृत सागर जी ने मुझे मा. ठाकुर जी को छोड़ने के लिए साथ जाने को कहा। मैं तैयार हो कर आया तो माननीय ठाकुर जी बोले, "क्या बात है ? क्या मैं बूढ़ा हो गया हूं ? अगर मैं दिल्ली से चल कर यहां आ सकता हूं तो धर्मशाला जाने में क्या कठिनाई है? आप मुझे बस में बैठा दीजिए, मैं स्वयं चला जाऊंगा।" काफी आग्रह करने पर भी वे नहीं माने । बस में बैठते समय उन्होंने धर्मशाला के कार्यकर्ता का नाम व दूरभाष नम्बर दे कर उसे बस का नाम, नम्बर एवं बस के धर्मशाला पहुंचने का समय बताने को कहा। सारी सूचनाएं देकर वह नौ दशक पार कर चुका कर्मयोगी निश्चिंत भाव से गजब के आत्मविश्वास के साथ बस में बैठ गया। उनका यह आत्म विश्वास जीवन के आखिर क्षण तक बना रहा ।

कठोर तपस्वी व्यक्तित्व मन पर अंकित हो गया

विजय कुमार नड्डा
प्रान्त बौद्धिक प्रमुख पंजाब,
18 सी, 1017, चण्डीगढ़

माननीय ठाकुर राम सिंह जी से पहला परिचय बिलासपुर संघ कार्यालय में हुआ था। संघ में मेरा प्रवेश नया था इसलिए इनके व्यक्तित्व की ऊँचाई या गहराई उस समय ध्यान में नहीं आयी। बस धोती कुर्ता में एक तेजस्वी चेहरा ही स्मृति में दर्ज हो पाया। इस दिन कालेज विद्यार्थी एकत्रीकरण था और माननीय ठाकुर जी के आने पर नगर में विशेष हलचल थी। इस दिन का इतना ही स्मरण है। इस समय हुआ साधारण सा परिचय आगे कब निकटता में बदल गया इसका अंदाजा नहीं लगा। मा. ठाकुर जी संघ कार्य और कार्यपद्धति को लेकर अत्यन्त आग्रही एवं कठोर थे। कार्य की बारीकियों के ओर उनका विशेष ध्यान रहता था। अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता भी उनके सामने कार्य देते समय लड़खड़ा जाते थे। सन् १९८६ की शाहतलाई संघ शिक्षा वर्ग की घटना है। वर्ग के पश्चात् बैठक चल रही थी। सभी विभाग प्रचारक कार्य दे रहे थे। श्री महावीर जी, डा. सत्यपाल जी एवं श्री चेतराम जी सभी को किसी ना किसी बात पर डांट पड़ रही थी। हम उस समय नये कार्यकर्ता थे। यह सब हमारे लिए एकदम नया अनुभव था। श्री चेतराम जी कार्यक्षेत्र में कार्य को लेकर काफी सख्त रहते थे। उन्हें भी डांट पड़ती देख हम हैरान थे। उसी समय से मा. ठाकुर जी का एक ध्येयनिष्ठ, कठोर अनुशासित चित्र हमारे मन में अंकित हो गया। समय के साथ वह चित्र दृढ़ से दृढ़तर होता गया।

व्यक्तिगत सम्बंध बनाने में सिद्धहस्त

मैं जब मा. ठाकुर जी के सम्पर्क में आया उस समय कालेज में पढ़ता था। संघ की योजना से बिलासपुर कालेज से मण्डी कालेज में प्रवेश लिया। मा. ठाकुर जी से साधारण परिचय ही था। इसी समय मेरे भतीजे की अकाल मृत्यु हो गयी। उस दौरान उनके घुटने में काफी दर्द रहता था। हमारे घर तक पहुंचना काफी कठिन था। लगभग एक किलोमीटर उतराई-चढ़ाई का रास्ता था। मैने ठाकुर जी से सड़क पर रुकने का आग्रह भी किया पर वह घर आकर ही माने। सारे परिवार से सांत्वना व्यक्त की। परिवार में बड़े भैया, अभी तक ठाकुर जी को याद करते हैं। उसके बाद ठाकुर जी मिलने पर परिवार का हाल-चाल पूछते थे। यह क्रम आखिर तक चला। इस प्रकार साधारण परिचय को व्यक्तिगत सम्पर्क व संबंध में बदलने की कला में वे सिद्धहस्त थे।

छोटे कार्यकर्ता को लेकर सदैव उदार

मैं जब हमीरपुर जिला में जिला प्रचारक था, उस समय मा. ठाकुर जी के साथ ज्यादा

समय रहने का सौभाग्य मिला। वर्ष में दो-तीन बार मा. ठाकुर जी घर या बहन जी के पास आते थे। मैं प्राय: उनके साथ ही होता था। इस दौरान उनके व्यक्तित्व के कई पहलू ध्यान में आए। वे कार्य और कार्यपद्धति को लेकर जितने आग्रही एवं कठोर रहते थे उतने ही छोटे कार्यकर्ता को लेकर अत्यन्त स्नेही एवं उदार थे। वे हमेशा उसे प्रोत्साहन देते रहते थे। एक बार मैं स्कूटर पर मा. ठाकुर जी को उनकी बहन जी के घर कुठेड़ा लेकर जा रहा था। इतने बड़े अधिकारी को स्कूटर पर ले जाना, वैसे ही अखरता था, लेकिन ठाकुर जी कार्यकर्ता को कार या टैक्सी आदि करने को मना करते थे। कार्यालय के स्कूटर पर पीछे बैठकर यात्रा करने में वे ज्यादा प्रसन्न रहते थे। एक दिन मैं गांव के संकरे मार्ग पर जा ही रहा था कि मार्ग में एक तिरछी पाईप के उपर से स्कूटर जैसे ही निकालना चाहा, स्कूटर एकदम से फिसल गया। मैं एकतरफ और ठाकुर जी दूसरी तरफ गिरे। मैं तुरंत खड़ा होकर ठाकुर जी तक पहुँचा ही था कि देखा ठाकुर जी पहले ही खड़े हो गये थे। मेरे बोलने से पहले ही वो बोल पड़े, कुछ नहीं हुआ, कोई बात नहीं, ऐसा होता ही रहता है। इस घटना को लेकर मैं काफी समय तक आत्मग्लानि अनुभव करता रहा। आश्चर्य कि माननीय ठाकुर जी ने इस प्रसंग को लेकर न कभी मुझसे और न किसी और से जिक्र किया। छोटे कार्यकर्ता के प्रति उनकी उदारता असीमित थी।

कार्यकर्ता के आग्रह पर झुक जाते थे

घटना हमीरपुर जिला की है। हमीरपुर जिला उस समय संघ कार्य की दृष्टि से अत्यन्त कमजोर था। हमीरपुर में संघ कार्यालय की सब कार्यकर्ता आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। 'फौजी सराय' के नाम से प्रसिद्ध एक भवन इस दृष्टि से कार्यकर्ताओं ने कार्यालय के लिए चुना था। सरकार के थोड़े से प्रयत्न से वह सराय कार्यालय को मिल सकती है। लेकिन सरकार में प्रभावी ठाकुर जगदेव चंद के गृह जिले में इनकी सहमति के बिना यह संभव नहीं था। उस समय हमीरपुर में ठाकुर जगदेव का एकछत्र प्रभाव था। परन्तु ठाकुर जगदेव की संघ विरोधी छवि उस समय संघ कार्य की वृद्धि में अप्रत्यक्ष बाधक बनी हुई थी। उनकी संघ विरोधी छवि समाप्त करने और कार्यालय के लिए उनका सहयोग लेने के लिए मा. ठाकुर रामसिंह जी ही सक्षम अधिकारी थे। लेकिन ठाकुर जी को ठा. जगदेव चंद जी से बात करने के लिए तैयार करना कौन सा आसान काम था? एक बार भाजपा के अखिल भारतीय संगठन महामंत्री श्री सुन्दर सिंह भंडारी हमीरपुर आए हुए थे। हमने इस अवसर का लाभ उठाने की सोची। बिलासपुर के एक प्रमुख स्वयंसेवक ठाकुर रामदास जी के हाथ श्री भण्डारी जी के नाम एक संदेश भेजा गया कि माननीय ठाकुर रामसिंह जी आज हमीरपुर में हैं। संदेश का अपेक्षित परिणाम हुआ। उन्होंने ठाकुर जी को बुलाने के लिए गाड़ी एवं कार्यकर्ता भेजे। ठाकुर जी ने पहले तो मना कर दिया, फिर कहा कि जैसा विजय कहे वैसा कर लो। ठा. जी ने मुझसे पूछा की क्या बात है? वहां जा कर क्या करना है? मैंने ठाकुर जी से कार्य में आ रही कठिनाई एवं

कार्यालय की आवश्यकता आदि सारी बात की। ठाकुर जी चलने को तैयार हो गए। वहां जा कर उन्होंने मेरा सम्मानजनक परिचय कराया तथा संघ कार्य में सहयोग करने को कहा। संघ कार्यालय के सम्बध में उन्होंने ठाकुर जगदेव चंद जी की शैली में ही पूछा, 'ठाकुर आप दूसरी बार मंत्री बने हो। यहां संघ कार्यालय कब बनेगा?' श्री सुंदर सिंह भंडारी ने भी संघ कार्यालय की आवश्यकता पर बल दिया। ठाकुर जगदेव ने कार्यालय एवम् कार्य के लिए हर संभव सहयोग का वायदा किया। उन्होंने संघ कार्यालय के लिए प्रयास भी किया। मा. ठाकुर रामसिंह जी की बातचीत के परिणामस्वरूप, उसी साल श्री गुरुदक्षिणा कार्यक्रम में श्री ठाकुर जगदेवचंद अध्यक्ष के नाते आए। इस प्रकार उनकी संघ विरोधी छवि दूर हुई। संघ कार्य वृद्धि में कार्यकर्ताओं के प्रयत्नों को यश मिलने लगा। इस प्रकार माननीय ठाकुर जी संघ कार्य एवम् कार्यकर्ता का मन रखने के लिए अपने मन के प्रतिकूल होने पर भी किसी कार्य के लिए तैयार हो जाते थे।

लक्ष्य को कभी मत भूलो

डॉ. सूरत ठाकुर
लेखक प्रमुख
भुन्तर, कुल्लू

राष्ट्र, देश, इतिहास और संस्कृति के लिए पूरी तरह समर्पित मैंने अपने जीवन में केवल एक ही व्यक्ति को देखा, वे थे स्व० ठाकुर राम सिंह जी। उनके मार्गदर्शन में ही कुल्लू की इतिहास संकलन समिति ने देवी देवताओं के इतिहास को खोजना शुरू किया। कुल्लू का इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति पर जो सराहनीय काम हुआ और हो रहा है, उसमें केवल उन्हीं की प्रेरणा है। कुल्लू में राष्ट्रीय परिसंवाद होना और मनाली में मनु धाम के निर्माण की कल्पना केवल ठाकुर राम सिंह जी, जैसे युग पुरुष ही कर सकते हैं।

उनकी नज़रें पारखी थीं। वे एक ही नज़र में किसी भी व्यक्ति की क्षमता को जान जाते थे और उससे वही काम करने को कहते थे। मृत्यु से पहले अगस्त, २०१० में जब वे कुल्लू आए थे तो मैं दानवेंद्र सिंह के साथ उनसे मिलने गया था तब उन्होंने मुझे कहा था कि केवल तुम ही कुल्लू के इतिहास पर शोध कार्य कर सकते हो। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया था कि मैं शीघ्र ही यह काम पूरा करके उन्हें सौंपूंगा। उन्होंने मेरे द्वारा सम्पादित कुल्लू व लाहौल-स्पिति के वस्त्राभूषण व खान-पान नामक पुस्तक पढ़ी थी। इसके लिए उन्होंने बीमारी की हालत में भी बधाई दी थी। वे हमेशा कहा करते थे कि अपने लक्ष्य को कभी न भूलो।

मनुधाम का ही ध्यान

महेश्वर सिंह
पूर्व सांसद,
रूपी पैलेस, कुल्लू

मैं उन्हें पिछले २५ वर्षों से जानता था। उनके काम करने के तरीके से मैं बहुत प्रभावित था। स्व० ठाकुर रामसिंह जी की स्मरण शक्ति तेज थी। इतनी अधिक उम्र होने पर भी वे छोटी-छोटी बातों को याद रखते थे। उनकी इच्छा शक्ति गज़ब की थी। जिस काम को करने का संकल्प लेते थे, उसे सम्पूर्ण करने के लिए सदा प्रयासरत रहते थे। स्वास्थ्य लाभ के लिए जब कुल्लू आए थे तो मैं भी श्री राम सिंह के घर पर उनसे मिलने गया था। उस समय अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए भी उन्होंने मनुधाम के संकल्प को दोहराया था और कहा था कि निकट भविष्य में इसका शिलान्यास करना है।

ठाकुर जी का धैर्य

कर्म चन्द
चालक
संघ कार्यालय, झण्डेवालान

ठाकुर जी कभी किसी को तकलीफ नहीं देते थे। जब उन्हें कहीं प्रवास पर जाना होता था तो दिये गए समय से १५ मिनट पूर्व अपने सामान के साथ नीचे उतर आते थे। ९५ वर्ष की उमर में भी अपना सारा सामान स्वयं समेटकर सदैव तैयार रहते थे। किसी को कष्ट देना तो दूर की बात है, अपनी पानी की बोतल रसोई से स्वयं भरकर लाते और अपने कमरे में रखते। वह पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर थे।

२००३ से २०१० तक ठाकुर जी का हमीरपुर और दिल्ली प्रवास नियमित चलता था। कोई सहायक साथ नहीं लेना। कभी पूछने पर कह देते, ''मुझे क्या हुआ है? मैं यहां से गाड़ी में बैठा और दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मुझे लेने के लिए कार्यकर्त्ता आए हुए होंगे। रात को सोना ही तो है और क्या करना।'' अप्रैल २०१० रात्रि को विनोद कुमार और मैं ठाकुर जी को गाड़ी में बैठाने के लिए दिल्ली रेलवे स्टेशन आए। आज ट्रेन विलम्ब से आ रही थी। ट्रेन का इन्तजार करते-करते प्रात: के चार बज गए। रात को एक बार कॉफी भी पी। सुबह चार बजे यह पक्का हो गया कि ट्रेन ५:५० बजे जाएगी। विनोद कुमार ने कहा कि ठाकुर जी वापिस कार्यालय चलते हैं, थोड़ा हाथ मुंह धोकर पुन: ५:३० पर रेलवे स्टेशन पर आ जाएंगे। बात पक्की होने के बाद ही ठाकुर जी ने झण्डेवालान कार्यालय जाने की अनुमति दी और स्वयं भी साथ गए। चाय तथा नित्य कर्म से निवृत होने के उपरान्त ५:३० बजे स्टेशन पर पहुंच गए। फिर दिन के ३ बजे ऊना पहुंचे। ऊना से गाड़ी द्वारा उसी दिन शाम नेरी शोध संस्थान पहुंच गए। ऐसे दृढ़ प्रतिज्ञा थे ठाकुर जी।

कला पारखी

अश्वनी शर्मा
अश्वा आर्ट
सलासी, हमीरपुर, हि.प्र.

मेरा सम्पर्क संघ से १९६४ में उस समय आ गया था कि जब मैं चौथी-पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। यह सम्पर्क निरन्तर नहीं बना रह सका। तीन वर्ष पूर्व माननीय ठाकुर जी से सम्पर्क हो गया। सुना तो ठाकुर जी के बारे में बहुत था, परन्तु कभी दर्शन नहीं हुए थे। ठाकुर जी के दर्शन कर मैं धन्य हो गया। ९३ वर्ष की आयु और युवा जैसी सोच। यह परिचय तब हुआ जब नेरी शोध संस्थान में उद्घाटन का कार्यक्रम था। मैंने संगणक कक्ष के लिए विश्वकर्मा का चित्र बनाया था। उस चित्र को देखकर ठाकुर जी प्रसन्न हुए। यहीं से अब नेरी शोध संस्थान आना-जाना प्रारम्भ हो गया। अनेक प्रकार की चर्चा होती उसमें ठाकुर जी की मन्शा यह रहती कि नेरी शोध संस्थान विश्व स्तर का संस्थान बने। भारत का युवा अपने इतिहास को समझकर अपना स्वाभिमान उन्नत करें। यह कार्य मात्र पुस्तकों को प्रकाशित कर ही सम्भव नहीं है। उसके लिए ऐसी सचित्र भारतीय इतिहास की संकल्पना समाज के सामने रखी जाए जिसे समाज आसानी से समझ सके।

३१ अक्तूबर व १, २ नवम्बर, २००९ को सुजानपुर में कटोच वंश पर राष्ट्रीय परिसंवाद हुआ। वहां पर विश्व गुरु भारत-विज्ञान प्रदर्शनी को लगाने का कार्य मुझे सौंपा गया था। उस कार्य को देखकर ठाकुर जी प्रभावित हुए थे। अब उन्होंने संस्थान में हमीर संग्रहालय को अत्याधुनिक रूप देने का कार्य मुझे सौंपा। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा ने उसकी पाण्डुलिपि तैयार की। यह एक कठिन कार्य है। परन्तु ठाकुर जी की इस इच्छा को साकार करने की दिशा में कार्य चल रहा है। ठाकुर जी स्पष्ट कहते थे, ''हम बन्दर की औलाद नहीं हैं, हम ब्रह्मा जी द्वारा उत्पन्न सप्त ऋषियों की सन्तानें हैं। यह हमारे शास्त्रों में सप्रमाण उपलब्ध है। उसे ही सचित्र संग्रहालय में दर्शाना है।'' ठाकुर जी कल्पनाशील व व्यावहारिक कर्मयोगी थे। हर छोटी-छोटी बातों का वे ध्यान रखते थे। काम करने वालों को प्रोत्साहित करते थे। मनोबल बढ़ाते थे। नई-नई योजना देते रहते थे। ठाकुर जी ने एक ऐसी आदत डाल दी कि जब तक नेरी न जाएं चैन नहीं मिलता है।

आज ठाकुर जी शरीरीक तौर पर नहीं हैं, परन्तु उनकी अर्न्तदृष्टि हमारा मार्गदर्शन करती रहती है। अब हम और अधिक सजग हो गए हैं। अब ठाकुर जी पूछने वाले नहीं हैं, लेकिन उनका प्रेरक संदेश एक-दूसरे के सलाह-मशविरा से कार्य को पूरा करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए हमेशा प्रोत्साहित कर रहा है।

आशीर्वाद की अनुभूति

वीरेन्द्र प्रताप सिंह
सह महामन्त्री
बाबा साहेब आपटे स्मारक समिति
दिल्ली

विश्वास नहीं होता। आज भी विश्वास नहीं होता। ऐसा लगता है कि मानो आज भी वे कुल्लू (हि.प्र.) में आराम कर रहे हैं। आज भी उनका फोन आएगा और हमेशा की तरह परिवार का हाल-चाल पता करने के बाद दिल्ली में बाबा साहब आपटे स्मारक समिति के कार्य के विषय में पूछेंगे। आज भी उनकी प्रतीक्षा रहती है। ऐसा लगता है कि श्री मान चेतराम जी (कार्यालय प्रमुख, ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान) का फोन आने वाला है कि माननीय ठाकुर जी अमुक ट्रेन के अमुक कोच में अमुक दिनांक को पहुंचने वाले हैं। विश्वास ही नहीं होता कि ठाकुर जी आज हमारे बीच नहीं है।

६ सितम्बर शाम को ऑफिस से घर की ओर बस के द्वारा जा रहा था कि श्रीमान सुरेन्द्र शर्मा जी का फोन आया कि दिल्ली में रहने वाले माननीय ठाकुर जी के भाई की मुझे जानकारी है कि नहीं। मन तभी किसी आशंका से भयभीत हो गया और रास्ते में झंडेवाला संघ कार्यालय में उनके कमरे में जाकर पता तथा दूरभाष ढूंढने लगा। मन इसी उधेड़बुन में लगा था कि पता नहीं सुरेन्द्र शर्मा जी ने मुझसे ऐसा क्यों पूछा, क्योंकि कुछ समय पूर्व ही तो मैं माननीय ठाकुर जी से लुधियाना, दयानन्द मेडिकल कॉलेज में मिलकर आया था कहने लगे कि अच्छा किया जो मिलने चले आए।

जो व्यक्ति चिकनगुनिया जैसी खतरनाक बीमारी को भी इस अवस्था में हरा सकता है उसे कुछ नहीं होगा। यही बात मन में आती है। मा. ठाकुर जी से मेरा परिचय गत १०-११ वर्षों से है। जब मैं केशव पुस्तकालय में कार्य करने हेतु आया था, उस समय स्व. चमनलाल जी तथा मा. ठाकुर जी केशव पुस्तकालय तथा केशव लेखागार का कार्य देखते थे। कुछ वर्ष पुस्तकालय में कार्य करने के बाद मा. ठाकुर जी मुझे अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना में कार्यालय प्रमुख के नाते ले गए। प्रारम्भ में मा. ठाकुर जी की कार्य पद्धति को समझने में कठिनाई आई लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उनकी कार्य पद्धति और उनको समझने में आसानी हो गई। गजब की शारीरिक व मानसिक क्षमता थी उनमें। शुरू में एक बार कार्यकर्त्ता में जो हिचकिचाहट होती थी, उसे वे सरलता के साथ दूर कर देते थे।

मुझे स्मरण है एक ऐसी घटना, जब मैं पुस्तकालय में कार्य करता था। मा. ठाकुर जी अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के कार्यालय में पुस्तक भंडार के पुस्तकें व्यवस्थित करके लगा रहे थे। तब मा. सुरेश जी (पूर्व सह प्रांत प्रचारक, दिल्ली) उनसे मिलने गये। वहां उन्होंने देखा कि मा. ठाकुर जी उम्र के इस पड़ाव में

कितनी लग्न से अकेले कार्य कर रहे हैं। तभी उन्होंने संघ के कुछ स्वयंसेवकों को उनकी मदद के लिए बुलाया। कुछ देर उनके साथ कार्य करने के बाद, मा. ठाकुर जी की आज्ञा लेकर वे सारे वापस चले गये। लेकिन ठाकुर जी का कार्य लगातार चलता रहा। शाम को मा. सुरेश जी मेरे पास आए और उन्होंने मुझे उनकी मदद के लिए भेजा। रात ९ बजे तक कार्य पूरा होने तक उनके मार्गदर्शन में कार्य किया। बीच-बीच में जब थकावट महसूस होती तो ठाकुर जी मुझे आराम करने के लिए कह देते और स्वयं कार्य में लगे रहते। उनको इस तरह कार्य में लीन होकर देखता तो महसूस होता कि जब ठाकुर जी इस उम्र में भी बिना थके कार्य कर रहे हैं तो मैं क्यों नहीं कर सकता? लगभग ५ घण्टे के बाद जब कार्य पूर्ण हुआ तो मा. ठाकुर जी मुझसे बहुत खुश हुए और मुझे प्रेम से बिस्कुट खिलाए। यह मेरी उनसे कार्य करते हुए पहली भेंट थी।

मैं यहां एक दूसरी घटना का भी उल्लेख करना चाहूँगा। एक बार मा. ठाकुर जी को बी. के. मोदी (मोदी फाउंडेशन) के यहां किसी समारोह पर जाना था। वहां उनका उद्‌बोधन था। कार्यक्रम सवेरे का था। एक दिन पहले दोपहर बाद अपना भाषण तैयार करके उन्होंने मुझे उसे टाइप करने के लिए दिया। टाइप करने के बाद जब मैंने उनको उसकी प्रति दी, तो उन्होंने उसमें कुछ संशोधन कर पुन: तैयार करने के लिए मुझे वापस कर दी। मैं जब दोबारा तैयार करके लाया तो उन्होंने पहले की तरह मुझे फिर संशोधन कर वापस कर दिया। इस तरह करते-करते रात के लगभग २:३० (ढाई) बज गये। मैं पूरी तरह थक चुका था। लेकिन मा. ठाकुर जी के माथे पर कोई थकान का चिन्ह न था। उन्हें तो बस चिंता थी कि एक अच्छा उद्‌बोधन सभी लोगों के समक्ष जाए। भाषण पूरी तरह तैयार करने के बाद उन्होंने मुझे सोने के लिए कह दिया। मैंने जब उनसे कहा कि अब तो आप भी सो जाइये, तो उन्होंने कहा कि अभी मुझे कुछ और काम करने हैं। इसलिए तुम जाकर सो जाओ। मैं हैरान हो गया। संघ कार्यालय में जब मैं सवेरे उठा तो देखा कि मा. ठाकुर जी तो सवेरे ही कार्यक्रम के लिए निकल गए थे।

लगभग १०-११ वर्षों से उनके साथ-साथ रहते-रहते उनसे सीखने को काफी कुछ प्राप्त हुआ। वह बिना रुके व थके हमेशा संघ कार्य में लगे रहते थे। मुझे बहुत प्यार करते थे। एक बार की घटना का उल्लेख यहां अवश्य करना चाहूंगा। एक बार किसी कारणवश मैं मा. ठाकुर जी से नाराज हो गया। उन्होंने मुझे कई बार दूरभाष पर सम्पर्क करने का प्रत्यन किया, पर मैंने नाराजगी में उनका फोन नहीं उठाया। दो-तीन दिन बीत जाने पर जब मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ तो मैं उनके पास चला गया। वह कमरे में बैठे कुछ कार्य कर रहे थे। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, तो सारा काम छोड़कर उन्होंने मेरे कान पकड़े और पूछा कि बात क्या हो गई है। मैंने उनको सारी बातें बताई तो उन्होंने कहा कि जब भी कभी मेरी आवश्यकता हो, तो तुरन्त बताना। तुम हमारे परिवार के एक सदस्य की तरह हो और परिवार में रूठना, मनाना तो चलता ही रहता है, उस दिन मुझे ऐसी अनुभूति हुई जैसे घर में किसी बुजुर्ग व्यक्ति का आशीर्वाद सर पर है। मैं उन्हें, घर

के सबसे बड़े सदस्य के रूप में देखता था।

शाम को ऑफिस से कभी-कभी जल्दी आकर उनके पास बैठता था तो वे अपने समय में संघ कार्य की बातें बड़े प्यार से बताते थे। किस प्रकार उन्होंने और उनके जैसे दिवंगत प्रचारकों ने विपरीत परिस्थितियों में संघ-कार्य को खड़ा किया।

मैं उनके बारे में और कई ऐसी अनेक घटनाओं का जीता जागता उदाहरण हूँ। वे कल भी मेरे साथ थे, आज भी हैं और जिंदगी के हर पड़ाव में मेरे साथ ही रहेंगे। मेरा सौभाग्य है कि ऐसे तेजस्वी प्रचारक का साथ मैं कुछ दूर तक निभा सका हूँ।

तुम्हें पांव नहीं छूने हैं

डॉ. लता वैद्य
प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र
गौड़ा, सोलन, हि.प्र.

जब मेरा स्थानान्तरण आर्युवैदिक स्वास्थ्य केन्द्र नेरी में हुआ तो एक दिन श्री चेत राम जी आए और उन्होंने कहा कि ठाकुर जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, आपको इनका निरीक्षण करना होगा। जब मैं वहां गई तो देखा ठाकुर जी अध्ययन कर रहे हैं। परिचय करने के बाद उन्हें औषधि बताने के पश्चात् दुबारा निरीक्षण करने गई तो मैं हैरान रह गई। इतने महान व्यक्ति में रोगी व चिकित्सक की क्या गरिमा है, पहली बार देखा। जो दवाई जिस समय लेनी है, क्या मजाल उस में एक मिनट आगे पीछे हो, क्या परहेज करना है। क्या अनुपात लेना है। इतना ज्ञान और समय का सदुपयोग पहली बार देखने को मिला। फिर उनके साथ मिलना होता रहा। जब भी जाती तो किसी न किसी विषय में जैसे पर्यावरण की समस्या, देश की बिगड़ती आर्थिक स्थिति, अनुशासनहीनता के प्रति सदैव चिन्ता व्यक्त करते थे और कभी भी नकारात्मक नहीं सोचते थे। बड़े सरल स्वभाव के सच्चे व्यक्ति, साधारण जीवन शैली, उच्च विचार, निर्भीक तथा धार्मिक इन सब का संगम एक व्यक्ति में मैंने देखा तो वे ठाकुर जी थे। जब भी मेरी उनसे बात होती थी तो मुझे लगता था कि मैं अपने पिता जी से बात कर रही हूँ। उनके मन में भी मेरे लिये यही भाव थे। एक बार जब मैं वहां उन का हाल पूछने गई, सब लोग उनके पांव छू रहे थे तो मैंने सोचा कि मैं भी इनके पैर छूती हूँ तो उन्होंने मुझे मना कर दिया और कहा तुम बेटी हो, तुम्हें पैर नहीं छूने हैं। ऐसी कई बातें हैं जो व्यक्त नहीं कर पाती। जिस दिन उनका देहान्त हुआ रात को १०:३० बजे सांय के करीब पंकज जी ने यह दुखद समाचार दिया। पूरी रात उनके विलक्षण व्यक्तित्व के बारे में सोचती रही कि अभी तक तो उन्होंने शोध संस्थान के लिए बहुत कुछ सोच रखा था, फिर ऐसा कैसे हो गया।

समर्पणता की प्रतिमूर्ति

मौलूराम ठाकुर
देवप्रस्थ, ढालपुर
कुल्लू, हि.प्र.

ठाकुर राम सिंह समर्पणता की प्रतिमूर्ति थे। किसी भी संस्था, संगठन या समाज के सभी नेता या अग्रगण्य सदस्य उस संस्था के प्रति पूर्णतया समर्पित और प्रत्यार्पित हों ऐसा विश्वास करना निरर्थक है। परन्तु जब तक कोई न कोई सदस्य अपने संगठन और उसके ध्येय के प्रति कृतसंकल्प, सत्यनिष्ठ और अनुरक्त न हो वह अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकता। ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं और ठाकुर राम सिंह ऐसे कर्मठ और परायणताशील अमर विभूतियों में से एक थे। सचमुच वे समर्पणता की प्रतिमूर्ति थे।

मैंने उन्हें पहली बार १९९८ में बचत भवन कुल्लू में बोलते हुए सुना और पाया कि उनमें राजनीतिक नेता की सनक नहीं थी। वे अपने विषय पर बोले। विषय से बाहर कुछ नहीं कहा। संभवत: तब वे इतिहास संकलन की बैठक में पहली बार कुल्लू आए थे। इसलिए स्थानीय श्रोताओं द्वारा उनसे पूछना स्वाभाविक था। वे विश्वास से बोले तथा अन्यों को आश्वस्त करने में भी उनमें पूरे गुण थे। मैंने उन्हें कभी उत्तेजित और आक्रामक होते नहीं देखा। अपने सुशील स्वभाव, तर्कशील प्रवृत्ति और प्रज्ञाशील बुद्धि वैभव के कारण सदा सफल और विजयी होकर उभर आते थे।

१९९९ को वे पुन: कुल्लू आए। यद्यपि हमारे कुल्लू में नया सम्वत् अनेक तरह के व्यंजनों के साथ गुड़ला साज़ा, लेहुरा साज़ा, नुआं सम्वत्, शुडकू साज़ा आदि अनेक नामों से मनाया जाने वाला एक महत्त्वपूर्ण पर्व माना जाता है। परन्तु यह जानने की कभी जिज्ञासा नहीं हुई कि प्रथम चैत्र को बीते तो कई दिन हो चुके होते हैं और प्रथम बैशाख अभी कुछ दिन दूर होता है तो फिर इसी बीच किसी विशेष दिन को यह नया सम्वत् कौन सा है ? यह न विक्रमी संवत है और न शक संवत्। उदाहरणार्थ उसी वर्ष १८ मार्च, १९९९ को नया सम्वत् का दिन था। ठाकुर जी के भाषण से ही मुझे पहली बार ज्ञात हुआ कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् नवरात्र की प्रतिपदा को नव सम्वत् आरम्भ होता है। जैसे उसी वर्ष १७ मार्च, १९९९ तक कलियुगाब्द कलि सम्वत् ५१०० और विक्रमी संवत् २०५५ प्रचलित रहा तथा १८ मार्च, १९९९ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन कलियुगाब्द ५१०१ और विक्रमी संवत् २०५६ का शुभारम्भ हुआ। क्योंकि युगाब्द के ५१०० वर्ष बीत चुके थे और नई सदी आरम्भ हो रही थी। इसी उपलक्ष्य में भारतीय इतिहास संकलन समिति की स्थानीय ईकाई ने १८ अप्रैल, १९९९ के दिन इतिहास दिवस का आयोजन किया था। श्री दानवेंद्र सिंह की अध्यक्षता तथा डॉ० सूरत ठाकुर के

सम्पादन में एक पत्रिका भी प्रकाशित हुई थी जिसमें ठाकुर राम सिंह का 'काल और कालगणना' और मेरा 'कुल्लू में नया सम्वत् की लोकपरम्परा' शीर्षक से लेख शामिल हैं।

ठाकुर राम सिंह जी का मानना था कि विश्व भर की कालगणनाओं में हिंदू कालगणना सबसे प्राचीन है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह काल विशेष से सम्बन्धित है और खगोल शास्त्र पर आधारित है न कि देश विशेष, जाति विशेष, व्यक्ति विशेष या महापुरुष विशेष पर। वे लिखते हैं कि विक्रमी संवत् २०५६ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार १८ मार्च, १९९९ को हमने २८वें महायुग के कलियुग की ५१वीं शताब्दी को पार कर ५२वीं शताब्दी में प्रवेश किया है। अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आज से १,९७,२९,४९,१०० वर्ष पूर्व प्रथम मानव का प्रादुर्भाव विश्व के अपने देश भारत में हुआ और हमने सर्वप्रथम रवि के दर्शन किए। अगले वर्ष २००० ई० में पुन: नया सम्वत् के दिन कुल्लू आए। तब तक उन्हें कुल्लू के देवी देवताओं से सम्बन्धित अच्छी जानकारी प्राप्त हो चुकी थी। देर तक वे इस विषय पर मेरे साथ विचार-विमर्श करते रहे। उस वर्ष रामा समुदायिक भवन लोअर ढालपुर में कार्यक्रम रखा गया था। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा था कि कुल्लू का इतिहास वास्तव में देवी देवताओं का इतिहास है और यदि हम देव संस्कृति का समुचित अध्ययन कर पाएं तो यह कार्य वर्तमान समय की प्रासंगिकता में विश्व जनमानस के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। उन्हीं के दिशा निर्देशन पर कुल्लू की साहित्यिक संस्थाओं ने कार्य आरम्भ कर दिया है। दानवेंद्र सिंह की अध्यक्षता में इतिहास संकलन समिति ने 'कुल्लू की ऋषि परम्परा' पर एक पुस्तक प्रकाशित कर दी है। देवप्रस्थ साहित्य एवं कला संगम द्वारा संकलित और सम्पादित पुस्तक 'पश्चिम हिमालय में नाग परम्परा' इस समय प्रैस में प्रकाशनाधीन है। श्री दानवेंद्र सिंह की अध्यक्षता में कुल्लू की देवियों पर सामग्री संकलित की जा रही है।

स्व० ठाकुर राम सिंह मनाली और मनाली के इतिहास से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में एक राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित करने की योजना तैयार की। उनका विचार था कि पृथ्वी के समग्र इतिहास की कुंजी मन्वन्तरमान के विज्ञान में विद्यमान है और वैवस्वत मन्वन्तर का सीधा सम्बन्ध मनाली से है। आज न केवल मनु वरन् अनेक वैदिक ऋषि कुल्लू के विभिन्न स्थानों पर देवरूप में पूजे जा रहे हैं। इसलिए देवताओं के परिप्रेक्ष्य में कुल्लू के समाज के अध्ययन से भारत के इतिहास के लेखन या पुनर्लेखन में सुविधा मिल सकती है।

इसी विषय पर 'वैवस्वत मन्वन्तर में मानव सृष्टि एवं देवत्व पर आधारित समाज संरचना' विषय पर भारतीय इतिहास संकलन समिति द्वारा १० मई से १२ मई, २००२ तक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का कुल्लू में आयोजन किया गया। भारत के विभिन्न स्थानों से लगभग पचास इतिहासकारों ने इस परिसवांद में भाग लिया, परन्तु संयोग से उन दिनों ठाकुर राम सिंह जी अस्वस्थ हो गये। वे परिसंवाद के लिए कुल्लू तो

पहुंच गए थे परन्तु उद्घाटन समारोह के समय जब हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे, वे उपस्थित जरूर हुए, किसी तरह का भाषण देने के योग्य नहीं थे। शोधपत्रों की परिचर्चा पर भी वे अस्वस्थ होने के कारण भाग नहीं ले पाए। मैंने परिसंवाद में 'मनु और हिमाचल का माहणु' शीर्षक से पत्र पढ़ा था। सौभाग्य से परिसंवाद के समापन समारोह के अवसर पर उन्होंने भाग लिया।

ठाकुर जी मनाली के मनु महाराज के मंदिर परिसर को श्रद्धा केन्द्र के रूप में परम्परा के अनुसार बचाए रखते हुए, इसके समीप अध्ययन केन्द्र के रूप में वे यहां मनु धाम की स्थापना करना चाहते थे। जहां अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त मनु महाराज की चालीस फुट ऊंची मूर्ति और मनु की नौका बनाने का विचार कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने स्थानीय प्रतिष्ठित महानुभावों की एक उपसमिति का गठन भी किया था और सम्भवत: कुछ भूमि की व्यवस्था भी हो चुकी थी। आशा है कि उनकी इस योजना का काम पूरा होगा।

वे इतिहास लेखन के लिए सामग्री संकलन पर बहुत जोर देते थे। वे कहते थे कि आवश्यकता केवल संकलन और संग्रहण की है। इसके लिए जो प्रपत्र स्व. ठाकुर रामसिंह के मार्गदर्शन में तैयार हुआ है, वह अपने आप में पूर्ण और उपयुक्त है। स्व. ठाकुर के मन मस्तिष्क में इस कार्य संयोजन का पूरा खाका तैयार था। उनके आसामायिक निधन से यह महत्त्वपूर्ण विषय क्या स्वरूप लेता है, यह समय ही बता सकता है।

संघ के पास विद्वानों की कमी नहीं है। उनके पास इतिहासवेता हैं। देखना मात्र यह है कि स्व. ठाकुर जैसा कृत संकल्प, समर्पित और सत्यनिष्ठ होकर कौन विद्वान् इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के लिए आगे आएगा।

राष्ट्र के प्रति समर्पित योद्धा

निरत सिंह
गांव व डा. दियार
जिला कुल्लू, हि.प्र.

स्व. ठाकुर रामसिंह जी के अंतिम दर्शनों का मौका मुझे भी मिला। पिछले चार सालों से जब मैं इतिहास संकलन समिति कुल्लू से जुड़ा तो मुझे दो बार नेरी शोध संस्थान जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ठाकुर जी मेरे जैसे नये व्यक्ति से भी पूरी गर्मजोशी से मिले। मैं उनके इस आत्मीय भाव से भाव-भिवोर हो गया था। मैं उन्हें साहसिक एवं अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित योद्धा के तौर पर देखता हूँ। उनकी यादाश्त का मैं कायल हूँ। इतनी अधिक आयु होने पर भी वे हर छोटी बड़ी घटनाओं को याद रखते थे। ऐसे पुरुष कभी-कभी ही इस धरा पर जन्म लेते हैं।

इतिहास लिखना सिखाया

देवेन्द्र पाल
11/120, सिनेमा रोड़ बटाला
पंजाब – 143505

श्री देवदत्त शर्मा जब १९४७ से १९६२ तक गुरदासपुर जिला के प्रचारक थे तब उनसे एक बार पूछा था कि आप कैसे और कब संघ के प्रचारक बने थे। उन्होंने बताया कि १९४२ में उन्होंने बीए पास की थी तब अमृतसर में ठाकुर रामसिंह जी संघ प्रचारक थे और वे ठाकुर रामसिंह जी के कारण ही संघ के स्वयंसेवक बने थे। ठाकुर जी प्राय: घर में आते-जाते रहते थे।

श्री देवदत्त जी ने आगे बताया कि उनके पिता पं. जगन्नाथ अमृतसर के जलियांवाला बाग क्षेत्र के थानेदार थे। पिता जी के सुझाव पर मैंने डीएसपी की पोस्ट पर नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र भेज दिया और मुझे इन्टरव्यू के लिए बुला लिया गया और मैं इंटरव्यू देने गया। वहां इंटरव्यू लेने वाले अधिकारी ने प्रश्न किया कि यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी बहन से अभद्र व्यवहार करे तो आप क्या करेंगे। मैंने प्रश्नकर्त्ता अधिकारी के गाल पर एक जोरदार चांटा मारा और मैं इंटरव्यू स्थल से बाहर आ गया। अगले दिन मुझे पता चला कि मैं डीएसपी के पद के लिए स्लैक्ट कर लिया गया हूँ और मेरा नियुक्ति पत्र मेरे घर आ गया और मुझे ड्यूटी पर हाजिर होने को कहा गया था।

मैं अपने घर में डीएसपी की पोस्ट पर हाजिर होने की तैयारी कर रहा था। उसी समय ठाकुर रामसिंह जी मेरे घर में आ गये और पूछने लगे कि कहां जाने की तैयारी कर रहे हो। मैंने उन्हें बताया कि मैं अंग्रेज पुलिस में डीएसपी के पद पर सिलैक्ट कर लिया गया हूँ।

तभी ठाकुर जी ने कहा कि जिन अंग्रेजों से हम देश को आजाद कराना चाहते हैं, तुम उन्हीं की नौकरी करने जा रहे हो। मैं तो तुम्हें संघ का प्रचारक बनाना चाहता था और तू क्या करने जा रहा है। उन्होंने मुझे बड़े प्रेम और स्नेह के साथ समझाया। उसी समय संघ का प्रचारक बनाकर घर से भाग जाने को कहा। तब मैं उन्हीं के आदेश पर पहले लाहौर में संघ कार्यालय गया और वहीं से मुझे मिंटगुमरी के क्षेत्र में संघ का प्रचार करने भेज दिया गया।

मेरे घर से भागकर संघ प्रचारक बन जाने पर मेरे घर के सभी लोग बहुत चिंतित हो उठे। मेरे पिताजी ठाकुर राम सिंह जी को ढूंढने अमृतसर संघ कार्यालय में आये। वहां उन्हें न मैं मिला न ठाकुर जी मिले। मेरे पिताजी क्रोध में घर वापिस लौट गये। उन दिनों देश को स्वतन्त्र कराने के लिए नवयुवकों, खास कर संघ के स्वयंसेवकों में देश प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। ठाकुर जी अमृतसर के युवा स्वयंसेवकों के समय की मांग को ध्यान में रखकर अधिक से अधिक संख्या में संघ प्रचारक बन जाने की प्रेरणा दे रहे थे।

उन्हीं की देश प्रेम की भावना के कारण तब के युवा स्वयंसेवक श्री देवदत्त शर्मा जी अंग्रेज सरकार की मिली हुई, डीएसपी की नौकरी को ठोकर मारकर देश और धर्म की

रक्षा करने की खातिर संघ के प्रचारक रहे उसके बाद वे पंजाब भारतीय जन संघ के प्रदेश संगठन मन्त्री और फिर वे विश्व हिन्दू परिषद् पंजाब के संगठन मन्त्री रहे। श्री देवदत्त शर्मा की १३/०२/१९९४ को अमृतसर में हृदय गति रुक जाने के कारण मृत्यु हुई है। वे जीवन भर ठाकुर जी की प्रेरणा से संघ कार्य करते रहे थे।

सन् १९९४ में ठाकुर राम सिंह जी बटाला, गुरदासपुर जिला की इतिहास संकलन समिति का गठन करने आये थे। मैंने इतिहास में रुचि लेने वाले लगभग ४०-६० लोगों की एक बैठक आदर्श विद्या मन्दिर में आयोजित कर रखी थी। इस बैठक को ठाकुर राम सिंह जी ने सम्बोधित करते हुए वर्तमान में स्कूलों-कॉलेजों में पढ़ाये जाने वाले विकृत इतिहास की जानकारी दी। फिर उन्होंने एक समिति का गठन किया जिसमें श्री पुनीत सिब्बल को बटाला नगर का प्रधान व श्री सर्वदमन सुन्दर को बटाला का मन्त्री घोषित किया और मुझे जिला गुरदासपुर की समिति गठन करने के लिए संयोजक घोषित कर दिया गया था। बैठक में ठाकुर राम सिंह जी ने बटाला नगर तथा जिला गुरदासपुर के इतिहास बारे जानकारी मांगी, लेकिन उन्हें ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली। तब मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि बटाला तहसील और गुरदासपुर जिला का सारा इतिहास, मैं संकलित करूँगा। तब से आज तक मैंने अनेक ऐतिहासिक पुस्तकों, सरकारी गजटों तथा ऐतिहासिक स्थलों पर जाकर इतिहास संकलन किया है।

अब मेरे पास लगभग २०० पृष्ठों का इतिहास संकलित हो गया है जो मेरे द्वारा अनेक समाचार पत्रों में समय-समय पर छपवाकर प्रसारित किया जा रहा है। बटाला की महारानी सदाकौर जो महाराजा रणजीत सिंह की सास मां थी, बटाला में सन् १७९० से १८३२ तक राज कर चुकी है। उनकी वीर गाथा दैनिक जागरण समाचार पत्र में नौ किश्तों में छप चुकी है। अकाली पत्रिका में, गुरु नानक देव जी के विवाह पर्व से सम्बन्धित गुरुद्वारा कन्ध साहिब का इतिहास प्रकाशित हो चुका है। बटाला के इतिहास बारे नगर की किसी भी संस्था को कोई जानकारी चाहिए, वह जानकारी लेने मेरे पास आया करते हैं। नगर कौंसिल बटाला की प्रधान को बटाला नगर तथा उसके बारह दरवाजों का इतिहास चाहिए था, वह मैंने उन्हें उपलब्ध करवाया था जो मेरे नाम के साथ दैनिक जागरण में छप चुका है।

बटाला में इतिहास संकलन समिति के मन्त्री सर्वदमन सुन्दर एक साप्ताहिक पत्रिका, ''सम्यावलोकन'' छापते हैं उनकी उस पत्रिका में बटाला नगर के इतिहास बारे ''मेरा शहर बटाला'' कालम के नीचे तीन वर्ष तक बटाला का इतिहास लगातार, किश्त-दर-किश्त छप चुका है, जिसे बटाला की जनता ने बहुत पसन्द किया है।

बटाला के इतिहास को संजोते हुए अब मैं बटाला नगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा का इतिहास १९४२ से अब तक संकलित कर चुका हूँ। जो काफी प्रेरणादायी जानकारियों से भरा है। यह सारा कार्य मैं ठाकुर राम सिंह जी की प्रेरणा से कर रहा हूँ। यदि समय रहते उन्होंने इतिहास बारे जानकारी न दी होती तो आज बटाला के प्रेरणादायी इतिहास का संकलन न हो पाता। यह सब ठाकुर रामसिंह जी की कृपा है कि उन्होंने मुझे इतिहास लिखना सिखाया।

प्रत्येक कार्य पर दृष्टि

घनश्याम माथुर
42, शिवराम कालोनी, जगतपुरा,
जयपुर (राजस्थान)–302025

दिनांक : ६/९/२०१० को दिल्ली से एक एस. एम. एस. श्री धीरेन्द्र जी का भेजा हुआ मुझे मिला।

''माननीय ठाकुर रामसिंह जी आज सायं सात बजे स्वर्ग सिधार गए हैं। अन्त्येष्टि कल शाम चार बजे हिमाचल के जिला हमीरपुर, गांव झण्डवीं में होना है।

दिनांक १२/०९/२०१० को धीरेन्द्र जी का भेजा हुआ एक और एम. एम. एस. मिला।

''माननीय ठाकुर रामसिंह जी का श्रद्धांजलि प्रोग्राम १७/०९/१०१० को सायं झण्डेवाला में होगा। हमीरपुर (एच.पी.) में १९/०९/२०१० को दोपहर एक बजे होगा।''

झण्डेवाला कार्यक्रम में पुष्पांजलि समर्पित करने वालों में माननीय सर्व श्री बलराम जी मधोक, केदारनाथ जी साहनी, भाई महावीर जैसे उच्च कोटि के कार्यकर्ता पंक्ति में थे। इससे स्पष्ट है कि ठाकुर साहब का समाज को कितना बड़ा योगदान था।

सन् १९५९ ई. में अ.भा. विद्यार्थी परिषद् का एक सम्मेलन उदयपुर में हुआ था। मधोक जी को मैंने सर्वप्रथम उदयपुर में ही देखा था। अपने उद्‌बोधन में भारत विभाजन की घटनाओं को बताते हुए विद्यार्थियों को क्या करना चाहिए? बताया था।

सन् १९६० में सालवान स्कूल, नई दिल्ली में आयोजित ओ.टी.सी. में मेरा प्रथम वर्ष शिक्षण हुआ था। इस शिक्षण के दौरान प्रतिदिन भोजन के बाद स्व. बाबा साहब आपटे एक ऐतिहासिक घटनाक्रम सुनाया करते थे। इन ऐतिहासिक कहानियों का मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा।

सन् १९५९ में राजस्थान विश्वविद्यालय से मैंने इतिहास में एम.ए. किया था। मधोक जी के भाषण और आपटे साहब की कहानियों ने मुझे इतिहास के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इससे पूर्व मैं जब जोधपुर में श्री उम्मेद स्कूल में था, वहां एक अध्यापक कश्मीरी पंडित हुक्कु साहब पढ़ाते थे। वे अक्सर यह कहा करते थे कि स्कूलों में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह केवल पास होने के लिए है, लेकिन वास्तविक इतिहास दूसरा है। यह दूसरा क्या है? प्रश्न चिन्ह मेरे सामने उस समय से ही उभर कर आ गया।

सन् १९६० में राजस्थान सरकार ने राजस्थान का प्रारम्भ से देश की आजादी तक का इतिहास लिखने की एक योजना बनाई। इसमें आठ युवाओं को नियुक्त किया गया। इनमें से मैं भी एक था। इस प्रकार यहीं से मेरी विधिवत् शोध यात्रा प्रारम्भ हुई। इस कार्य को करते हुए मुझे अनेक हस्तलिखित ग्रंथालयों, पुस्तकालयों में बैठकर कार्य करने

का अवसर मिला। शोध संस्थानों में गया। कांफ्रेंसों में भाग लिया, पेपर पढ़े। भारत के मूर्धन्य इतिहासकारों से मिलने और सीखने का सौभाग्य मिला।

ई. सन् १९८० में इतिहास संकलन योजना का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस योजना से मेरा जुड़ाव होना स्वाभाविक था। इतिहास का जहां भी शोध कार्य होता, उसमें भाग लेने का स्वभाव बना लिया। स्व. पिंगले साहब का राजस्थान में बराबर आना-जाना रहता था। इस संबंध की बैठकें वे लिया करते थे।

जब अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना का दायित्व श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह के पास आया तो उनसे सम्पर्क हुआ। ठाकुर साहब के साथ ज्यों-ज्यों सम्पर्क बढ़ा, निकटता आती गई। उन्होंने स्वयं लाहौर विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में इतिहास विषय से एम.ए. किया था। इस क्षेत्र में मेरे द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बराबर पूछते रहते थे। हमारी निकटता की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी यह थी कि मैं मूल दस्तावेजों पर कार्य करता हूँ, फील्ड में घूमता हूँ।

दिसम्बर १९९१ में इतिहास संकलन योजना का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन उज्जैन में हुआ। 'हाडौती की कला और संस्कृति का वैभव' नामक प्रदर्शनी को इस अवसर पर मैंने लगाया। यहां १८७ फोटोग्राफ और चार्ट, शुतरमुर्ग के अण्डे के टुकड़े के अतिरिक्त एक लाख वर्ष से भी अधिक समय के अनेक पत्थरों को भी रखा गया तथा उनका उपयोग भी बताया गया। इस प्रदर्शनी को जब जयपुर में दिखाया गया था, उस अवसर पर मंच पर राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा और पद्मश्री स्व. श्री. वि. वाकणकर साहब तथा राजस्थान सरकार के एडवोकेट जनरल नाथूलाल जैन विराजमान थे। उज्जैन के प्रबुद्ध नागरिकों, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, छात्र और पुरातत्वविदों ने इसे देखा।

ठाकुर साहब ने इस प्रदर्शनी को देख कर कहा कि भारत के हर जिले और प्रदेश की इस प्रकार से प्रदर्शनियां तैयार की जा सकें तो एक बहुत बड़ा कार्य हो सकता है। मेरे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य पर उनकी दृष्टि रहती थी। इन कार्यों से ही मुझे सदैव उनकी शृंखला में एक कड़ी के रूप में रहने का अवसर मिला।

शोध संस्थान नेरी के साथ जुड़ाव

दिनांक ४ अप्रैल, २००९ में नेरी के संस्थान में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मुझे भी इसमें उपस्थित रहने का अवसर मिला। इस कार्यक्रम के कुछ दिनों पूर्व ही २३ मार्च को मेरी पुस्तक ''शिवाजी की आगरा यात्रा'' रिलीज हो चुकी थी। इस पुस्तक को देखकर ठाकुर साहब ने कहा कि शिवाजी का दस्तावेजों के आधार पर बाहर निकलना, बड़ी बेगम जहांनारा, वजीर जफर खाँ तथा अन्य बड़े पदाधिकारियों ने जिस ढंग से शिवाजी को मदद की, उससे न केवल तथ्य बदले हैं बल्कि समाज को एक नई दिशा मिली है।

कार्यक्रम के बाद मैं कुछ दिन नेरी में रहा। इस प्रवास में उन्होंने मुझे कहा कि

तुम इस संस्था के साथ जुड़कर अपना योगदान करो। मैंने इसे ठाकुर साहब की प्रसादी के रूप में स्वीकार किया।

इसके बाद झण्डेवाला में ठाकुर साहब के साथ अनेक बार विचार-विमर्श हुआ। भारत सरकार की नेशनल रजिस्टर तैयार करने की एक योजना बहुत पहले बनी थी। इसमें घर-घर जाकर ऐतिहासिक सामग्री, पुरातात्विक स्थलों व अनेक तथ्यों का सर्वे करवाया गया। कोई अपनी सामग्री देना चाहे तो उसकी व्यवस्था भी थी। चाहे वह दान करे या शुल्क ले, जो अपने पास रखना चाहे उसके लिए सामग्री की सुरक्षा, व्यवस्था तथा मुरम्मत करवाने के लिए केन्द्रीय सरकार ने प्रावधान रखा था। इस योजना के अन्तर्गत कार्य करने का मुझे भी मौका मिला था। इससे समाज के घरों पर जाने के अनेक प्रकार के एक से एक बढ़कर अनुभव प्राप्त हुए। ठाकुर साहब ने कहा कि तुम्हारे इन अनुभवों के आधार पर सर्वे कार्य की शुरूआत करो। हमारी संस्था हमीरपुर जिले में है अत: हमको सबसे पहले हमीरपुर से ही कार्य का श्रीगणेश करना था।

अप्रैल, २०१० में एक कार्यक्रम ठाकुर साहब ने नेरी में आयोजित किया था। मैं भी इस निमित्त नेरी पहुंच गया। दिनांक १८ अप्रैल को हमीरपुर के टाऊन हाल में त्रिगर्त अभ्युदय परिषद् द्वारा एक विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। विषय था – देश की सुरक्षा और हमारी विदेश नीति। कार्यक्रम में दो प्रमुख वक्ता थे। देश की सुरक्षा में हमने अब तक कितनी ऐतिहासिक भूलें की हैं। इस पर विस्तार से ठाकुर साहब ने तथ्यों को सबके सामने रखा। केन्द्रीय सरकारों ने सुरक्षा के लिए कितना खिलवाड़ किया। इस दृष्टि से देश और विदेश के अनुभवों के आधार पर प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर मेरे द्वारा लिखी गई ''शिवाजी और उनकी आगरा यात्रा'' पुस्तक मुख्यमंत्री जी को भेंट की गई।

दिनांक १९ अप्रैल, २०१० से सर्वे के कार्य का श्रीगणेश संस्थान से ढाई किलोमीटर पर स्थित झन्यारी माता के मन्दिर से किया। उसके बाद हमीरपुर जिला के जसकोट, लुदर (रुद्र) महादेव, गासियां, मारकण्डा, गसोता महादेव, परोल, जाहू आदि स्थलों का सर्वेक्षण कर के महत्त्वपूर्ण जानकारियां संकलित की हैं। ६ सितम्बर, २०१० को ठाकुर जी का साया भौतिक रूप से हम पर नहीं रहा, लेकिन उनकी प्रेरणाएं हमें कार्य को आगे बढ़ाने में हमें सामर्थ्य प्रदान करती रहेंगी।

१० सितम्बर, २०१० को ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान, नेरी में ठाकुर जी के प्रति श्रद्धांजलि का कार्यक्रम हुआ। जहां आस-पास के गांवों से एक बड़ी संख्या में लोग आए। वहीं भारत के विभिन्न क्षेत्रों से लोग पहुंचे। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल साहब और संस्था के अध्यक्ष पुरी जी भी सम्मिलित थे। अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए लगभग अढ़ाई हजार से भी अधिक लोग उपस्थित हुए। आने वाले सभी लोगों के लिए भोजन व्यवस्था थी। मुख्यमंत्री से लेकर एक सामान्य व्यक्ति तक की यहां पर उपस्थिति। यह दृश्य सदैव अमिट रहेगा।

अदम्य साहस और काम की लग्न

हीरा लाल कंधारी
20 ई., रानी का बाग
अमृतसर – 143001

सरलता, सहृदयता, स्पष्टवादिता, विद्वता, त्याग और समर्पण का मूर्त रूप थे हमारे ठाकुर राम सिंह जी। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं हो सकता, जो कि ठाकुर जी के सम्पर्क में आया हो और उनके इन गुणों से प्रभावित न हुआ हो। भारतीय इतिहास संकलन समिति की अमृतसर इकाई के एक पदाधिकारी के रूप में, पंजाब शौर्य स्मृति संकलन समिति के अध्यक्ष तथा बाबा साहब आपटे स्मारक समिति, पंजाब के महामन्त्री के नाते मेरा उन से अक्सर मिलना होता था। वह जब भी अमृतसर आते, तो संघ कार्यालय में ठहरते थे और संयोगवश मेरा घर पास ही होने के कारण मेरा उन से अवश्य ही मेल हो जाता था। यदि कभी मुझे उनके अमृतसर पधारने की सूचना नहीं भी होती थी, तो कार्यालय से मुझे फोन आ जाता था कि ठाकुर जी आए हुए हैं और मुझे याद कर रहे हैं।

ठाकुर जी के साथ बिताए अपने समय के अनुभव यदि लिखने लगे, तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है। किन्तु दो घटनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। एक बार मैं ठाकुर जी को रात्रि भोजन करवाने अपने घर ले गया। भोजन के समय ठाकुर जी, मैं तथा मेरी पत्नी के अतिरिक्त और कोई नहीं था। भोजन के पश्चात् ठाकुर जी बातें सुनाते गए और हम मन्त्रमुग्ध होकर सुनते गए। एक महत्त्वपूर्ण बात जो ठाकुर जी ने बताई, वह यह थी कि जब जनसंघ का विलय जनता पार्टी में हो गया तो जनता पार्टी में कुछ लोगों ने यह बवाल खड़ा कर दिया कि जो लोग जनता पार्टी के सदस्य हैं, उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से नाता तोड़ना होगा। क्योंकि दोहरी सदस्यता की आज्ञा नहीं दी जा सकती। जनसंघ के कुछ नेता यह चाहते थे कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता त्याग दें। ताकि उनकी कुर्सी बच जाए। ठाकुर जी तथा कुछ अन्य लोगों ने संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में इस सुझाव का डटकर विरोध किया और उन कुर्सी प्रेमी नेताओं की चाल न चल सकी।

दूसरी घटना २००७ में नेरी की है। ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान में सृष्टि रचना पर एक गोष्ठी करवाई गई। मैं भी उस में भाग लेने के लिए वहां गया। दुर्भाग्य से हमारे वहां पहुंचने के पश्चात् जोरदार वर्षा हुई और भूस्खलन के कारण रास्ते बन्द हो गए और हमें भी वहां रुकना पड़ गया। जिस दिन हम अमृतसर वापिस आने वाले थे, हम

ठाकुर जी से मिले, तो उन्होंने कहा कि मैं कल हमीरपुर जाऊँगा। मैं मनाली से सड़क के रास्ते वहां जाऊँगा। क्योंकि मुझे कैमरे से रास्ते के चित्र भी लेने हैं, वहां के पर्वत कैसे हैं? इसके अतिरिक्त सिन्धु नदी का तिब्बत से आने वाला रास्ता भी देखना है। मैं एक दम दंग रह गया कि ९० वर्ष से भी अधिक की आयु में भी उन में कितना उत्साह तथा देश और समाज के प्रति समर्पण की भावना है। उनके इस जोश को देखकर हमारे अन्दर एक हीनता की भावना आने लगी कि हम छोटी-छोटी बाधाओं से डर जाते हैं और ९४ वर्ष के इस युवक को देखो जो कि बड़ी-बड़ी बाधाओं को आमन्त्रित कर रहा है। कितना अदम्य साहस तथा काम की लग्न थी उनमें।

अपनापन और कार्य के प्रति समर्पण

दानवेन्द्र सिंह
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास संकलन समिति,
कुल्लू

मैं लगभग डेढ़ दशक से उनके सम्पर्क में रहा। उनके सान्निध्य में कई बातें सीखीं। आज जो कुछ भी हूँ उनके आशीर्वाद से हूँ। वे अपने मिलने वालों को चाय नाश्ता करवाना कभी नहीं भूलते थे। एक बार मैं उनसे मिलने झण्डेवाला गया था और उनसे मिलने का पहले से ही समय तय किया हुआ था। मैं जब वहां पहुंचा तो वे मेरा ही इन्तज़ार कर रहे थे। मेरे लिए पहले से ही चाय नाश्ता मंगा रखा था। उन्होंने मिलते ही सबसे पहले मुझे बड़े प्यार से नाश्ता करवाया। जब मैंने बर्तन धोने के लिए उठाए तो उन्होंने एकदम मना कर दिया। जब संसद भवन पर आक्रमण हुआ था तो मैं उस समय उनके पास बैठा था। जब संसद पर आक्रमण की खबर पता चली तो ठाकुर जी ने तुरन्त यह कहा कि सरकार की नाकामी है। सरकार को सख्ती से उग्रवादियों के साथ निपटना चाहिए।

उनमें हमेशा अपनापन दिखता था। घर में सबका हालचाल पूछते थे। जब भी मिले खाने के लिए ज़रूर आग्रह करते थे। मई, २००२ में कुल्लू में राष्ट्रीय परिसंवाद के दौरान जब वे बहुत बीमार हुए थे, तो उस बीमारी की हालत में भी परिसंवाद की बात करते थे। ऐसा उनका कार्य के प्रति अनूठा समर्पण था।

ठाकुर जी के □□ दुर्लभ पत्र

कुंज बिहारी जालान
अध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास शोध संस्थान
गुदड़ी रोड़ा, सीतामढ़ी, बिहार

मा. ठाकुर जी के बाद सब कुछ सूना-सूना लग रहा था। आशा है आप लोग उसकी पूर्ति करेंगे। दि. २२/०९/१० को आपसे फोन पर बात हुई। आपके आदेशानुसार मैं उनका एक प्रथम पत्र भेज रहा हूँ जो शोधकर्ता एवं इतिहास लेखन से जुड़े लोगों को निरन्तर प्रेरणा देता रहेगा। उनके प्रत्येक पत्र मेरे लिये प्रेरणा का कार्य करते रहे हैं। प्रथम २६ मई १९९२ को उन्होंने मुझे लिखा था, उसकी प्रेस कॉपी मेरे पास सुरक्षित है। इसे मैंने अपनी पुस्तक 'हमारा इतिहास ब्रह्मा से श्री हर्ष' में प्रकाशित करवा दिया था। उन्हीं के साथ श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, स्व. श्री के.के. बिरला जी, स्व. डॉ. डी. एस. त्रिवेदी, वाराणसी, इतिहासकार के भी पत्र उसी पुस्तक में हैं। मा. ठाकुर जी इसे २००९ को अपने साथ नेरी ले गये थे। उनका अंतिम पत्र १९ फरवरी २००९ का है जो उन्होंने नेरी से लिखा था। जिसमें उन्होंने श्री वाकणकर राष्ट्रीय पुरस्कार मुझे देने की बात लिखी थी। उसके पश्चात् तो बराबर दूरभाष से ही बातें होती रही हैं। मेरे पास तत्कालीन उनके ९३ पत्र हैं। ये पत्र मेरे लिए ही नहीं अपितु भारतीय इतिहास के सही दृष्टिकोण को जानने की इच्छा रखने वालों के लिए मील का पत्थर साबित होंगे। मैं आज भी इन पत्रों के एक-एक शब्द के अर्थ और दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता हूँ।

किसान होने का गर्व

वीर सेन ठाकुर
गांव टीकरी गुराला,
हमीरपुर, हि.प्र.

श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी के साथ हमारे पारिवारिक सम्बन्ध थे। उनका ननिहाल हमारे घर में था। उन्हें हम ताऊ जी कह कर सम्बोधित करते थे और उनकी माता जी को दादी जी कहते थे। उनके घर पर हमारा आना-जाना हमेशा बना रहता था। एक बार ताऊ जी घर पर आए थे। रात्रि भोजन के उपरान्त दादी जी ने ताऊ जी से कहा कि तुम किसान के बेटे हो। किसान होने का हमें गर्व होना चाहिए, लेकिन तुम्हारी कृषि कर्म की बेरुखी ठीक नहीं है। उस समय ताऊ जी कुछ नहीं बोले। वे अगली सुबह कुछ खाए बिना घर से निकल गए। दादी जी ने सोचा कहीं मिलने-जुलने गए होंगे। वे ११.०० बजे तक घर नहीं लौटे। वैशाख (अप्रैल) का महीना था। इस मास में ११.०० बजे तक धूप तेज होनी शुरू हो जाती है। दादी जी चिन्तित हो कर खेतों की ओर गईं तो हैरान हो गईं। ताऊ जी तब तक आधे से ज्यादा गेहूं के खेत की कटाई कर चुके थे। कड़कती धूम में पसीना-पसीना थे, परन्तु गेहूं की कटाई के काम में लगातार जुटे हुए थे। दादी जी ने उन्हें भोजन के लिए घर चलने को कहा और कहा कि मुझे विश्वास नहीं था कि तुम इतनी मेहनत से एक किसान की तरह काम कर सकते हो। ताऊ जी बोले, मां! अब तो आप को विश्वास हो गया होगा कि मुझे किसान होने का गर्व है। दादी ने कहा, हां! हां! पक्का विश्वास हो गया और दादी उन्हें भोजन के लिए घर ले आईं। इस प्रकार किसान के रूप में भी पहचान थी ताऊ जी (श्रद्धेय ठाकुर राम सिंह जी) की।

इतिहास की प्रतिमूर्ति

त्रिलोकी नाथ पण्डित 'वानप्रस्थी'
उपाध्यक्ष
इतिहास संकलन योजना, जम्मू-कश्मीर

इतिहास संकलन समिति के साथ मेरा सम्बन्ध १९८७ ई में जुड़ गया जब हम कश्मीर में ही रहते थे और तत्कालीन कश्मीर विभाग के प्रचारक की प्रेरणा से वहां एक विभाग स्तर की समिति का गठन किया गया। मुझे इस समिति का उपाध्यक्ष बनाया गया। गोष्ठियों में ठाकुर जी का नाम आना स्वभाविक ही था। इस प्रकार हम इस नाम से वहां परिचित हुए। फिर १९९० में जब सम्पूर्ण कश्मीरी पण्डित समाज को इस्लामी आतंकवाद द्वारा विस्थापित जीवन जीने पर विवश किया गया तो जम्मू में आकर हम कुछ समय के उपरान्त फिर से कार्यरत हो गए। १९९३-९४ में मुझे भी संघ के कार्यक्रम में दिल्ली जाना पड़ा। तीन दिवसीय कार्यक्रम में हमारे रात्रि विश्राम का प्रबन्ध संघ कार्यालय में किया गया था। दस बजे रात को मुझे पता चला कि ठा. राम सिंह जी इसी कार्यालय के एक कक्ष में विराजमान हैं। मैं एक साथी के साथ उनके दर्शन करने चला गया। वहां पहुंच कर देखा कि एक प्रौढ़ व्यक्ति कुछ लोगों के साथ बातें कर रहा है। परन्त बोल-चाल से सतर्क और मृदुभाषी युवक सी उनकी झलक लग रही थी। मैंने प्रणाम करके अपना परिचय दिया और बैठ गया। जब दूसरे लोग चले गए तो उन्होंने मुझे पास बुलाकर पूरा हाल पूछा। व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं के विषय में भी और संघ कार्य के विषय में भी। फिर ११ बजे विश्राम करने के लिए कहा और यह भी आग्रह पूर्वक कहा कि जितने दिन यहां रहो, प्रतिदिन मुझसे आकर अवश्य मिलना। मैं अपने कक्ष मे चला गया और सो गया। कुछ देर बाद मुझे लगा कि कोई व्यक्ति मेरे ऊपर एक और चद्दर डाल रहा है। मैं थोड़ा ऊपर उठा तो क्या देखा कि ठाकुर जी स्वयं मेरे बिस्तर का निरीक्षण कर रहे हैं। मैं हैरान हुआ कि इस अवस्था में भी वे आगन्तुक कार्यकर्ताओं का कितना ख्याल रखते हैं।

तीनों दिन समय मिलने पर मैं उनसे मिलने जाता रहा और बातों-बातों में संघ और इतिहास संकलन योजना के विषय की सारी जानकारी मुझे उन्हीं से मिली। उनसे बातें करते हुए मुझे यूं लगा कि मानो वे भारतीय इतिहास की प्रतिमूर्ति हों।

स्नेहमयी अमृतवर्षा

कमलाश्रीमाली
पूर्व प्रदेश प्रतिनिधि भाजपा, राजस्थान

ठाकुर जी के आग्रह पर मैं वैवस्वत मन्वन्तर में सृष्टि रचना विषय पर आयोजित गोष्ठी में वाचन हेतु मनाली आई थी। वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि ठाकुर जी को कफ-आदि का भयंकर संक्रमण हो गया है। किसी को उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी पर मेरा मन मचल उठा। मेरे आग्रह पर मा. चेतराम जी ने कुछ सोचकर मिलने की अनुमति दे दी। हम दोनों पति-पत्नी उनसे मिलने पहुंचे। उन्हें बोलने में कठिनाई हो रही थी पर वे बोले और उनके नेत्रों से स्नेह वर्षा हो रही थी। उस स्नेहमयी अमृत वर्षा से आज भी मेरा मन प्रफुल्लित हो जाता है।

भारतीय इतिहास और कालगणना के मर्मज्ञ

छेरिंग दोरजे
उपाध्यक्ष,
भारतीय इतिहास संकलन समिति, हि.प्र.

मेरा परिचय वयोवृद्ध स्वयंसेवक तथा महान इतिहासकार माननीय ठाकुर जी से वर्ष २००० ई. में नई दिल्ली स्थित संघ के मुख्यालय ''केशवकुंज'' झण्डेवाला में हुआ था। मेरी स्वर्गीय चमन लाल जी ने यह कहकर ठाकुर रामसिंह जी से भेंट करवाई कि आप हिमाचल की जनजातीय समुदाय से सम्बन्धित इतिहास लेखन में सहयोग देंगे।

तब से लेकर भारतीय इतिहास संकलन की योजना के कार्य में ठाकुर जी के आदेशानुसार हिमाचल प्रदेश के जनजातीय देवी-देवताओं पर कलियुगाब्द ५९६० में श्रावण शुक्ल मास की १, २ तथा ३ तिथियों को तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन लाहुल के शाशिन गांव में, जहां लाहुल के अधिष्ठाता देवता राजा घेपऊङ् सद् का प्राचीन ऐतिहासिक मन्दिर है, में किया गया। इस आयोजन में लाहुल-स्पिति और किन्नौर के जनजातीय क्षेत्र के विद्वानों के अतिरिक्त कुल्लू और शिमला के विद्वान जनों ने भी उपस्थिति दी। इस आयोजन ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का रूप ले लिया, जब नेपाल, तिब्बत और जापान के विद्वानों ने भी इसमें भाग लिया।

आयोजन के उद्घाटन के दिन तीन सौ से अधिक लोग शामिल हुए। मान्यवर ठाकुर जी आयोजन की सफलता पर बहुत प्रसन्न हुए थे और कहा कि इस प्रकार के आयोजन जनजातीय संस्कृति पर आगे भी होने चाहिए। उस संगोष्ठी से सम्बन्धित प्रपत्रों का संकलन हो चुका है। जिसे आगामी दिनों में पुस्तकों में प्रकाशित किया जाएगा।

इसके अतिरिक्त कई बार इतिहास से सम्बन्धित गोष्ठियों और बैठकों में हिमाचल प्रदेश के अन्य स्थानों और ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी (हमीरपुर) में सम्मिलित होता रहा हूँ। उनके अन्तिम समय के कुछ दिन पूर्व, जब वे कुल्लू में भाजपा जिलाध्यक्ष श्री राम सिंह जी के घर में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे तब उन्होंने कहा कि आप को गुरु पदम्सम्भव, जिन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया था, का जीवनवृत लिखना है। वे हमारे हिमाचल प्रदेश के महान विद्वान आचार्य थे। और रिवालसर (मण्डी) में रहे हैं।

स्वर्गीय ठाकुर जी विलक्षण प्रतिभा के स्वामी, धुन के पक्के व प्राचीन भारतीय इतिहास और कालगणना के मर्मज्ञ विद्वान थे, वे भारत माता के सच्चे सपूत और अपने देश को फिर से विश्व गुरु के गौरवमय पद तक पहुंचाने में तन-मन-धन से प्रयासरत रहते थे। उनकी दृष्टि में विदेशियों द्वारा लिखा गया इतिहास मिथ्या और भ्रम पैदा करने वाला है।

उनकी संयमी तथा विवेकपूर्ण जीवनशैली ने उन्हें शतायु के निकट पहुंचाकर मुक्त किया। नि:संदेह आज ठाकुर जी शारीरिक रूप से हमारे साथ नहीं हैं परन्तु उनकी अमरवाणी (शिक्षा) सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी।

डाँट बनी आपातकाल की सुरक्षा कवच

अविनाश जायसवाल
संगठन मन्त्री
राष्ट्रीय सिक्ख संगत
दिल्ली

२५ जून, १९७५ को इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा पदच्युत की गई तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। घोषणा के साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पं. पू. सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस, तत्कालीन जननायक श्री जयप्रकाश नारायण, सभी राजनैतिक दल, धार्मिक, सामाजिक जागरूक देशभक्त, संगठनों का नेतृत्व कर रहे प्रमुख पदाधिकारी रातों रात बन्दी बनाकर जेल की सींखचों के पीछे डाल दिए गए। संकेत मिलते ही राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के अखिल भारतीय, क्षेत्रीय, प्रान्तीय पदाधिकारियों ने संघ योजनानुसार आपात्काल को चुनौती देने के लिये भूमिगत रहकर सत्याग्रह की घोषणा कर दी।

स्व. पूज्य ठाकुर रामसिंह जी पंजाब प्रांत प्रचारक (पंजाब-जम्मू-कश्मीर-हिमाचल-हरियाणा-दिल्ली प्रदेश) थे। मेरे पास हिमाचल संभाग का प्रचारक के नाते दायित्व था। इस दायित्व से पूर्व शिमला केन्द्र में भारतीय जनसंघ का शिमला विभाग संगठन मन्त्री तथा प्रान्तीय कार्यालय का प्रभार था। उस कार्यकाल में सन् ७१ से ७४ तक प्रदेश की गतिविधियों में जनसंघ का प्रदेश अधिवेशन चम्बा (हि.प्र.) में सम्पन्न हुआ जो कि ऐतिहासिक रूप से बहुत प्रेरक तथा प्रभावी था। उस अधिवेशन में विरोधी दल के नेता कागड़ा से कंवर दुर्गा चन्द और शान्ता कुमार जी, शिमला से श्री दौलत राम चौहान, चम्बा से श्री किशोरी लाल जी, सुन्दरनगर से ठाकुर गंगा सिंह तथा मा. लालकृष्ण जी आडवाणी विशेष रूप से उपस्थित थे।

भारतीय जनसंघ अधिवेशन में हिमाचल प्रदेश पर स्मारिका का विमोचन भी हुआ। उससे पूर्व नालागढ़-पांटवा साहिब में विभागाधिवेशन भी अत्यन्त प्रेरक एवं प्रभावी सिद्ध हुए। स्वाभाविक है कि संगठन मन्त्री के नाते सरकार के गुप्तचर विभाग में सारी जानकारी थी। अत: आपातकाल लगते ही स्व. ठाकुर रामसिंह जी ने संभाग प्रचारक हिमाचल संभाग के नाते मुझे भूमिगत रखने के लिए शिमला से तुरन्त-चौंतड़ा, तहसील जोगिन्दर नगर जिला मण्डी में ठाकुर प्रताप सिंह के घर में गतिविधियों का केन्द्र बना दिया। ठाकुर प्रताप सिंह जी ने अपना सर्वस्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समर्पण किया।

कुछ दिन व्यवस्थित होने के बाद मन में विचार आया कि शिमला के बन्धुओं का कुशल क्षेम लिया जाए। अत: मैं शिमला पहुंच गया। मा. ठाकुर जी भी शिमला में ही थे। वह मिलने के लिए पहुंच गये। मुझे अपने सम्मुख देखते ही अंगार उगलती आंखों से डांट पिलाते हुए उन्होंने कहा कि तुम्हें बिना सूचना के अपना केन्द्र नहीं छोड़ना है। हमें पुलिस के

हाथों नहीं पड़ना है। बाहर रहकर सत्याग्रह विजय प्राप्ति तक चलना है। अत: निवास में प्रवेश न कर तुरन्त अपने केन्द्र चौंतड़ा (सुक्का बाग) पहुंच गया। जिज्ञासावश ठाकुर जी की कठोरता को समझने तथा खोजने के प्रयास में मुझे जानकारी मिली कि शिमला के प्रत्येक होटल एवं सार्वजनिक स्थानों पर भारतीय जनसंघ की चम्बा अधिवेशन में निकली स्मारिका में छपी मेरी फोटो चिपकाई गई थी। वह कापी ठाकुर जी को भी उपलब्ध हो गई थी। इसी कारण ठाकुर जी ने मुझे डाँटा था। ऐसे थे दूरद्रष्टा, जागरूक, कर्तव्यपरायण स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी की उस समय की डांट पूरे आपातकाल में मेरी सुरक्षा कवच बनी रही।

स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह जी कभी प्रभावशाली वाणी, मधुर व्यवहार, मीठी मुस्कान और अपने मिलने वालों का पूरा हालचाल पूछने की उनकी वृत्ति उनके स्वाभाविक गुण अब केवल मात्र स्मृतियां, आज अश्रुधारा बनकर निकल रही है। तथापि भविष्य में यह एक प्रकाशपुंज की तरह हमें प्रेरणा देती रहेगी।

भारतीय इतिहास के शलाका पुरुष

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
प्राचार्य,
श्री व्यास संस्कृत महाविद्यालय कुल्लू

ठाकुर रामसिंह जी के विषय में मेरा व्यापक परिचय तो यद्यपि नहीं रहा है तथापि उनके सम्बन्ध में विद्वानों से सुनकर, पत्रिका के माध्यम से उनके लेख पढ़कर तथा एक बार अपने महाविद्यालय के सभागार में उनके साक्षात् दर्शन करके व उनकी वक्तृता से मैं स्वयं को अत्यन्त कृतार्थ हुआ मानता हूँ।

ठाकुर रामसिंह जी इस वर्तमान युग में एक महान भारतीय विभूति थे, उन्होंने लाहौर से इतिहास विषय में एम.ए. करने के पश्चात् विभाजनोपरान्त भारतवर्ष को ही अपनी साहित्य साधना, देशसेवा व संस्कृति की सेवा साधना को ही अपना जीवनलक्ष्य बना लिया था।

भारतीय संस्कृति के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व पारम्परिक रूप के क्षेत्र में उन्होंने जिस गहनता, तल्लीनता व तत्परता से कार्य किया, वह भारतीय संस्कृति के एक आदर्श सेवक के चरित्र का एक उज्ज्वल अध्याय है।

ठाकुर राम सिंह जी ने भारतीय जनमानस को भारतीय इतिहास के माध्यम से जो अमर संदेश व निर्देश प्रदान किया वह अत्यन्त ऊर्जस्वी व प्रेरक है। आज के विवादग्रस्त भारतीय इतिहास के पतन के युग में ठाकुर रामसिंह जी एक जाज्वल्यमान प्रकाशस्तम्भ की भांति अचल हिमालय बनकर खड़े थे। उनकी जिजीविषा की जन्मजात प्रवृत्ति अत्यन्त प्रेरक थी। ९५ की आयु में भी वे किस प्रकार से देशसेवा के कार्य हेतु अनेक यात्राएं करते थे, आगन्तुक जिज्ञासु विद्वानों का किस प्रकार से मार्गदर्शन करते थे, वह सब एक अद्‌भुत कार्य था।

वस्तुत: वे भारतीय इतिहास के शलाका पुरुष के रुप में अमर हैं। उन्होंने आजीवन अपना दृढ़संकल्प पूर्णरूप से अक्षरश: चरितार्थ करके दिखाया। ऐसी महान विभूति को मेरा कोटिश: वन्दन।

अनूठी अनुशासनप्रियता

सुखलाल टण्डन
मण्डी, हि.प्र.

श्रद्धेय ठाकुर जी से मेरा सम्पर्क सन् १९४३ में हुआ, जब वे कांगड़ा जिला के जिला प्रचारक थे। जिले के प्रवास में मण्डी कुल्लू आते रहते थे। बड़ी कठिन परिस्थितियों में उन्होंने अपने कुशल व्यवहार, लग्न व कर्मठता से इन इलाकों में संघ की शाखाएँ शुरू की। उस समय कहीं भी संघ कार्यालय नहीं हुआ करते थे। स्वयंसेवकों के घरों में ही ठहरने व भोजन की व्यवस्था रहती थी। स्वयंसेवकों के घरवालों से वे घुल-मिल जाते थे। उन्होंने मुझे ओटीसी के लिए प्रेरित किया। सन् १९४७ में संगरूर पंजाब में ओटीसी के पश्चात् मैं प्रचारक निकला और कुल्लू में प्रचारक का दायित्व निभाया। उन्होंने ही मुझे देश प्रेम एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव सिखाया।

एक बार जब मैं शिमला में था, ठाकुर जी उन दिनों वहां प्रवास पर थे। प्रातः जब बर्फबारी हो रही थी। ठाकुर जी निक्कर पहनकर शाखा में आए जबकि उन दिनों उनके घुटनों में दर्द था। स्थानीय स्वयंसेवक पाजामा व पैन्ट पहने हुए शाखा में आते थे। ऐसी अनूठी थी इन की अनुशासनप्रियता। इसी प्रकार के अनुशासन की वे स्वयंसेवकों से अपेक्षा करते थे।

वे भली-भान्ति जानते थे कि किस स्वयंसेवक से कौन सा काम लिया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने बिलासपुर में इतिहास संकलन योजना हिमाचल प्रदेश का गठन करके मुझे प्रदेश का महामन्त्री नियुक्त किया। वह दायित्व मैंने तीन साल तक निभाया। भारत का इतिहास अंग्रेज सरकार ने अपने शासन के दौरान, बुरी तरह विकृत कर दिया था और समाज को स्वाभिमान शून्य करने का प्रयत्न किया था। इस सन्दर्भ में ठाकुर जी बहुत दुःखी रहते थे और समाज के सन्मुख सही इतिहास, आंकड़ों व प्रमाण सहित प्रस्तुत करते थे जिन्हें सुनकर जनता हतप्रभ रह जाती थी।

संघ के कई अधिकारियों व प्रचारक बन्धुओं से मेरा सम्पर्क पिछले लगभग ६० वर्षों से रहा है परन्तु ठाकुर जी जैसी अनुशासनप्रियता, आत्मीयता, कठोर परिश्रम मैंने अन्य में अनुभव नहीं किया। उनके निधन से जो क्षति संघ परिवार को हुई है उसकी भरपाई करना बहुत कठिन है।

आत्मीयता के पुंज

भगतराम शर्मा
110, कान्तीं प्रेस के पास
सरवाल, जम्मू

श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी से मेरा परिचय १४ साल पहले हुआ। इतिहास संकलन समिति की दो तीन बैठकों में ही उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रथम बैठक के पश्चात् भारतीय इतिहास के विषय में मैंने उन्हें बताया कि जब मैं नवमी कक्षा में पढ़ता था तो मैंने निश्चय किया कि मैं अपने जीवन में यह साबित करूँगा कि आर्य भारत के ही मूल निवासी थे।

इसी प्रकार १९५७ के लगभग सोवियत यूनियन के रक्षा मन्त्री जनरल जुकोब भारत आये थे। उन्होंने दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि मैं यहां यह जानकर हैरान हुआ हूँ कि अलैग्जैंण्डर भारत में विजयी हुआ था। मध्य ऐशिया में जनमानस में आम धारणा है कि वह भारत में पराजित हुआ।

इसी प्रकार १९६० के लगभग हिन्दुस्तान टाइम्स के एक सण्डे एडिसन में एक प्रैस रिपोर्ट में छपा था कि नील नदी का मूल स्रोत रिपोर्ट करने में भारतीय पुराणों में वर्णित भौगोलिक तथ्यों से सहायता मिली है।

इसी चर्चा के दौरान ठाकुर जी मुझे इतिहास संकलन समिति (जम्मू-कश्मीर इकाई) का अध्यक्ष पद स्वीकार करने को कहा। मैंने उन्हें कहा कि मैं इतिहास विषय में विषय में एम.ए. नहीं हूँ। परन्तु मैंने उनकी आज्ञा मानकर शिरोधार्य किया। मेरे जीवन में बहुत थोड़े ऐसे महापुरुषों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनका चिरस्थायी प्रभाव मुझ पर पड़ा है। वे आत्मीयता के पुंज थे। भारतीय इतिहास संकलन तथा नव निर्माण की भावना उनके व्यक्तित्व से झलकती थी। इस विषय में इतना समर्पित महापुरुष आज के युग में अत्यन्त दुर्लभ है।

उनका आगामी लक्ष्य मनुधाम था

डॉ. सीता राम ठाकुर
जिला भाषा अधिकारी
कुल्लू, हि.प्र.

डॉ. विद्या चन्द ठाकुर के साथ मुझे समय-समय पर स्व. ठाकुर रामसिंह जी से मिलने का मौका मिला। दो-तीन बार शिमला में उनके उद्‌बोधन भी सुनने को मिले। जिन में सच्चे भारतीय होने का चिन्तन निहित था। ऐसा लगता था कि उन्होंने भारत को गहराई में जाकर देखा है तथा भारत की आत्मा को परखा है। उनके उद्‌बोधन और कथन में यही था कि भारत का इतिहास भारतीय परम्परा अनुसार लिखा जाए तथा भारतीय गौरव के बिन्दुओं को स्थान-स्थान पर जनमानस के सामने रखा जाए जिन से आने वाली पीढ़ी को भ्रमित होने से बचाया जा सके। उनका मानना था कि यदि हम ऐसा नहीं करते है तो भारत के सभी आदर्श काल के ग्रास बन सकते हैं। भारत के प्रामाणिक एवं सत्य इतिहास की आधार भूमि के लिए वे भारत वर्ष के जनमानस में भरी पड़ी लोककथाओं, लोकश्रुतियों, लोकाख्यानों, लोक मान्यताओं, लोक के मेलों, लोक के आचार-व्यवहारों आदि को एकत्रित करने के लिए बल देते थे। कई स्थानों पर यह कार्य उन्होंने करवाया है। उनका मन्तव्य था कि तभी हम भारत की गौरवपूर्ण तस्वीर भावी पीढ़ी के सामने रख सकते हैं। यहीं कारण है कि जिला कुल्लू में मनुधाम की कल्पना भी इसी का एक रूप उनके सामने रहता था, जब भी हम उनसे मिलते थे, तो मनुधाम की चर्चा जरूर करते थे। उन्हें यह भी चिन्तन था कि मूल मनु मन्दिर को न छेड़ा जाए बल्कि मनुधाम को कुल्लू के प्रवेश द्वार पर या मौहल के आस-पास तैयार हो तो वह पूरे कुल्लू के आकर्षणों में एक हो सकता था। परन्तु किसी कारण यह सम्भव नहीं हो पाया। तब उन्होंने मनाली में इसके लिए योजना बनायी। ईश्वर को क्या मंजूर है? यह भविष्य के गर्भ में है। डॉ. विद्या चन्द जी के साथ दिनांक २३/०२/२०१० को आखाड़ा बाजार (कुल्लू) में श्री रामसिंह के घर उनसे मिलने गये। हम उनसे प्रदेश स्तरीय संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में एक उदबोधन चाहते थे। पर बीमारी के कारण उनकी शारीरिक कमजोरी दिखाई दे रही थी। परन्तु उस समय भी उनके सामने मनुधाम की योजना थी। उस हालात में भी डा. विद्याचन्द जी से मनुधाम के सम्बन्ध में चर्चा करते रहे। उनका आगामी लक्ष्य मनुधाम था। इससे लक्षित हो रहा था कि अपने लक्ष्य के सामने उनकी अपनी कमजोरी एवं बीमारी गौण थी।

स्वयंसेवक उठाने की अनूठी युक्ति

वेद प्रकाश
प्रान्त संगठन मन्त्री
हिन्दू जागरण मंच हि.प्र.

परम आदरणीय ठाकुर राम सिंह जी ६ दिसम्बर, २०१० को अन्तिम सांस लेकर इस शरीर को छोड़ कर हम से विदा हो गये। उनका जीवन बड़ा कठोर था। ९६ वर्ष की आयु में भी वे १८ घण्टे प्रतिदिन काम करते रहे। जहां भी ठाकुर जी जाते उस परिवार में अपनी छाप छोड़ जाते थे।

१९८२-८३ में जब मेरा संघ में प्रवेश हुआ तो ठाकुर जी हमारे घर पर एक बैठक में आये थे। तब गांव में शाखा नहीं थी। मुझे संघ का ज्ञान नहीं था। मैंने गांव के लोगों को इकट्ठा किया और उनका परिचय कराया। उन्होंने सभी का मार्गदर्शन किया। फिर रात को बाल स्वयंसेवकों की बैठक हुई। जिसमें उन्होंने मुझे शाखा लगाने बारे जानकारी दी। गट व्यवस्था के बारे में बताया कि शाखा में गट व्यवस्था अगर करोगे तो शाखा स्थाई होगी। शाखा के अन्दर गण व्यवस्था और बाहर गट व्यवस्था होनी चाहिए। शाखा व्यवस्थित करने के लिए इन दोनों को लागू करना होगा। वे स्वयंसेवक चार बजे उठ कर शारीरिक करते थे। व्यायाम व आसन उन के जीवन का अंग था। वे प्रतिदिन सूर्य नमस्कार अवश्य करते थे। एक घण्टा व्यायाम करते थे जिसके कारण उनका शरीर वज्र के समान था। वे सचमुच के लौह पुरुष थे। उनके मार्ग पर चलते हुए कोई बीमार नहीं हो सकता। कठोर परिश्रम करते और सवयंसेवकों को भी कठोर बनाना चाहते थे। वे कहते थे कि प्रतिदिन चार बजे उठो, और शाखा के लिए घर से एक घण्टे पहले चलो। फिर स्वयंसेवकों को उठाकर १० मिनट पूर्व शाखा में पहुंचो। फिर वहां जो शाखा में नहीं आया उसे मिलने जाओ। शाम को फिर मिलो। तब ही शाखा में संख्या होगी। उन्होंने अपना उदाहरण दिया कि जब हम शाखा लगाते थे तो रात को हाथ में रस्सी बांधकर सो जाते थे और रस्सी खिड़की से बाहर लटकाकर सोते। प्रात: गट नायक आता और रस्सी खींच कर उठा देता। इस प्रकार सवयंसेवक को उठाया जाता। घरवालों को भी पता न चलता और स्वयंसेवक शाखा में पहुंच जाता।

इतिहास से साक्षात्कार

अनिल कुमार
ग्राम व डा. शिल्ला
जिला सिरमौर, हि.प्र.

मेरा परिचय ठाकुर जी से उनकी आयु के ९२ वें वर्ष की आयु में आया। यह क्षण मेरे लिए एक अविस्मरणीय अन्तराल बन गया। मैंने उनके बारे में सुना था कि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में इतिहास शास्त्र में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है और वर्तमान में वे इतिहास संकलन योजना के प्रेरणा पुञ्ज हैं। मेरे मन में एक कल्पना उभरी की शायद जो इतिहास मैंने अपनी पुस्तकों में पढ़ा है वहीं इतिहास ठाकुर जी भी जानते होंगे। इसी कल्पना के साथ मैंने ठाकुर जी से पहाड़ों में बसने वाली खश जाति के सम्बन्ध में पूछा, मुझे लगा कि ठाकुर जी को इस जाति के बारे में शायद ही पता हो? वे तो इतिहास की बड़ी-बड़ी घटनाओं को जानते होंगे, यूरोप के इतिहास को, अमेरिका के, रूस-चीन के बारे में जानते होंगे। इस जाति के बारे में भला क्या जानकारी होगी। परन्तु जब उन्होंने मुझे खश इतिहास के उद्‌गम से लेकर वर्तमान स्थिति तक संक्षेप में बताया तो मैं आश्चर्य में पड़ गया और ऐसा लगा मानों साक्षात् इतिहास अपनी कहानी बता रहा हो। मैंने कुछ और प्रश्न भी उनसे पूछे, जो मेरे लिए जिज्ञासा बने हुए थे। उन प्रश्नों के उत्तर पाकर मुझे ऐसा लगा कि जैसे इतिहास स्वयं बोल रहा हो। ठाकुर जी का ऐसा परिचय पाकर मेरा मन उत्साह से भर गया। इसके उपरांत उनसे इतिहास के बारे में पत्राचार भी हुआ है, उन्होंने जीवन के इस अंतिम पड़ाव में भी जिस उत्साह से पत्र लिखकर मुझे मार्गदर्शन दिया वह मेरे लिए आजीवन मशाल का काम करेगा।

नेरी को पर्यटक गांव बना दें

डॉ. सत्यदेव कश्यप
वानिकी एवं उद्यान विश्वविद्यालय
नौणी

जब मैं २००६-२००८ तक डॉ. यशवन्त सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय बागवानी एवं वानिकी अनुसंधान केन्द्र, नेरी जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश में बतौर सह निदेशक अनुसंधान एवं विस्तार शिक्षा रहा। ठाकुर साहिब से मिलना अक्सर सप्ताह में एक-दो बार आवश्य हुआ करता था। वह हमसे नेरी के उत्थान हेतु, भारतीय इतिहास एवं घुसपैठियों के बारे में तथा अपनी पुरानी गतिविधियों

के बारे में काफी जानकारी देते रहते थे। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में जो काम हो रहा है उस को लोगों तक कैसे-कैसे पहुंचाया जाए तथा कैसे उनका उत्थान कर सकते हैं, के बारे में अक्सर बातचीत होती थी। पर्यावरण के बारे में वह बहुत रुचि रखते थे तथा अक्सर बहुत ही चर्चा करते रहते थे। ठाकुर जी यह भी कहा करते थे कि इस के ऊपर हमारे विश्वविद्यालय को शोध करना चाहिये और हो सके तो मौसम परिवर्तन व पर्यावरण विज्ञान का एक महाविद्यालय खोलना चाहिए।

ठाकुर साहब ने यह भी सुझाव दिया था कि अब बुद्धिजीवी लोग जैविक खेती के ऊपर बहुत चर्चायें करते है और उसके ऊपर बहुत बढ़ावा दे रहे हैं। क्यों न नेरी को ही एक जैविक खेती का गांव बना करके यहां पर हम हर प्रकार की खेती प्रणाली को अपना करके एक पर्यटक गांव बनायें? जिसमें दोनों शोध संस्थानों की भागीदारी हो और लोगों के लिए अच्छा काम किया जाए। उसके ऊपर एक परियोजना बनाई जाए और हिमाचल सरकार को भेजी जाए।

अभी-अभी जब फरवरी २७-२८, २०१० को हमारे वश्विविद्यालय ने एक राज्य स्तरीय किसान मेले का आयोजन नेरी में किया, जिस में माननीय मुख्यमन्त्री जी बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे और ठाकुर जी विशिष्ट मेहमान थे। उसमें माननीय मुख्यमन्त्री जी ने अपने भाषण में कहा कि ''नेरी में हम और भी करेंगे''। तो दूसरे दिन अर्थात् २८/०२/२०१० को ठाकुर साहिब ने मुझे बुलाकर कहा कि धूमल जी कह गये हैं कि ''मैं यहां के लिए और कुछ भी करूँगा।'' तो आप बताओ कि नेरी के लिए क्या-क्या हो सकता है, ताकि मैं धूमल जी को कहूँ कि यहां पर यह सब कुछ कर दो। उन्होंने दो परियोजनाओं के बारे में पूछा कि उनका क्या बना जो मैंने आपको बताई थी और सरकार को भेजी थी। यदि यह दोनों परियोजनाएं यहां के लिए स्वीकृत हो जाएं तो नेरी का नाम अपने आप ही प्रसिद्ध हो जाएगा। उस के साथ हमारा और विश्वविद्यालय के शोध संसथान भी जुड़े हैं। यहां तक भी उन्होंने मुझसे पूछा कि आप कब सेवानिवृत हो रहे हो और उस के बाद इस शोध संस्थान के अन्तर्गत कुछ और भी यहां के लोगों के लिए सामाजिक कार्य शुरू किये जाएं। ताकि लोगों का उत्थान हो। ठाकुर जी को जब भी समय मिलता उस समय भारत के इतिहास के बारे में घण्टों तक बताते रहते थे तथा उसके शुद्धिकरण के बारे में कहते थे। यहां तक कहते थे कि जो भी सभ्यता और धर्म संसार में आया है, वह हिन्दू धर्म से बना है। और यह सबसे पुराना धर्म है। वह अक्सर अखण्ड भारत के विषय में भी कहा करते थे।

हमारे गांव का भाग्योदय हुआ

प्यार चन्द परमार
गांव नेरी, डा. खगल
तह. व जिला हमीरपुर

मैं संघ का स्वयंसेवक तो ऊना में बन गया था। शाखा का मुख्य शिक्षक भी वहां पर रहा। मेरे ससुर स्वर्गीय ठाकुर प्रेम सिंह, धनेटा, (डिब) गांव के संघ व आर्य समाज के अच्छे कार्यकर्त्ता रहे हैं। ठाकुर जी का उनके घर में प्राय: आना जाना मेरे ससुर जी के जीवन काल तक बना रहा।

इतिहास शोध संस्थान के लिए इतना बड़ा केन्द्र नेरी गांव में बनने वाला है, यह मैंने कभी सोचा भी नहीं था। एक स्वयंसेवक होने के नाते इतना विशाल केन्द्र मेरे गांव में खुल जाना इससे बड़ी खुशी मुझे कोई और नहीं हो सकती। यह सब श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह जी के प्रयासों से हमारे गांव का भाग्योदय हुआ। मैं उसे अपने पूर्व जन्म के किसी शुभ कार्य का प्रतिफल व ईश्वर का प्रसाद मानता हूँ। उनके उर्वर मस्तिष्क में कोई-न-कोई योजना हर वक्त प्रस्फुटित होती रहती थी। जिसमें पूर्व के इतिहास से प्रेरित भविष्य में आनेवाली नस्लों के लिए एक संदेश समाविष्ट होता था।

इसी वर्ष २०१० को मकर सक्रांति के दिन मैंने ठाकुर जी को अपने घर आने का न्योता दिया। शाम ८:३० बजे के करीब ठाकुर जी छोटे चेतराम जी के साथ हमारे घर आए। जैसा कि सज्जन पुरुषों का स्वभाव होता है, उन्होंने हमारे नव निर्मित गृह की प्रशंसा की। फिर उसके पश्चात् लोहड़ी पर्व का अग्नि में होम करके भोजन किया।

दूसरे दिन सुबह मैं उन कर्मयोगी की दिनचर्या को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। साढ़े पांच बजे उठकर नियमित नित्य कर्म से निवृत होकर ठाकुर जी प्राणायाम व लघु व्यायाम चारपाई पर ही कर रहे थे। साढ़े छ: बजे ठाकुर जी की उस शयनकक्ष में ही 'शाखा' लगी और फिर प्रार्थना हुई।

स्नानादि से निवृत होकर धूप में बैठकर ठाकुर जी ने नेरी शोध संस्थान में सम्बन्धित एक योजना मुझे समझाई कि संस्थान के सामने वाली पहाड़ियों के सिरे पर भारत के ऐतिहासिक महान योद्धाओं, जैसे महाराणा प्रताप, रानी झांसी, वीर शिवाजी इत्यादि की विशालकाय मूर्तियां स्थापित की जानी हैं जो दूर से नजर आएं, इस सुरम्य स्थल को देखकर आने वाली नस्लें यहां भ्रमण करें तथा अपने उन महापुरुषों, वीर योद्धाओं के चरित्रों से प्रेरणा ले सकें। ऐसा था ठाकुर जी का राष्ट्र चिन्तक प्रेरक व्यक्तित्व।

AN INSPIRATION TO ALL

Dr. Balaram Chkravarti
24/2/19, Mandalpare Lane
Kolkata - 70050

Late Thakur Ram Singhji Inspired us through his life and work immensely. I admire his love for the country and the life long efforts to rectify and rewrite the history of India. His research and quest of knowledge (Jnana yoga) was an inspiration to all of us.

I found him working for long hours and organizing the current affairs seminars at Thakur Jagdev Chand Smriti Shodh Sansthan, Neri and attending to minute details even during his last years illustrating that he was a karmayogi also throughout his life.

When he went through the first volume of the history written by me on the seen kings Himachal, he inspired to write the second volume of the book. In order to inculcate the patriotism across the nation he promoted research on Kashtryas, especially from Karnataka and border states from Arunachal Pradesh to Leh. He was a soldier without formal uniform, who had been fighting life long to keep the country united, integrated and independent. Following the paths shown by shivaji, Netaji and Swamiji he worked earnestly for prevention of fragmentation of our country into pieces.

Today, we miss him very much at the crucial time when China and Pakistan are strengthening their activities on our borders.

While paying deep regards to this Deshabhakt, Jananayogin and Karmoyogi, following his footprints let us dedicate our life and limb, Janna and karma to preserve the unity and integrity of India.

A VERSATILE GENIUS

Dr. D.K. Sarkar
4th A.P. Bn. Gate, Barsupara,
Gowahati, Assam

Thakur Ram Singh ji - an illustrious son of Bharatmata having multidimensional intelligence, a glorious name in the history of Bharat and Sangh Parivar at large; an inborn patriot and a diligent being. His consecration at the services of holy Motherland hardly need an introduction. He was a very kind hearted noble soul with steadfast in decision and determination, firm & yielding with ideology. His dynamic personality attracted almost all strata of people of the society.

It was Thakur Ram Singh ji who brought a radical change in the scenario of History of Bharat which are infact written by the British historians and later on copied by the Indian historians, leftists in particular. Subjecting nothing but travesty of truth ignoring the horrid of death, destruction and desecration perpetrated by the foreign invaders. Thakur Ram Singh ji emphatically refuted most of the theories furnished by the said historians establishing the factual truth & reality. According to Thakur Ram Singh ji both History and Geography must by made compulsory in all the Schools and Colleges.

It was Thakur Ram Singh ji for whose untiring effort we could see Amritsar in the map of Bharat.

Thakur Ram Singh ji stepped for Greater Assam, including Assam, Meghalaya, Mizoram, Arunachal Pradesh, Nagaland, Tripura and Manipur, in September, 1949 and through great impediment and financial constraint he succeeded to intensity the activities of R.S.S. and its offshoots. During his tenure the activities of Rashtra Sevika Samity took momentum in Assam, Meghalaya, Manipur and Tripura. Thakur Ramsinghji had been to greater Assam as the first Prantiya Pracharak from September 1949 to April 197 0. It was a privilege for me to get actively

associated with Thakur Ramsingh ji since 1954 while I was a student of Class V and residing in the Hostel of Bengali High School, Guwahati. His modus-operandi was extremely different but praiseworthy. He used to visit our hostel and tell us the stories of heroes and martyrs. But, he never asked any of us to attend the Sakha of R.S.S.; perhaps he was watching our mental upliftment for the same.

While I was studying MBBS, with the inspiration of Thakur Ram Singh ji I completed my 3rd year OTC training of RSS. After passing MBBS, I joined in Gauhati Medical College as Registar of Surgery and used to reside in my elder cousin sister's house at Guwahati. One fine morning, after returning from medical college, I did not find any of my bag and baggage. On enquiry my sister told me that Thakur Ram Singh ji came and taken away all my belongings to Sangh Karalaya, Dhireswar Kutir, Uzanbazar, Guwahati, and specified the room located in front of Dhireswar Kutir. From that time I started living in Sangh Karyalaya, where I found Thakur Ram Singh ji writing a number of letters to the concerned up to the midnight (1.30 AM or so). He used to get up from bed sharp at 4 AM i.e. 2½ hours sleep was sufficient for him.

During my stay at Sangh Karalaya one day Thakur Ram Singh ji told me to accompany him to Gauhati University as there was a seminar on RSS in the department of Political Science. In the seminar while one of the participant speaker remarked that the concept of "Hindu Rashtra" is a bogus concept. Who says this is a Hindu Rastra? Thakur Ram Singh ji repulsed, stood-up and went to the dias and with his narration of 'Hindu Rastra' he made the seminar spell bound maintaining pin-drop silence of the hall which appeared as epoch making.

It was very much surprising that another day while Thakur Ram Singh ji was taking vaithak of the Pracharaks in the Sangh Karalaya at about 11:30 AM one telegram was received by him regarding the death of his mother. He continued with the vaithak without letting others know about the incident. As soon as the vaithak was over it was about l PM. I asked Ram Singhi ji to take

his meal which he refused and shut the door of his room. Later on we came to know the fact.

Meanwhile, I completed my MS Course in Surgery, and shifted to my newly constructed house at Guwahati and thereafter got married.

Thakur Ram Singh ji frequently used to visit our residence. One morning my wife asked me to bring some vegetables from the market, accordingly I went out for the same with a bag in hand. Suddenly I could see Thakur Ram Singh ji coming to our house in the Rajdoot Motorcycle, he told me to sit on the back seat and started moving. I did not dare to tell him the fact. Ultimately, we reached Kampur which is about 130 Km from Guwahati. On the contrary, my wife was anxiously waiting for the vegetables.

One night Thakur Ram Singh ji came to our house at about 12:30 AM, he was found to be badly tired rather exhausted and felt asleep on the chair. My wife assumed something from his appearance and enquired about whether he had his night meal, Thakur ji replied in affirmative. But she was not satisfied with the reply and went to the kitchen and served him a dish whatever was available. these things were possible because of intrinsic relation to Thakur Ram Singh ji with our family, my father in particular who was a doctor and use to serve in Indian Army in the rank of Major. My father so long survived was one of the best admirer of Thakur Ram Singh ji.

Beside telephonic talk very often he used to write letter to me and the last one that I received was in the month of May, 2010 (a copy of the same is annexed herewith) Thakur Ram Singh ji was profound affection for me and my wife, rather he was fatherly to both of us.

However, Thakur Ram Singh ji is no more. But the memories very often dwells upon our mind and agonize us. I don't find any word to suffix his magnanimity, greatness, patriotism, courage, altruistic devotion and dedication for the holy Motherland.

May God bless the beatitude of his departed soul.

THAKUR RAM SINGH : DESTINY AND DIVINITY

Prof. Satish Chandra
President
Baba Saheb Apte Samiti, Delhi

I learnt about Thakur Ram Singh Ji as R.S.S. Prachark from my brother-in-law Shri Chandra Bhan Sachdeva who was an *adhikari* of R.S.S. and functionary of *Adhyapak Parishad*. He referred to his *bodhiks* which he must have attended and this was in early sixties.

One fine morning while attending Shaka in Anand Niketan, an R.S.S. *karyakarta* zoomed in the *shakha* on his Bajaj Scooter and got into *Sampark* with me. Since, I was teaching History and Political science in D.U.; he invited me to a meeting of Itihaas Sankalan Yojna which was to be held at newly constructed Baba Saheb Apte Bhavan in the premises of Keshav Kunj. I sat through the meeting and listened to the proceedings as well as a two hour discourse of Thakur ji. Thereafter my attendance in meetings became regular and I got the taste of Thakur ji's foundational dissent to the colonial and western approach to Indian History, guided mainly by the imperial interests. I reached the brief hint made by Dr. S.R. Dass while imparting lessons in Ancient Indian History in Hons. first year class that about a thousand years period has been arbitrarily handled to adjust the events with the Christian era by the historians of the west.

The surrogate Indian Historians faithfully subscribed to this manipulation. Looking from this point of view, his *Kal Ganana* discourses appealed to me very realistic. Besides, It is now well acknowledged that Hindu calendar is most accurate of all the existing ones. Thakur ji's life long efforts on the revival of Hindu calendar inspired a whole new set of scholars including V.M.K. Puri and others to make researches on the depth of the of accuracy of the Hindu system of time calculation.

There were dissenters who used to nudge me when he crossed the limits imposed by western Historians definition of 'records' and 'reason' and I would say please listen and don't jump the gun. His vision extends to the universe. Besides, it is a vision drawn from

Hindu thought which has inspired the whole world for long and much before Christianity was born.

My next stage was when he started calling me along with others in his room to discuss about the expansion of the *Itihaas Sankalan Yojna.* Delhi was organised into districts at par with Sangh's distribution of Delhi into districts with one variation. Delhi University and J.N.U. were made two additional districts. Monthly meeting with *bodhiks* on Itihaas were held. Base of membership expanded. Two *pakasha* the vaicharik and organisational became distinctly visible. Delhi delegation was participating in the Akhil Bhartiya activities. *Itihaas Darpan* was being published from Delhi under Shri Khushwa ji and later by me under the directions of Thakur ji. After Bombay session of general body of 'Itihaas' Thakur ji told me that *Itihaas Darpan* is likely to be shifted to Varanasi and advised me to give up the responsibility. I was then moved to the Baba Saheb Apte Samark Samiti with the instruction to expand the scope of working of Samiti to include researches on other nation building activities such as *Akhand Bharat* Partition atrocities, Martyrs memorial, study of Hindu influence on South East and Central Asian countries. He also successfully floated a project on the Mongolian roots of Katoch ruling dynasty, invited Hon' Ambassador of Mongolia to the conference on this subject held at Sujanpur, Tira Himachal Pradesh Close to the time before he passed away, he was fully immersed in the continuity and completion of the projects especially in Kullu, where the trust had been formed, land acquired with next step to install Manu's statue on the hill top to mark the inception of the mankind on this earth.

My 'journey' with Thakur ji was a spiritual experience. My two visits to the village Jhandvi, where he was born, were reaffirmation of this experience. It was one of those few habitats located at the top of the Shivalik mountain ranges. From those heights, one can look down at the valleys and more densely populated areas along with gorges and reverence symbolising mankind on the Earth. While, if you look up the sky wards, it appears that you just have to raise your hands and feel the heavenly touch. Thakur ji must have seen a very hard life commuting for education and other odd jobs up and down the hills. This is reflected in his subsequent make up of the life in the

service of the R.S.S. and the nation full of rough and tumble as well as hard work.

God has his own way to make the nations work. It is through the medium of persons like Thakurji. Once, while travelling to Hamirpur for a conference with Sureshji Vajpayee and Swadesh Pal ji the former remarked "Thakurji is a Devta Swaroop". There could not be a better way to understand his personality and disposition.

But it is an altruism that great people attain greatness not without facing difficulties and controversies. The pure souls with identity of the nation with their ambitions generally face such crises. It is not that Thakur ji was so hard upon himself that he would not compromise. But he tolerated a lot if it did not infringe his basic beliefs. One such belief was in the prestine purity of R.S.S. principles and its divinely ethical and civilisational message.

As he fell ill at Neri and then was taken to Dayanand Medical College Ludhaina, innumerable people in fact the entire fraternity of R.S.S. and its various organisations anxiously enquired about his health. There were also many who physically gave him twenty four hour company whether it Neri, Ludhiana or Kulu. When ever I called I got responses from Surrinder ji Sharma, Chetram Ji senior, Bharmoria ji, Chetram ji (junior), Nanda ji and Thakur ji's Name sake Ram Singh ji in Kulu town. The pressure of visitors especially in Kulu was cheerfully sustained by the family of Ram Singh ji. All of us who could not be there, express our gratitude for their service rendered to Thakur ji at the moment of crises.

We were all praying during the period of his illness for his quick recovery and it seemed our prayers were rewarded when all the necessary tests showed that his heart fully accepted the pace maker. It now appeared that it is just a matter of time when he will be back to doing what he likes best i.e. working both at Neri and Delhi. Once he mentioned - that Neri and Delhi work go necessarily together and I have to divide time between the two.

During his illness, especially when he was away from his dear most activities, he might be feeling monotonous. So, I decided to put down the details, how his assignments were progressing. At the top was his directive to meet *Sar Sangh*

Chalak Ji - and to find out his availability for the award of Dr. Wakankar Puruskar. This was gone through and a detailed account was sent to him. An other was filling up of the post of treasurer with his approval. He was assured we are going ahead with the meeting of *Sadharan Sabha* as planned on 18th July 2010; for which the information was being duly sent to all members.

He was also informed that the new additions and alterations he made while reorganising the samiti a few months back, has begun to show results. General Secretary, Vice president and office Mantri have sat together to examine and update the memberships. All this was to reassure him that even in his absence we were right on our job.

As he was very eager to know the state of samiti activities he was told in my second letter that the Sadharan Sabha meeting has been held successfully on July 18. In the forenoon session the agenda was gone through and post *bhojan* session was devoted to Research paper readings. Sagar ji our vice president read a paper on 'Arabia before Islam' and the other was read by Shri Jatinder Nath Joshi on 'Indian Identity is Hindu identity'. A lively discussion took place following the paper reading. Thakurji desired that Samity should become a knowledge society making researches, meeting in academic sessions and then publishing the results and discussions in our journals such as Itihaas Divakar, Organiser, Panchjanya and others. In the same letter I sought his permission to hold monthly meetings of Samiti. He responded to this letter in one of my telephonic conversation to say "Don't ask me for approvals just go ahead."

Thakur ji had suggested to contact Shri Lokesh Chandra, a former M.P. and the Director of Saraswati Vihar, a centre of Indian Cultural Studies Hauz Khas, for the 13th Dr. Wakankar Puruskar. He asked me to meet Dr. Lokesh and place the proposal and then let me know his reaction. This I did and my *Third letter* was all about over two hours of discussion with him which included an introduction of Baba Saheb Apte Samiti and its activities since its formation in 1973. Lokesh ji was keenly interested in what we were doing in thought and action. He also frankly placed his views on the situation the country faced. The main point was offer of *puruskar* which he did not accept, but promised to write a letter

to Thakur ji for which he was given the address. My last conversation with Thakur ji related to the office bearers of samiti Gen Sect and vice president and about the Itihaas Parmukh, the new appointment of treasurer and informalisation of the core committee.

Thakur ji was publicity shy but wanted his functions and projects to get due publicity if only to spread awareness and enlist participation of more people in the task of national reconstruction. He himself kept away from the lime light and it was extremely difficult to get him to the stage. He was always in the look out of persons who will serve the society selflessly with dedication. He showed how possibilities can be extracted from near impossibilities. His soft corner for the selfless workers is evident in the write up of Shri Kul Bhushan Gupta in this very series.

Thakur ji's commitment to R.S.S. work began in 1942 when he was made a *sawayamsevak* by Prof. Balraj Madhok and though Thakur ji is no more, his commitment shall remain ever green, firmly rooted in the ground like the branches of an oak tree.

Thakur ji spoke with an emphatic tone while making a point of his view. His life was one of a hermit yet dynamic. His every action was derived from and contributed to the strengthening of the ideals of R.S.S. i.e. (*vyakti charitra nirman*), unity among Hindus and defence of the motherland Bharat Mata. His self belief was very strong which provided him a deep insight into the current phenomenon so that he well anticipated the consequences which enabled him to take suitable steps. He knew the time was not on his side so he began to build an organisational structure organically linking the projects on the anvil. The Baba Saheb Apte Samarak Samiti Delhi, Baba Saheb Apte Samarak Samiti Punjab, Manu statue project trust Kulu, Prakalps as wings of Baba Saheb Apte Samiti Delhi were all affiliated with Thakur Jagdev Chand Shodh Kendra Neri (Hamirpur). Delhi was to be represented by Adhyaksh, Maha mantri and one Vice President and Itihaas Permukhs in the *Nirdeshak Mandal* which was the central governing body of Shodh Kendra. With such an outline more expansion could be undertaken depending upon the progress of the projects undertaken.

A lot of thoughtful energy was invested by Thakur ji into making the structure and training the *Karyakartas.* It is time for all

of us to pick-up the brass tack to continue operations with greater vigour, on the agenda set up by Thakur ji as below

I. Baba Saheb Apte Samiti

(a) Dr. Wakankar Puraskar
(b) Monthly meetings-academic, Quarterly meetings-organisational
(c) Membership and membership records
(d) Souvenir and publications
(e) Unit branches:- Gurgaon, Noida, North Delhi, South Delhi, Western Delhi, Yamuna Vihar, East Delhi, Ghaziabad, Vasundra, Sahibabad.

II *Parkalps*: Martyres memorial, South East Asia and Central Asia, Akhand Bharat, A new model Indian History consolidation of folk lore and Paramparas, Kal Ganana.

Thakur ji once got an emblem made of Itihaas Purush symbolising the entire History not only of mankind but of the Sirishti. It was planned to be adopted as monogram in due course. He had imagined Itihaas Purush on lines of Sri Krishna Bhagwan manifestation of universe as Virat Purush. This was supplemented by a Mantra of Itihaas which became a compulsory recitation in our meetings.

The Itihaas Purush was designed by well known artist Shri Hazarika from Assam. Its statue was made and has now been copy photographed. Its original has been placed in the Museum of Neri along with other artefacts which have come from far and wide. He was anxious to develop this museum along line of his Itihaasic imagination. The Samiti was also given the responsibility to acquire items of historical, literary and cultural importance from various sources to be placed in the Museum.

Post Thakurji expert direction can really see through the completion of Thakur ji's favourite theme.

Neri infrastructure is destined to develop into a centre of learning. Mongolian ambassador on his visit assured collaboration with the centre. The spade work has been made along with the publication of Itihaas Divakar - a powerful means of information and communication and a rich collection of books in the Library. We now need to build it up.

MY REMINISCENES OF A *YUG PURUSH* - THAKUR RAM SINGH JI

V.M.K. Puri
President
Shod Sansthan Neri
Director (Retd.)
Geological Suvey of India
113, Kotawali Bazar, Dharamshala, H.P.

Thakur Ram Singh ji was a *yug purush* who lived his life with fervor and dedication to the cause of upliftment of the society. He was popularly known as Thakur Sahib to all of us. He gave *ahuti* of almost nine and a half decades of his life towards this cause. He could lead a life of ease and comfort since he had obtained first class and stood first in M.A. history and obtained a gold medal way back in 1942. He was offered a post of a lecturer in this subject in his own Alma meter immediately after his passing out. But he had decided to decline this offer and chose the life devoted to the service of the nation. He not only influenced thought process in *Itihas* compilation to a large extent but guided scholars also in proper perspective. His magnetic personality was a source of inspiration to anybody who ever came in contact with him. His grasp of the subject was unparallel and one always marveled at his capacity to imbibe its intricacies. His memory was phenomenal and he remembered people vividly who had come in contact with him even half a century ago.

PUSHPANJALI

I personally knew him from my early childhood when he used to visit us in Dharmshala in early forties (or sixty five years ago) since he was a great friend of my elder brother, the late Hari Mohan Kumar Puri. My brother spent most of his life in Kolkata where he was working in coal industry. He continued to maintain close relationship with Thakur Sahib till his last breath.

After the lapse of almost fifty years of aforesaid period, I was posted in Lucknow and my professional duties had given me adequate insight to the mysteries and marvels of Himalaya over decades of undertaking studies in glaciology. One fine morning of a balmy winter at Lucknow, I received a phone call from my elder brother in Kolkata that Thakur Sahib was keen to meet me at my location for discussions concerning some problems pertaining to Himalaya. I was further informed that Thakur Sahib would be visiting Lucknow after a lapse of a fortnight and would contact me subsequently.

Thakur Sahib was to participate in Akhil Bhartiya Prtinidhi Sabha meeting that was held at Saraswati Shishu Mandir, Nirala Nagar, Lucknow that year. Having learnt about his presence in Lucknow, we fixed an appropriate time for discussions on a wintery Sunday in the campus where Thakur Sahib was staying during his sojourn. On an appointed day and time, I arrived at Shishu Mandir from a subsidiary gate and started looking for Thakur Sahib. I got a little perplexed when I failed to locate him at all possible places within the campus. My brother had told me that Thakur Sahib always respected punctuality and insisted upon it. It was not part of his personality to fail an appointment but still I could not trace him. As a thought of aborting the appointment flashed through my mind, I decided against it and give yet another try to locate him. My second effort also drew the same result. I was trying to convince myself that Thakur sahib must have forgotten about me and gone somewhere else to honour his busy schedule.

As I was preparing to leave the campus of Shishu Mandir to return home, suddenly I met an acquaintance of mine over there and made a last minute effort to locate Thakur Sahib. I enquired about the whereabouts of Thakur Sahib from him. He did confirm having seen Thakur Sahib a couple of hours ago but knew nothing about his present whereabouts. On hearing this reply, my last hope of tracing Thakur Sahib also evaporated. The campus was sizzling with profound activity and it appeared that

Thakur Sahib must have got busy elsewhere and it was difficult to find him. Therefore, a decision was taken in my mind to abandon attempt and return home.

Just at this stage, a casual thought struck my mind to leave the campus through the main gate and I sauntered towards it. As I approached the main gate, I found to my horror and surprise, Thakur Sahib was sitting on a foldable chair near the main gate with a concentrated gaze focused towards it. Suddenly, he looked backwards and raised his eyebrows.

"From where have you come? I have been waiting for you for the last half an hour while sitting over here."

I became dumbfounded on this sight and tears started flowing through my eyes. Words got mingled in my emotions and I could hardly speak. A person of the caliber of Thakur Sahib was magnanimous enough to wait for an insignificant person like me in that dusty environment.

"Are you feeling tired?"

He enquired further as he heard no response from me. He had guessed that I had come late and perhaps I was covering up for my lapse.

"I was searching for you."

I mumbled sheepily. After completing the preliminaries, he straight away came to the point.

"Your brother in Kolkata had told me that you possess a good knowledge of Himalaya." Thakur Sahib uttered these words with affection.

"Himalaya has been the cradle of my professional activities and I have been moving around it in connection with glacier studies." I boasted with a sense of authority and pride.

Thakur Sahib hit upon the subject immediately he wanted to discuss with me in depth. It was concerning presence of Vedic Saraswati. We spent a long time discussing this subject. Thereafter, he focused on grey areas in this field and coaxed me to undertake further research on this subject. In earlier stages, I

was reluctant to carry out the research work in this field since my official responsibilities kept me busy day in and day out. Nevertheless, his power of persuasion was so enormous that I yielded quickly and agreed to fill the grey areas of the concerned subject. Consequently, I was fortunate enough to succeed in this endeavour and discovered the source of Vedic Saraswati in Himalaya. For this discovery, the credit goes entirely to Thakur Sahib.

OTHER INCIDENTS

Yet another incident that is enshrined deep in my mind pertains to the period a decade later from the aforesaid mentioned event. Thakur Sahib was to visit Dharmshala during winter for undertaking preparations in connection with a forthcoming seminar. Shri Bharmauria ji, our colleague in the Institute intimated his travel details to me from Hamirpur including the bus number in which he was arriving. As per the information obtained from bus station officials, the bus was to arrive sometimes around four in the afternoon. On the date of his arrival, I went to the bus station nearly fifteen minutes prior to arrival of the bus. I continued to wait at the bus station till 4.45 P.M. and still there was no trace of the bus. I started making frantic enquiries of the bus from Hamirpur. Subsequently, I was informed that the designated bus did not come to the bus station but was sent directly to the work shop. At that moment, I received a phone call on my mobile that Thakur Sahib had reached home. In Dharmshala, no local bus service is available and taxi drivers are only interested in long distance passengers. I was totally confused as to how he reached home all by himself since his bus had gone directly to workshop.

After reaching home, Thakur Sahib informed me that he had alighted from the bus a stop earlier. Thereafter, he walked home. On hearing his casual approach in narrating this incident, I was completely shocked. A ninety one year old person carrying his almost 20 kg bags climbed up the hill all by himself and reached my residence. Moreover, he always travelled alone at

his advance age. Even this approach of his was uncomforting that always disturbed my mind. Any other person would not have dared to come out of his room alone leave aside travelling in a public bus. His determination and grit had always been an object lesson to imbibe by lesser mortals like us.

Another incident that flashes my mind pertains to Guwahati (Assam) where I was posted in late nineties. At that time, the city of Guwahati was riddled with a serious problem of militancy and even walking on its streets was a dangerous affair. Again, I was informed that Thakur Sahib was visiting Guwahati shortly. On an appointed day, I went to meet him in person. There, it was discovered that he was talking with local people in fluent Assamese language. I had not known this trait of his in learning languages. He was also fluent in Bengali as well as Urdu apart from knowing other languages. Such a great scholar was Thakur Sahib. He wanted to visit certain areas in lower Assam which were hot beds of militancy at that time. It took lot of effort to persuade him to cancel his further programme but he would not yield an inch. Finally, a workable compromise was evolved to solve the problem.

Thakur Sahib was a person possessing a personality that was an object lesson to all of us. His vision was phenomenal and he created single handedly a research institute Dr. Jagdev Chand Smriti Shodh Sansthan that is located on western slope, near Neri village, 10 km away from Hamirpur. Though he was born in Jhandvi village, tehsil Bhoranj, district Hamirpur, Himachal Pradesh but he belonged to the entire nation. A light which Thakur Sahib has lit in the minds of all of us will lead the way to fulfill the objectives for which the 'Shodh Sansthan' has been established.

Registration/Admission Open for Classes IV to X

Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only

A CULTURE ORIENTED ENGLISH MEDIUM SCHOOL

(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)

Run By: Himachal Shiksha Samiti Shimla,

(A State unit of Vidya Bharti)

S.S.N. PUBLIC SCHOOL KUMARHATTI

LOCATION: The complex is situated on Barog bye-pass Road. It is less than 2 Km. from KUMARHATTI.

Managed By:
Jindal Charitable Trust
Nabha (Panjab)
01765-326661

J.K. Sharma
Principal
Ph. : 01792-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

Ambuja Cement

AMBUJA CEMENTS LIMITED
Ph.: 0177-2626253, 2626538, 2622934

Sh. Prem Kumar Dhumal

HIMUDA

Sh. Mahender Singh

PROVIDING SHELTER TO ALL

Under the Dynamic Leadership of

PROF. PREM KUMAR DHUMAL

Chief Minster, Himachal Pradesh

and

the motivating force of

Shri Mahender Singh Thakur

Minster for Transport, Housing and Town & Country Planning

with

able guidance of

Shri Ganesh Dutt

Vice Chairman, HIMUDA

Sh. Ganesh Dutt

HIMUDA solves the Housing Problems of the people of Himachal Pradesh

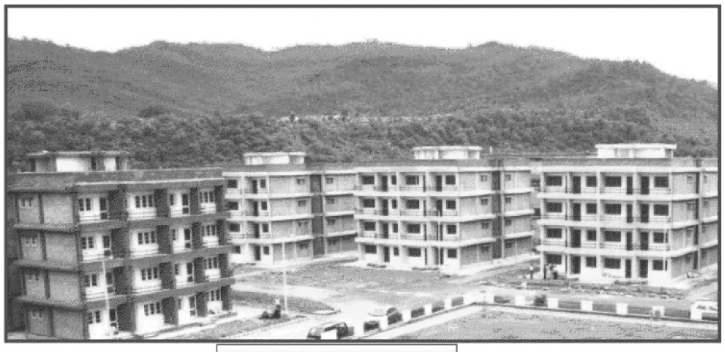

Stepping Stones to Success

1. New **Housing Colonies** are being setup at **Shimla, Solan, Kandaghat, Parwanoo, Baddi, Nalagarh, Chamba, Kala Amb, Theog and Paonta Sahib**.
2. The work on Residential Township Madhala (Baddi) already started.
3. **Commercial complexes** are being setup at Baddi & Rohroo.
4. **Atal Shiksha Kunj (Education Hub)** spread over an area of 600 bighas is being developed at Kalu Jhanda (Baddi).
5. **HIMUDA** has successfully completed major Deposit Works of various Govt/Semi Govt. organizations.

NEW SCHEMES:

1. For JNNURM under Ashiana Scheme, 384 units have been approved under BSUP to be allotted to Slum/B.P.L. families of urban poor with beneficiary contribution of Rs.25,000/-.
2. 2252 units have been approved in Hamirpur, Solan, Baddi, Parwanoo, Nalagarh and Dharamsala Towns to be allotted to Slum/BPL families of urban poor with beneficiary contribution of Rs.25,000/-.
3. Funding of 3.04 crore approved for purchase of 75 Buses under Mission City Shimla

CEO-cum-Secretary
HIMUDA, Shimla-171002

मै० स्ट्राइकर एंड ब्रदर्स

सरकारी ठेकेदार

स्पेशलिस्ट इन रोड़ एण्ड बिल्डिंग वर्क, बिलासपुर

कोर्ट रोड़ बिलासपुर

स्थापित -1920
आप का विश्बास + हमारी सेवा

कांगड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक सीमित

धर्मशाला (हि.प्र.) दूरभाष 223280, 224969

माननीय मुख्यमंत्री प्रो. प्रेमकुमार धूमल जी

के गतिशील नेतृत्व में उत्तरी भारत के सहकारी क्षेत्र के सर्वोत्तम किसानों, बागवानों, नौजवानों, बुनकर एवं कर्मचारियों के सच्चे व अपने नाबार्ड द्वारा लगातार पांच वर्षों तक पुरस्कृत, भारतीय विकास रत्न अवार्ड 2009, नाबार्ड द्वारा प्रथम दूध गंगा अवार्ड 2010 एवं स्वयं सहायता समूह 2010 के अवार्ड विजेता

कांगड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक सीमित धर्मशाला (हि०प्र०)

की ओर से ग्राहकों व शुभचिन्तकों को बधाई एवं शुभकामनाएं
सभी प्रकार की बैंकिंग सुविधाओं के लिए हमारी नजदीक की शाखा में सम्पर्क करें।
हमारी विशेष योजना :– किसानों के लिए फसली ऋण केवल 7% पर

रसली सिंह मनकोटिया
अध्यक्ष

संदीप कुमार
प्रबन्ध निदेशक

संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियन्त्रण कार्यक्रम
जिला बिलासपुर (हि.प्र.)

आप जानते हैं कि टी.बी. का इलाज न करने पर यह जानलेवा हो सकता है। टी.बी. किसी भी उम्र, लिंग, गरीब अथवा अमीर व्यक्ति को हो सकता है। टी.बी. से भारत में एक मिनट में एक व्यक्ति की मृत्यु होती है।

लक्षण :

तीन सप्ताह या इससे अधिक दिन की खांसी, हल्का बुखार, भूख कम होना और वजन कम होना बलगम में खून आना।

जांच :

टी.बी. की जांच के लिए बलगम के तीन नमूनों की जांच माईक्रोस्कोपिक केंद्रों में मुफ्त करवाएं। बलगम की जांच सरकारी अस्पताल, बिलासपुर, ए.सी.सी. अस्पताल बरमाणा, मारकंड, घवांडल, घुमारवीं, बरठी, झंडूता, भराड़ी, शाहतलाई, पंजगाई, मलोखर, हरलोग में सुविधा उपलब्ध है।

उपचार :

टी.बी. का इलाज 6 से 8 महीने तक चलता है। टी.बी. की दवाईयां लगातार, नजदीक के सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में – रोगी की सुविधानुसार– मुफ्त खिलाई जाती हैं। अधिक जानकारी के लिए किसी भी स्वास्थ्य केंद्र या संस्था से सम्पर्क करें तथा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरा सहयोग दें।

जिला क्षयरोग अधिकारी एवं मेम्बर सैक्रेट्री
जिला बिलासपुर (हि.प्र.)

श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ मन्दिर न्यास दियोटसिद्ध, जिला हमीरपुर (हि. प्र.) न्यास स्थापना 16/01/1987

२४वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर बाबा जी की सुख समृद्धि का आशीर्वाद सदैव बना रहे, बाबा जी से यही प्रार्थना है। भारतीय संस्कृति की विराट पृष्ठभूमि में विद्यमान दिव्य स्थलों में से उत्तरी भारत का प्रसिद्ध पीठ श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ के परमधाम शिवालिक पर्वत पर स्थित है। यह दिव्य स्थल हि.प्र. के जिला हमीरपुर के दियोटसिद्ध नामक सुरमई पहाड़ी पर प्रतष्ठित है। यह दिव्य स्थल चारों ओर से सड़कों से जुड़ा है। श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ द्वारा दियोटसिद्ध में अपना दिव्य स्थान स्थापित करने से पूर्व शाहतलाई को अपना कर्म स्थल बनाया था, शाहतलाई की दूरी इस पावन स्थल से ५ कि.मी. है।

हिमाचल प्रदेश हिन्दू विन्यास अधिनियम १९८४ के जब से इस मन्दिर के संचालन को लेकर श्रद्धालुओं व दानियों के बाबा ही उनका स्वागत द्वारों से भव्य पानी की व्यवस्थायें, वर्षाशालिकायें, नि:शुल्क चिकित्सा सेवा, शौचालयों के लिए स्वागतगारों में पूछताछ केन्द्र, ढूंढने के लिए पी.ए. सिस्टम की सुविधा और श्रद्धालुओं को किसी मन्दिर में सहायता कक्ष केन्द्र भी लिए मन्दिर परिसर में दर्शनार्थ स्थलों सार्वजनिक धार्मिक संस्थान और पूर्व अर्न्तगत दिनांक १६/०१/१९८७ से मन्दिर न्यास ने सम्भाला है। तब से जी की पवित्र धरती पर कदम पड़ते स्वागत, जगह-जगह पीने के स्वच्छ बिना लाभ-हानि की दो कन्टीनें, व स्नानागारों की व्यवस्था, जानकारी खोई वस्तुओं और व्यक्तियों को व्यवस्था, क्लाक रूम, दूरभाष की प्रकार की असुविधा होने के कारण स्थापित किया गया है। श्रद्धालुओं के में मुख्यत: गुफा दर्शन बाबा जी का अखण्ड धूना, धार्मिक पुस्तकालय, भृतहरि मन्दिर, राधा-कृष्ण मन्दिर, चरणपादुका व बाबा जी की तलाई दर्शनीय स्थल है।

न्यास स्थापना १६/०१/१९८७ से आज तक विकास की लम्बी यात्रा तय की है जिसमें मुख्यत: स्वागतगद्वारों का निर्माण, बस स्टैड का निर्माण, भव्य सरायों का निर्माण, लंगर भवन, बकरा स्थल, महिलाओं के लिए गुफा दर्शन प्लेटफार्म, शौचालय व स्नानागारों, पुरुष व महिलाओं की आवाजाही के अलग-अलग रास्तों व शिक्षा में जनता की सेवा में स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, संस्कृत महाविद्यालय, उच्च विद्यालय, माडल स्कूल के भवनों का निर्माण किया गया है तथा शिक्षा संस्थानों का संचालन किया जा रहा है।

भविष्य के लिये न्यास द्वारा प्रस्तावित योजनाएँ :-

आधुनिक बस स्टैण्ड के द्वितीय चरण के निर्माण व पेयजल आपूर्ति की योजना के विस्तार पर अनुमानित २.०० करोड़ रुपये की राशि व्यय करने का अनुमान है तथा २० निर्माण कार्यों के आरम्भ करने की योजना है। जिसमें यात्रियों को भविष्य में बड़े पैमाने पर ठहरने के लिये मन्दिर परिसर में विभिन्न स्थानों का निर्माण करना, स्नानागार, शौचालय, मन्दिर परिसर के रास्तों में टाईल लगाने का कार्य तथा बस स्टैण्ड दियोटसिद्ध में १६ मीटर मास्क लाईट स्थापित करना इत्यादि कार्यों की योजना चरणबद्ध तरीके से संचालित की जा रही है। इन योजनाओं पर लगभग १.५० करोड़ रुपये की राशि व्यय करने का अनुमान है।

श्रद्धालुओं/दानियों से न्यास प्रशासन का परम निवेदन रहेगा कि मन्दिर के विकासात्मक कार्य, यज्ञ में दान रूपी आहूति डालकर पुण्य के भागी बनें और बाबा जी का आर्शीवाद व वांछित फल पायें। दान की गई राशि की रसीद अवश्य प्राप्त करें और ***आयकर अधिनियम की धारा ८० जी.*** के अर्न्तगत आयकर से छूट का लाभ उठायें।

मन्दिर न्यास दियोटसिद्ध द्वारा शीघ्र ही लोगों द्वारा त्यजित गऊओं की देख-रेख व पालन पोषण के लिए इसी वर्ष से १०० गऊओं को रखने के लिए गौसदन स्थापित कर रहा है। जिसके लिए आपका सहयोग आपेक्षित है।

राजेन्द्र सिंह (भा.प्र.से.)
उपायुक्त हमीरपुर एवम्
आयुक्त बाबा बालक नाथ मन्दिर
न्यास दियोटसिद्ध जिला हमीरपुर।
दूरभाष : ०१९७२-२२४३००

ओ. पी. ठाकुर (हि. प्र. से.),
उपमण्डल अधिकारी ना. बड़सर
एवं अध्यक्ष बाबा बालक नाथ मन्दिर
न्यास दियोटसिद्ध।
दूरभाष : ०१९७२-२८९४५४

सूरज प्रकाश
मन्दिर अधिकारी, बाबा बालक नाथ
मन्दिर न्यास दियोटसिद्ध, जिला हमीरपुर
दूरभाष : ०१९७२-२८६३५४

माननीय ठाकुर राम सिंह जी का चित्रों में जीवन दर्शन